बदळाव

(राजस्थान के सृजनशील शिक्षकों की राजस्थानी रचनाओं का संकलन)



शिक्षा विभाग राजस्थान
के लिए
सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर
द्वारा प्रकाशित



बदळाव

सं. सूर्यशंकर पारीक

सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर

••

कठै ही
कठै ही
कहर त

•

नोसल
मेळ है

•

रचना *L*
भापा

प्रकाशक :
शिक्षा विभाग राजस्थान के लिए
सूर्य प्रकाशन मन्दिर,
बिस्सों का चौक, बीकानेर
आवरण एवं कला पक्ष : तूलिकी
मूल्य : रुपये सत्रह पैसे बयासी मात्र
संस्करण : प्रथम, 5 सितम्बर 1988
मुद्रक
रुचिका प्रिण्टर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032,

BADLAV
(Rajasthani Vividha) Edited by
SURYA SHANKAR PAREEK
Price Rs. 17.82 p.

आमुख

साहित्य में लगाव रखनेवाले रचनाशील अध्यापकों की ये पाँच पुस्तकें आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। शिक्षक दिवस प्रकाशन योजना के रूप में हमारे राज्य की जो एक शानदार परम्परा सन् 1967 से बराबर चली आयी है, उसी की अगली कड़ी में इस साल की इन पाँच पुस्तकों का प्रकाशन किया गया है। शिक्षकों के द्वारा लिखी गयी रचनाओं को सामने लाने के लिए शिक्षक दिवस से अधिक सुसंगत अवसर और कौन-सा हो सकता है।

बालकों को पढ़ाने के साथ-साथ मौलिक लेखन में लगना भी एक तरह का शिक्षण कर्म ही है। साहित्यकार हमारे समाज के शिक्षक ही तो होते हैं। उनके अनुभव समाज में रहनेवाले मानवीय विचारों, गुणों-अवगुणों आदि को लेकर एक तरह का संवाद होता है, जो व्यापक रूप में चलता रहता है, और व्यक्ति तथा समाज के संस्कारों को सँवारता रहता है। साहित्य-लेखन समाज की शिक्षा का एक अनौपचारिक प्रयास है। मुझे खुशी है कि हमारे राज्य के अध्यापक अपनी समाजपरक चेतना के लिए रचनाशील रहते हैं और अभिव्यक्ति के तरह-तरह के माध्यमों पर काम करते हैं।

मुझे बताया गया है कि राज्य के अनेक अध्यापक देश की स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में भी लिखते हैं और उनका अपना स्वतन्त्र साहित्य भी प्रकाशित हुआ है। यह जानकर मुझे अपार सुख मिला है कि इस दिशा में उन्हें सन् 1967 में विभाग द्वारा शुरू की गयी इस 'शिक्षक दिवस योजना' से पर्याप्त दिशा मिली है। मैं चाहता हूँ कि साहित्य की सभी विधाओं में गति के साथ लिखनेवाले कलम के धनी अध्यापकगण शिक्षक दिवस योजना के तहत प्रकाशित होनेवाली पाँचों पुस्तकों की अगली कड़ी को इतना स्तरीय बनायें कि उनकी रचनाओं पर राज्य के विद्यालयों में और साहित्य संस्थाओं में गोष्ठियाँ आयोजित की जायें। इसके लिए वे अभी से

प्रयत्न मे लग जाये ताकि अगले वर्ष के प्रकाशनो मे उनकी वर्ष के दौरान लिखी गयी प्रतिनिधि रचना ही प्रकाशन मे आये।

इस वर्ष प्रकाशित होने वाली पाँच पुस्तके ये है .

1. सहस्रधार (कविता सकलन) स. ज्ञान भारिल्ल
2 राग मरुगन्धा (हिन्दी विविधा) स रामप्रसाद दाधीच
3 बदळाव (राज विविधा) स सूर्य शकर पारीक
4 क्षितिज पार (कहानी सकलन) स नासिरा शर्मा
5 आकाश के फूल (बाल साहित्य) स. रत्नप्रकाश शील

इनके सम्पादन का जिम्मा उठानेवाले अतिथि सम्पादको, प्रकाशको और रचनाशील अध्यापको को धन्यवाद। जिन अध्यापको की रचनाएँ इस वर्ष प्रकाशन मे न आ सकी, वे निराश न हो, बल्कि अपने लेखन की धार को और अधिक तराशने की कोशिश करें।

शिक्षक दिवस, 1988



(ललित के. पँवार)
निदेशक,
प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान, बीकानेर

पैं'ली थकां म्हारी बात

आपरै मिनख जमारै में सुख-दुख रा अणगिणत झोला झेलणियां अर खोड़ा रै गावा री अवखाई नै विना गिनार कर्‌यां सैन करणियां वां अध्यापकां नै लखदाद है जिका टाबरां री भणाई सारू छाती तोड़ता आपरै जीवण रै करड़े-कंवळै अर खारै-खाटै अनुभवां नै आपरै लेखण मांय कर प्रगटाया है। आंरी कविता-कहाण्यां अर कोई निबन्ध साचरै धरातल माथै साव खरा उतरै। लिखणो हरेक रै तावै आवणियो कोई सहज काम नी है। इणी वास्तै 'कविर्मनीषी स्वयम्भू' कैयो है। कवि लेखक री रचना उणरी भाव सन्तान हुवै। उणनै वै जाबतै सू राखणो चावै। उणनै वधतो-पसरतो देखणो चावै। लेखक रै छाडा आ खिमता किणी पावू दुनियां में नी लाधै। कवि-लेखक झीणै सू झीणै अर डूगै सू डूगै भावां नै जगत री भलाई अर इतिहास री साख वेई सैंवड़ड़ क'रर छोडै।

आज तो प्रजातन्त्र है, देश आजाद है जद कोई भी आपरी दाय आवै जिया आज आपरै मनचाही आलोचना कर सकै, राज तेज री कोई खोप नी पण कवि तो राज-शाही रै जमानै मे भी साची बात कैयां विना नी रैयो। दीया-सी चसती आंख्यां अर गलमूछ्यां आळै उण खाडाधारी राजा-महाराजावा नै पण साचरी खरी-खोटी कैवण सू कदेई नीं चूक्यो। जद कै यांनै माथो कवल क्‌रण रो गुनो माफ हो। पण कवि किणी सू खोप खायो नी। जदहीज ओ कैयो है कै कवि सू अळसेड नी करणी।

कवि-लेखक देखा दिस्टी में यां-म्हां जैड़ो साव अदनो सो दीसै पण उणरै तोव सै अन्तस में बीजां करतो एक न्यारो हीज संजोरापण हुवै। राजस्थानी कवि सदीव सूं उत्तर-पड़ूतर एकै साथै देवतो आयो है। राजस्थान रा कवि-लिखारा आदजुगाद सूं काम पड़्यां मुहाणा फ़ोरता आया है। कवि दो ओळी रै दूहै मे जीवण रै पाट नै इस तकम ेड़ नाखै जिस तक सिनेमां रै पड़दै माथै सीन, आंख फरूकै... त्ति ताळ

मे फुरतो निजर आवै। अेडी कविता धोरो धरती रै राजस्थान मे ऊजी है। आ राजस्थान री घणी वताई है।

उत्तर पड़ूतर रो ब्यापार इण दूहै में सावळसर देख्यो जाय सकै है—

कहो लूवां कित जायसो पावस घर पड़ियां।

कै—

हियै नवोढ़ नार रै वालम वीछड़ियां।

एक कविराजा राजदवार मे आपरो जोगतो आदर-मान हुवतो नी देख भरचै दरबार मे राणा भीव नै कैय सुणाई—

भीवां तूं भाटो मोटै डूगर मांयलो।

पण राणा चतराई सूं धी राखतै कवि नै आदर देवतो आपरी छाती रै चिपाय लियो अर 'आवो कविराजा' साद प्रगटाया कै बैरी अवै बख मे आयो है, तू थारो माथो बढा'र रैसी पण कवि इतरो काचो नी हो उण झट पासो फोरतै कैयो—

कर राखूं काठो शकर ज्यूं सेवा करूं

राणा रै मनसोबै पर पाणी फिरग्यो, कान खुस'र हाथ मे आयग्या। आ है अठै रै कवि री करामात।

अठै रो कवि राजा-महाराजावा रै भोताड़ अर रोब रै हेठै न डरयो अर न कदेई दब्यो। सुणावण जोग बात तो दुणा'र हीज रैयो। बेटै अर बाप रै हत्यारां जयपुर अर जोधपुर रै धणयां नै एक साथै बैठ्या देख'र कवि उणरा कारनामा जणावता थकां कैयो—

धिन जैपर धिन जोधपुर दोनूं थाप उथाप
कुरम मारचो डीकरो, कमधज मारचो बाप

जैपुर आळै बेटै नै अर जोधपुर आळै आपरै बापनै मार'र राजगादी हासल करी।

जद हीज जोधपुर रै बखतसिंघनै एक कवि साची कैय सुणाई उण टेम बखत सिंघ 'वापो-वापो' कैयर घोड़ै नै विडदाय रैयो हो।

बापो कै'मत बखतसिंघ कांपै है कै काण
अवकै बापो जे कैयो तो भवग तजैलो प्राण

इण धरती रै कवि री आही तुकम तासीर है।

राजस्थान री धरती सदामद सूं हीज बोलाळो राखती आई है। बा मून झालर कदेई नी बैठी। इणी खातर राजस्थानी साहित्य री सिरजण परापरी अद सूं आज लग लगोलाग चाल रैयी है अठै तरव.रां खडकी है तो कविता रा साद दड़ूक्या है। भालां रा भळका अर तरवारा'रा पळका नै मोळो नी पडण देवणो कवि अर कविता रो दावो रैयो है।

आज भी अठैरा कवि नै लिखारा आपरै फरजनै सावळसर निभाय रैया है।

इण रो प्रमाण है इण सबै सारू प्रदेश री च्यारूं कूंटां सूं अर दूर आतरै वस्तै गांवां सूं रचनाधर्मी शिक्षक लिखारा आपरी भांत-भतीली अथवा विविध विधावां मे लिखी थकी जेटबन्द रचनावां खिनाई नै समदाई है। राजस्थानी साहित्य आज जिण गति-मति सूं लिखीज रैयो है उण में अध्यापकां रो सरावण जोग अर सबळो योगदान रैयो है।

मिनख लिखारां री ढाई लुगायां रो पण इण धकै पूरो जोर लाग रैयो है। वै गद्य अर पद्य रै लेखण मे सगळां रै सागै पग सूं पग जोड़'र चालण मे समर्थ हैं।

अठै आ बात कैवण री घणी उतावळ है कै शिक्षा विभाग सिरजणवन्त शिक्षक लेखकां री रचनावां नैं हर साल पोथी रूप में छापण री जिकी वाल्ही नैं आलीजा योजना चालू करी है उण सूं जिकां मे बीजरूप लेखण रा सस्कार है वांनैं आ योजना खिमतावान अर आदर जोग लेखक हुवण मे सागीड़ो सायरो दे रैयी है। इण योजना मायकर(माध्यम सूं)प्रेरणा लेयर केई भाई प्रतिभावान अर लूंठा साहित्यकार बण्या हैं। वैं आज साहित्य रै इतिहास में आपरो नांव ओपती जागां लिखावण में पकायत ही समर्थ हैं। कहाणी रै खेतर मे तो वांरो निजूपणो सांप्रतख सामनैं है। बीजा केई लिखारा वळोवळी नै तरोतर लिखारा रूप मे सामनैं आय रैया है। नोसला लिखारा पण इण योजना सूं जोधजुवान लिखारा हुवण में किणी सूं पाल्या नी पल्लै।

आ एक ठावी बात है कै लेखक जद कठै ही छपै नी तो उणनैं आपरै कियोड़ै काम रो के सुख? हाथ सूं लगायोड़ै बिड़लै नै सगळा ही फळतो पांगरतो देखणो चावै। कितासीक उठता लेखक तो इण खातर अठीनै सूं मूंडो फेर लेवै कै वांरी खून पसीनो एक कर'र लिख्योड़ी रचना कठै ही छपैनी तो वांनो उण रो के सुवाद आयो। वैतो बापड़ा रोही में खिल्योड़ै पोहप दांई उठै रा उठै ही मुरझचा ˎ ˉˈ। जद लिखण री वेगार अैळी जावै ता पछै अैड़ी बेगार करै हीज क्यू!

राजस्थानी रचनावां नै छप्पण रो तोड़ो वां लेखकां सारू भी खटकण आळी बात है जिका इण सारू आपरै जमारैनै समरप्यो है। पण जाणा आ हालात सदा नी रै'वैला। साहित्य रो सूरज चौगड़दे आपरो उजास प्रगटावै-पसरावैला।

जियां कै पै'ला बतायो जा चुक्यो है कै शिक्षा विभाग हर साल साहित्य सिरजण सूं जुड़्या थका शिक्षका री रचनावां नैं पोथी रूप देयर छपावै अर इण सारू वैं सारा ही लेखक अध्यापकां री रचनावां तेड़ावै। सगळां नै ही आप आपरी रचनावां भेजण रो अधिकार है। अब की वार दो सौ'क रै अड़गड़ै रचनावां आई हैं। कविता, कहाणी, निबन्ध अर विविध। कई लेखक तो तीनूं ही विधावा में एक सूं वती रचनावां खिनाई है। केई दो में अर केई एक ही विधा री एक सूं बसी रचनावां भेजी हैं। आं रचनावां रा छपण आळी पोथी सारू तीन बंट पै'ला थकां सूं करीजता आया है। हरेक बंट सारू पचास रै अड़गड़ै पेज राखीज्या है। रचनावां

री वोळ अर उणारी गुण धर्मिता नै देखता अै पेज साव थोड़ा है पण बंध्योड़ै नेमा रै न तो रचनाकार तोड़ सकै अर न हीज संपादक रै इयां करणू सारू है।

इण संग्रै सारू नी चावता थकां पण केई घणी आछी रचनावां नै छोड़ देणी पड़ी है। संग्रै सारू रचनावां रो चुणाव छातीनै करड़ो रापर करीज्यो है। मन नै केई हेला दांगड़ चिंती मे पड़नो पड़्यो है कै रचना आ लेऊं का आ! अंवे पंते मननै काठो कर'र अै सैमूडै आळी रचनावां तयसुदा करी है।

म्हारै म्हारै हबहाळै आळी सैंकड़ू रचनावां में सूं बीण-विछण म्हारै तांल अर समझ मे आई जकी इण संग्रै मे भेळीजी है पण जिकी नी ली जाय सकी वां मैं सू घणकरी रचनावां आपरै रूप सरूप में किणी सू घाट नी है। कोई आ नी समझै कै लारै रैयोड़ी रचनावां हळकी का अजोगती हुवण रै कारण छोडीजी हुवै।

छोडण रा बीजा कारण अै रैया है —

(1) पैं'ला थकी किणी पत्रिका में छप्योड़ी।

(2) टाइप री अणमेघा गळतिया, बर्तनी में गडबड़ पढण में सावळमर नी आवणो।

(3) जाबक क्षेत्रीय बोली में अर हिन्दी राजस्थानी रो अंतर सपट नी करण आळी।

(4) जाबक तउ-वायरी पसारा काटण सारू लिख्योड़ी अर रोळगदोळ लिपि मे लिख्योड़ी।

इण संग्रै मे अैड़ी रचनावां घणै कोड सू पैं'खड़ीजी हैं जिकारै अकुरा मे मोटै रूख बणनै रा गुण है। जिकै लिखारा में लेखक रा बीज रूप सम्कार दीठ चढथा।

इण संग्रै री रचनावां रा सुर कठै ही तीखा है तो कठै ही मधरा मौजाळू है। कठै ही मासा मारता लखावै तो कठै ही निवण वीनती करता निजर चढै। कठै ही काळ री कहर तो कठै ही बादळी री मनुहार है। जे कठै ही कौमी एकता रो दावो है तो कठै ही गणतत्र रो मीजान बैठाइज्यो है। कठै ही शोपण है तो कठै ही पोपण रा भाव है। कठै ही किणी री चितार तो कठै ही इतिहास री पुकार है। कठै ही जुगबोध अर कठै ही प्रबोध देईज्यो है। इण परवार कर बीजा नीराहो भाव। मूळ रचना पढथां सू पाठक नै वारी असलूत रो ठाव लागसो। इण में कठै ही सैंदा कवि बोलता सुणीजै तो कठै ही नोसला आपरो सुर उधरै। नूवा-जूना रो अठै खोरखाड सो मेळ है। इणी सुमार इण संग्रै री कहाण्या रा बोल जे आडा-तिरछा है तो कठै ही साव पाधरा पण अबखाया रो थो-मो नी। गांवां मे आज रै जुग मे भी आवण-जावण रा घणा फोड़ा है। आज आखो देश राजनीति रै सायै मे सुख-दूख री छाटी झेलै। आज राजनीति रो, चुणाव रो, वोटा रो सेळो कानांनै बैं'रा करै। आज वोट री राजनीति गांवा रै मिनखनै बोट नाख्यो है। ज्यू बकरी

तूम्बै नै बोटै । पंचा सरपंचां री डागपटेली सुखरा सास नी लेवण देवै । च्यारां कनै भीड़ ही भीड़ । बसा में मिनखा री भीड़ अर घर में नार्णरी भीड़ । सहरा में गदगी तो गांवां मे मांदगी । अैड़ी भी घटना घटै उणरो प्रभाव सव सू ज्यादा लिखारा पर हुवै । बै घणा संवेदनशील । दूसरै रो हक मारणों, उजर करै तो सुणै कुण नौकर हुवै तो अबखी जागां तबादलो करा नाखै । नातर सीट तो सीरी भीरी है हीज । एक हीज कहाणी में बोळी बोळी बाता रो विवरो आयो है । असरदार कहाण्यां कै पढै तो उत्सुकता बणी रै'वै ।

राजनीति रै प्रभाव सू लोग पटै सुदी जमीना आपरै नाव कर' लेवै अर बारो बाळ ही भुरै नी । आज भाईचारो खाली सबद रैयग्यो है । सत्यासियो काळ लोगा ने चमगूंगा बणा दिया है ।

निबंध विधा मे मंज्योड़े लेखकां री करामात है । इण में इतिहास है, गैंवाऊ शिल्प है, मिनख है अर मिनखाचारो है । आदर्श अध्यापक है तो गरीबी मेटण रा उपाय है । लोकतन्त्र है, लोक-पर्व है । भाषा भाव अर मेंणत री दीठ सू संग्रै री सै'न रचनावां पढण जोग है मानण जोग है । आस बंधै कै राजस्थानी भाषा समृद्धि रै उच्च शिखरां चढ रैयी है । कवि कविता नैं, कहाणीकार कहाण्या नैं अर निबंध-कार निबंधां नैं घणां सवारच्या है । विषय नैं आपरी समझ रै पाण सावळ सावट'र चाळया है । उखड़ाव री जागा ने ठाव घणो है । लिखण रो ढब खासा खासा एक सो है ।

आज राजस्थानी भाषा आपरै सकड़ीलैनै तोड़'र चपट मैदान मे दावै सू ऊभी रै'वण री खिमता राखै है । नूवै नूवै चरसै चलाण मे ओपतो अर जोगतो लिखीज रैयो है । एक रूपता रै म्यानै में आज राजस्थानी एक है एक सी है । जिका एकरूपता नी हुवण रो कूड़ो सवाल उठावै है वानै अैड़ा संग्रै पढ'र आपरा विचार बदळ देवणां चाहिजे । आज राजस्थानी जूनै सू नूवै मे दाखल हुय चुकी है । इणरो सिवरो अैड़ै लेखका रै माथै मेलीजैला जिकां सै लोग मायड़ भाषा राजस्थानी री सेवा में लाग्योड़ा है ।

राजस्थानी नै आपरी ओपती अर सयी ठौड़ लेवण मे शिक्षा विभाग रो योगदाण पण इतिहास रै पानां मंडैलो ।

नगर-परिषद रै खनै,
बीकानेर

(सूर्य शंकर पारीक)

विगत

कहाणियां

निबंध

कवितावां

बदलाव

बदळाव

भीखालाल व्यास

जिण गाँव में चौबीस घण्टों मे अेक इज बस आवती हुवै अर या ई आगै सूं ई ऊपर-नीचै पूरी भरीज्योड़ी, उण बस में चढणो ई घणँ हिम्मत रौ काम। पछै सीट मिळणी तो भगवान मिळणँ री दाई कठण।

दूजी सवारियाँ री गळाई म्हैं ई कोई घण्टा भर सूं बस नैं उडीकतो हो। जे आज बस नी मिळी तो गयी पाछी कालै सुवै तांई री, सो टेम माथै ठेसण माथै आय'र बैठग्यौ हो। रांजीना री गळाई आज ई अणूती भीड़ ही अर ज्यूं ई आगा सूं बस रौ होर्न सुणीज्यौ के मिनख आपो-आप रा पोटका-सामान सँभाळणो शुरू कर दियौ अर बुण्डेर री पाळ सूं मुड़तांई तो जोणें सांमी दौडण लागग्या। बस थमै-थमै जितरै तो मिनख बस में घुसणा अर बस माथै चढणा शुरू हुयग्या हा।

म्हैं ई धक्का-मुक्की करतो बस में घुस्यौ अर गैलेरी में ऊमो हुयग्यौ। अेक हिचकोळै साथै बस स्टार्ट हुयी अर सवारियाँ नै आपस में अफळावती वहीर हुयगी।

खनैं बैठोड़ा बीरजी माड़सा नैं थोडी दया वापरी अर उणाँ थोड़ा खिसक'र म्हारै बैठण री जगैं बणायी।

'सिध पधारीला सा···'

'समदड़ी···'

'समदड़ी···ठीक, गाड़ी तो मिळ जावैला···'

'देखौ-रांम है···महीना मे पच्चीस दिन तो मिळा देवै है···'

'कांई टैम हुयौ···'

'नव बजिया···'

'बस खारा मांय सूं होय'र निकळ रैयी ही···धूड़रा मोट खिड़की मांय सूं बस

में भरीजण लाया। घर सूं अपटूडेट बण'र निकळयोड़ा छोरां री पैण्टां अर बुसट्टां में धूड़ जमण लागी। उणां रा माथा धूड़ मूं भरीजण लाग्या अर हाथ में पकड्योड़ा बेग मायँ ई धूड जमण लागी।'

'बारी बन्द कर दें नी भाया··· धूड आय रैयी है' किणी ई बारी खनै बैठोड़ा छोरा नै कह्यो।

बारी खनै बैठोड़ै छोरै आपरा लम्बा-लाम्बा बाळ झाड़तां थकां देख्यौ अर पाछौ आपरी धुन में खिडकी सूं देखतो रह्यो।

'आप देखावो सा···उण छोरा रै बुसट्ट रै कॉलर कैड़ा लगायोड़ो है···' वीरजी माड़सा कह्यो।

'किसा छोरा रै···'

'वो सांमी बैठो है नी···तीजी सीट मायँ···।'

'हाँ···देख्यो···' म्हे वठीनै देखतां कह्यो।

'कांई फैशन आयी है···देखो नी सा··· कॉलर में सळ भर्‌या है···लुगायां मगजी लगावै नी ज्यूं···।'

'हमे तो छोरां में अर छोर्‌यां में कोी फरक ई नीं रह्यो···'

'इसा कॉलर लगायां सूं फायदो है सा···'खनै बैठोड़ा देवी बा बोल्या—'अेक तो कपड़ो घणो चाहिजे···दूजो मैल भरीजै तो ई दीसै कोनी···'

'हां··· नै फेर जूंआं हुवै तो ई कॉलर री मगजी में दबियोड़ी पड़ी रैवै···' वीरजी माड़सा बात जोड़ी।

'सांची कैवो···। हमे तो फैशन ई इण तरै री बधती जाय रैयी है। हमे आप देखावो के इण तरै री धूड़ रा गोट में ई छोरा बैटा कपड़ा झाड़ै। अेक जोड़ी तो कपड़ा राखै अर फैशन करै अणूतो···।'

'वो तो फेर ठीक है···पण पेट में भूखै मरै अर सिगरेटां रा धुंआ काढै। भूख लागै तो पताग ग्राम सेवां अर चाय पी नै दिन काढै। हमे इणां नै पूछो के दोय रुपियां री सेवां नी खाय'र रोटी खायलो तो पेट तो भरीज जावै···।'

'साची कैवो सा···। सिगरेट रा ई आठ आना लागण लाग्या। पेट में भूखी मरणो कबूल पण सिगरेट तो पीवणी इज···।'

'अरे सा हमें कांई पूछो···छोरा अर छोरियां···छोरियां पण किसा कम पग छोड्या है।'

'हां सा···कांई तो पैर' वेश बिगड़ियो है अर कांई खान-पान···अर मरजादा ···मरजादा तो बिगड़ी तो पछै बिगड़ी इज बिगड़ी···।' उणां बात में हुंकारो भर्‌यो।

'अेक बात है सा···हमे तो गांव ई वै गांव नी रह्या जिको पैं'लो हा। मिनखां रो रांम मर-ग्यो। म्हारी देखणी-देखणी में इतरो बदळाव आग्यो है···।'

'बदळाव कांई'''मिनख-मिनख रौ दुस्मण बण्यौ है। कालै तांई जिका भाई-भाई हा आज अेक दूजै नै मारण नै उतरयोड़ा है। आप करमावास खनै व्हियौ जिकौ नी सुणियौ ?'''

'हां सुणियौ'''सा ''चालती मोटर में दोय मोट्यार आगै ऊ... हुया अर दोय लारै अर मोटर नै मोड़ाय दी उजड़ मारग माथै। कोई कोस भर माथै जाय'र ऊभी रखाई अर पछै गोलियां सूं धड़ा-धड़'''धड़ाधड़ '।'

'अरे-राम'''

'मिनखां में कळबळाट माचगी टाबर-लुगायां थूरी तरै सूं कूकै ' पण उणां नै दया कठै ' जांणै भाटा रा काळजा ''अर पलक झपकै जितरी जेज में तो लोही-ई-लोही।'''हूमे उणांनै पूछो के थांरै लोही रा अर इणां रै लोही रा रंग में कोई फरक है ? ''नै कांई मिळैला इण टाबरां ' लुगायां अर मिनखां नै मारण सूं'''

'अरे सा ''उण दिन पदमाराम रै घर रा टी. वी. देखता हा'''अेक जणौ आय'र दरवाजौ खटखटावा लाग्यौ। पदमाराम री जोड़ायत उठ'र आडौ खोल्यौ तो—धड़ाधड़'' धड़ाधड़'' ।'

'ठा नीं किण टैम ' किण तरै सूं'''मार नांखै ''ठाई नी पड़ै। मिनख कितरौ ओछौ बणग्यौ है। उणां रै वास्तै मिनख नै मारणौ माछर नै मारण सूं ई हल्कौ कांम।'

'गांव पधारता हुवौला '''

'हां खासा दिन हुयग्या हा। हमार दोय-तीन महीनां मे जावीजियौ ई कोनी हो। सोच्यौ —कालै रविवार है'''घरै जाय आवूं'''।'

'ना ठीक कर्‌यौ। हूमें आप देखौ नीं ''टैम कितरी खराब आयगी है'' दिन आथमियां पछै घर सूं बारै नीं निकळ सकां। धवळा दिन रा ई कांई भरोसौ किण टैम कोई आडौ खटखटावै अर देखतां-ई-देखतां धड-धड़ गोळियां चलानै खतम कर देवै।'

'हां टैम कितरी खराब आयी है। म्हारी देखणी-देखणी में गांव मे किणरै ई आधी रात रा ई काम पड़तो तो झट दौड़'र जावता। पण हमें'''हमें तो भलांई पड़ौसी हाका कर-कर'र मर जावै पण मिनख आडौ ई नी खोलै।'

'गांव-गांव में'''घर-घर में खार भरीजग्यौ है'''माडसा'''मिनख जातियां मे'''धर्मों मे अर सम्प्रदायों में बंटग्यौ'''मिनखपणौ तो रह्यौ ई कोनी।'

बातां करतां समदड़ी गांव आयग्यौ। म्हैं बस सूं उतरयौ, थेली खाम में घाली अर घर कांनी वहीर हुयग्यौ।

म्हारा भाबोसा बारै इज बैठा मिळग्या।म्हैं घर मे गयौ'''भगळां नै मिळयौ। गांव री सगळी हकीकत पत्तौ लगायौ।

म्हैं जिण दिनां घरे आवतो, म्है थाली रोटी जीमण री वेळा इज घर में आवतो बाकी दिन भर यार-दोस्तां नैं मिळतो। बारै फिरतो रैवतो।

आज ई रोटी जीम'र बारै निकळण वास्तै त्यार हुयो तो म्हारै मा मा बोल्या — किथ जावै ?

'अठै ई बारै ···'

'पाछो वेगो आ जाइजे···' उणां री बोली में की भय दिखतो हो।

म्हनै अचूम्भो हुयो। पैंली तो म्हैं आधी-आधी रात तांई बारै फिरतो पण म्हनै कदेई वेगो आवण रो नीं कह्यो हो नै हमे आ कांई बात !

'हमार आय जावूंला···'म्हैं पडूतर दियो।'

गांव रो सगळो वातावरण इज बदळ्योड़ो दिख्यो। होळी आड़ा सात दिन हा पण नीं चग रो धमीड़ो · नीं लूरां ··नीं फाग···नीं मिनखां में उछाव नीं कोई हुस। गांव में मसांण री गळाई चुप्पी छायोड़ी। म्हैं बारै निकळ'र बस स्टैण्ड कांनी जावण लाग्यो। बस-स्टैण्ड माथै ई कोई मिनख नी।'

लारला दिनां की रोळा हुया पछै दिन आथमियां पछै कोई बस आवै-जावै कोनी। सगळी डिगरां-डिगरां इज चालै।

म्हैं पाछो आवण लाग्यो। सोच्यो, जगतार रै घरै मिळतो चालूं। आज दिन रा दिख्यो ई कोनी।

म्हैं जगतार रै घरै पूग्यो। दरवाजो बन्द हो। मांय सूं धीरै-धीरै बोलण री आवाजां आवती ही।

'म्हैं आडो खटखटायो—जगतार··· जगतार···।'

'कुण है !··' घणी ताळ पछै आवाज आयी।'

'म्हैं हूं सवाराम···'

'वो तो सुणग्यो है···सुवै आइजो···'

म्हनै अचूम्भो हुयो। जिण जगतार री मा म्हारो नाम सुणतां ई खुद दौड़ी आवती, म्हनै प्रेम सूं बिठावती, दूध री मनवार करती···वा हमे आडो ई नी खोलै। उणां म्हारै में अर जगतार में कदेई फरक नी राखियो। दोन्यूं नैं बराबर राख्या। म्हारै बीचै कदेई धर्म आडो नीं आयो—भलांई बैशाखी हुवो या राखड़ी। जगतार री बैन रै ब्याव में म्हारा घर रा सगळा जिणा आपरो घर रो काम समझ नैं निभाव करयो—कुण बिमला अर कुण सुरिन्दर पण ओ बदळाव··· आ भाई-भाई रै बीचै खाई···।

म्हैं सोचण लाग्यो। ओ कांई हुवतो जाय रैयो है म्हारै गांव नैं ? कठै गयी वा सगळी अपणायत, वो प्रेम, वो स्नेह वा सहयोग अर भाईचारै री भावना···कुण ममळ नांखी है उण भावना नैं··· किणै कांटा बोया है म्हांरा इण बगीचा में··· कुण है···कुण है आखिर वो जिणनैं भाई-भाई रो प्रेम नी सुहावै, कायर रो बीज···।

म्हे घरै आयो तो देख्यो म्हारै मा सा म्हनै उड़ीकता हा। आयग्यो'' या '' ठीक रह्यो · फेर किणनै ई मिळणो हुवै तो सुवै परो जाइजै!

म्हनै लाग्यो —म्हारै मा सा रै मन मे ई कोई अज्ञात भय समावतो जाय रैयो है।

म्हे खाट माथै बैठग्यो।

'खाट चौक में लगाय लेवता नी ''मांयनै तो गरमी लागै'''

'ना कोई विशेष गरमी कोनी'''नै हमार रात ढळैला ज्यूं-ज्यूं ठण्डक हुवती जावैला''' म्हारा भावोसा बोल्या।

आ कांई बात है · पै'ली तो फागण लागतां इज चौक मे खाटां ढळ जावती '''आधी-आधी रात तांई वरमां चालती, मिन्दर रै चौक में तो मिनख मावतो ई कोनी हो'''छोरा'''मोट्यार ''लुगायां'' घमचक मच्योड़ी रैवती।

'म्हैं बारै लगा दूं ·'

'नी'' नी · मांय इज ठीक है'' नै आडो बन्द कर दै''' म्हे बोलूं उण सूं पै'ली म्हारै भावोसा बोल्या।

'आडो बन्द कर दूं · आ कांई बात'''ओ कांई हुवतो जाय रैयो है'' म्हारै गांव रै मिनखां माथै ओ किणतरै रो ग्रहण लाग रैयो है'''।'

म्हे आडो बन्द करण वास्तै उठ्यो कोनी तो म्हारै भावोसा खुद उठ'र आडो बन्द कर दियो'''च्यारूं मेर फिर'र सगळा आगळ-कूंटा आछी तरै सूं हाथ लगाय'र देख्या · प्रोळ री भखारी मे ई झांक'र देख्यो'' मांय कोई छिपियोड़ो तो कोनी''' अर म्हनै कह्यो—रात रा आडो मत खोलजै'' !

'क्यूं'''।'

'बस · 'वायहम' मांयनै इज है'' कोई बुलावै तोई नी बोलणो'''।'

नी कैवतां थकांई म्हैं सगळी बात समझग्यो। लारला दिनां जिण तरै सूं गांवां में हुय रह्यो है'' उण सूं उणां रो भयभीत हुवणो स्वाभाविक इज हो।

म्हनै रात भर नींद नी आयी'''। म्हारै गांव री मानसिकता किण तरै री हुयगी ''मिनख-मिनख सूं डरण लागग्यो'' भाई-भाई सूं बात करतो शकै''' पडोसी सूं मिळतो डरै'''कांई ओ इज म्हारै गांव रो रूप है'''।

सुबै उठियो जितरै खासो दिन चढग्यो हो। म्हे स्नान-पाणी सूं निवृत हुय'र जगतार रै घर कांनी वहीर हुयो।'' म्हे उणनै ओळमो देवणो चावतो हो— भला मिनखा सिझ्या सूं इज सुयग्यो! नै फेर आडो ई नी खोलणो। अेहड़ी ई कांई बात ·।

म्हैं उणरै घरै पूगो। रोजीना धड़ल्ले सूं घर में घुस जावतो हो पण आज ठा नी क्यूं पग पाछा पड़ण लाग्या। दरवाजै सूं इज आवाज लगाई—जगतार''' जगतार'''।

'कुण है ?' केवतो-केवतो जगतार बारै आयो।

उणँ म्हनै देख्यो।" आओ ' कैय'र म्हनै बारै कमरे में बिठायो।

जगतार रै व्यवहार मे की फरक निगै आयो। नीं वो हँस्यो"'नी म्हनै बाथ घाल'र मांयनै लेयग्यो।

'करै आयो करै जावैला"'थारै वठै रा कांई हालचाल है"'' बस इणी तरै री बातां वो करतो रह्यो।

थोडी ताळ पछै म्है कह्यो— 'ले जावूं ' आइजै"'।'

'हां ' आवूंला "' अर नी च्याय-पांणी री मनवार"'नी बैठण री कोई आग्रह "'नी विशेष बात।

जगतार में इज नी, गांव रैं सगळै वातावरण मे ठा नी किण तरै रो अळगाव आयग्यो है ' दिन-दिन फासलो वढतो जाय रैयो है"। खुद रा कपड़ा माथै ई भरोसो रह्यो कोनी"'कुण किण टैम धोखो देय देवैला ' चालती बस मे लूट लेवैला"'मार देवैला"'घर में सुतोडां नै भून देवैला"'। मिनख-मिनख रै बीचै वण्योडी खाई दिन-दिन चवडी हुवती जाय रैयी है। गांव-गांव अंर घर-घर में *मिनखा रै बीचै प्रेम खतम हुय रैयो है। म्है इण बात माथै विचार करतो* चुपचाप पाछो घरै आयग्यो। म्हारी मंछा ईं नी रैयी के म्हैं फेर किणी दोस्त रै घर तांई जावूं।

○ ○

विदाई

नृसिंह राजपुरोहित

गाँव में फगत अेक बस आवै। बाकी आवण-जावण री कोई साधन नी। दिनूँगै जे बस चूकग्या तो पछै मौज करौ। गयो पूरा चौबीस घण्टां री। इण कारण अमूमन लोग पाव-आधौ घण्टौ वेगा, ई संभै, अर वग स्टेण्ड माथै जायनै बैठ जावै। पछै कच्चै रूट सूँ आवती बस नै आंख्यां फाड़-फाड़ नै मेह रै ज्यूं उडीकता रै' वै। दूर सूँ सांकड़ै सेरियै मे जद धूड़ रा गैतूळ उडता निगै आवै तद लोग समझ जावै के बस आयगी। सगळा सावचेत होय नै ऊभ जावै। बस मे चढणी ई कोई मामूली बात कोनी। जाणै ओलंपिक री कुश्ती जीतणी है। जितरा मुसाफर बस मे होवै, उणसूँ ई वेसी ऊपर अर च्यारूँमेर लटकता लाधै। इण सगळां सूँ बाथोड़ौ करनै बस में घुसणौ घणै पराक्रम रो काम है। अेक पग टेक नै अेक हाथ सूँ हत्थौ पकड़्यां लटकता मुसाफर नै कोलम्बस सूँ कम कियां गिण सकां? आ अेक दिन री नी पण तीसूं तारीख रोजीना री हालत है।

इण वास्तै प्रोफेसर प्रवीणकुमार आपरी डोकरी मा नै अेक दिन पै'लीज चेताय दियौ — मा कालै वेगी सैंझणौ है। बस मे गिड़दी घणी आवै। वेखा किया तो वस निकळ जासी। इण वास्तै पंखेरवां नै चुग्गौ, तुळसी नै पाणी अर ठाकुर जीरी सेवा-पूजा सगळा काम फुरती सूँ निवेड़ लीजै। जे बस चूकग्या तो पाछी दूजै दिन है अर म्हारै छुट्टी फगत अेक दिनरी'ज बाकी रही है।

'सै वखतसर निवड़ जासी रे बेटा!' डोकरी अणमणै भाव सूँ कह्यौ अर अेक ऊंडी निसासा नांख'र खरी मीट सूँ दरवाजै कानी देखण लागी।

प्रोफेसर प्रवीणकुमार डोकरी मा री मानसिकता नै आछी तरियां समझै। घर-गाँव छोड़ नै शहर में जावणौ उणरै वास्तै माथै रो घाव। पण अबै दूजो कोई रस्तौ ई तो नी। प्रोफेसर लारला बीस बरसां सूँ शहर में नोकरी करै। लुगाई

टापर सागै ई रैवै । कारण टाबर सगळाई स्कूल कॉलेजाँ मे पढै । पण डोकरी अेकली गाँव मे रैवै । उणैं आखी उमर गाँव मे विताय दी इण कारण शहर री जिन्दगी उणनैं रास नी आवै । बेटो बहू घणा इज लारै पड़ जावै तो च्यार दिन टाबराँ कनै रेय आवै पण छेवट गाँव आयाँ ई नेहचो होवै । शहर मे फ्लेट री जिन्दगी उणतै कैद रै उनमान लखावै । हर वखत दरवाजो बन्द करनैं दड़बै में बैठा रै वो, आ कियाँ होय सकै ? आखी उमर खुलैं आभै रै नीचैं आजादी सूं विचरण कियोड़ै प्राणी रो इण वातावरण में जीव अमूंझण लागै । उठै कठै वा गाँववाळी वात-बतळावण, उठक-बैठक, कथा-वारता, भजन-भाव अर भाई सैंण सूं मेळ-मुलाकात । थोड़ाक दिन होवै के इण कैद खानैं में डोकरी रो जीव तो वाणै अमूंझण लागै । छेवट बेटैं नैं कैवणो पड़ै - प्रवीण म्हनैं तो अबै गाँव पुगाय दे रे छोकरा ! म्हारो अठै मन नी लागै ।

पण डोकरी रै पण्ड मे गाढ़ हो जितरै तो कोई वात नी ही । वा आपरो धाको मजै सूं धिकावती । बेटो आपरै लुगाई टाबराँ सागै निश्चित होय नै बारै रैवतो । पण अबै दिन-दिन डोकरी रा हाला थाकण ला-या तो बेटा नैं ई चिन्ता रैवण लागी । दिन आयाँ देवळ डिगै रै मुताबिक सदीव निरोग रैवणवाळी डोकरी अबै साजी-माँदी रैवण लागी अर आँख्याँ री रोशनी ई मन्द पड़वा लागी तो बेटैं उणनैं आपरै सागै लिजावण री हर करी । डोकरी ई मन मे समझगी के अबै दूजो कोई उपाव कोनी ।

पण ज्यूं-ज्यूं घर छोड़ण रा दिन नैड़ा आवण ला या, डोकरी रो मन उदास रैवण लाग्यो । उणनैं मन मे पक्की जँचगी के अेकर घर छोड़यो पछै वा इण घर री पेढी पाछी नी चढसी । इण गाँव रा झाड़का पाछा नी देखसी । उणर निजराँ सामी गाँवरा कई डोकरा-डोकरियाँ आपरा बेटा बहूवाँ सागै देस दिसावर गया तो पाछा गाँव आवण सारू तरसता ई रैग्या । कई तो उठै ई प्राण त्याग नै अतैधा भूताँ भेळा भिळग्या । डोकरी नैं मन मे पक्की जँचगी के उणरी पण सागण वा ई हालत होवणी है ।

" मा नैं निसकारा नाखती देख'र बेटो ई विचार मे पड़ग्यो । शहर में मा रो मन लागै नी । अर गाँव में अबै इणनै अेकली छोड़ीजै नी । इतरा दिन तो खैर आ आप रै पण्डरी छाँटी काढ लेवती इण वास्तै कोई दैण-दुआळ नी हो । पण अबै इणनै अठै किणरै भरोसै छोड़णी ? कालै कोई ओछी वती होयगी तो दुनिया माजनैं में धूड़ घालसी के लो सा अे कमाऊ अर भणिया-गुणिया बेटा ! छेहली उमर में आपरी डोकरी मा नैं ई कोनी संभाळ सक्या ।''''फेर दुनिया ई पछो खाडै में, खुद रो मन ई कियाँ पतीजै ? सारलै महीनैं की दिन इणनैं ताव-तप आयो तो बतावैं के आ दो दिन भूखी निरणी'ज पड़ी रही । आडोसी-पाडोसी सगळा इणरै वास्तै जीव काढै पण घर रा धिमख री होड़ कियाँ कर सकै ?

डोकरो नै विचार मे पड़ी देख'र उणै कह्यो—मा !

'काँई बेटा ?' डोकरी जाणै ऊँडै कुवै सूँ बोली ।

'थूँ इतरी विचार में कियाँ पडगी !'

'की कोनी यूँ ई रे बेटा ।'

'थूँ सोचती होसी के प्रवीण म्हनैं सदीव रै वास्तै गाँव छुड़ाय रह्यो है ।'

'ना रे ना । आ बात कोनी ।'

'तो काँई बात है मा ?'

'म्हैं सोचूं के वखत रै सागै कितरो बदळाव आयग्यो ।'

'कियाँ अे मा ?'

'कियाँ काँई गाँवड़ां में परम्परा सूँ सगळा कुटुम्ब भेळा रैवता पण अबै इण अर्थतन्त्र रा चक्कर मे सगळाई कण-कण रा होयग्या । माईत कठैई तो औलाद कठैई । अेक भाई कठैई तो दूजो कठैई ।

'पै'ली सगळां रै खेती रो धन्धो हो मा, इण वास्तै पीढियाँ लग अेकण ठायँ सैं भेळो रैवता । पण अबै धन्धै वाड़ी अर नौकरियां रै कारण अेकण ठायँ भेळो रैवणो सम्भव कोनी ।'

'आ ई तो म्है कैवूं रे बेटा के कुटुम्ब री अपणायत सैं खतम हुयगी । नणद, भौजाई री मूंडी देखण सारू तरस जावैं अर पोता-पोती, दादा-दादी सूँ असैंधा रैय जावैं । कोई अेक दूजै रै सुख-दुख में शरीक नी हुय सकै । कुटुम्ब तो जाणै अंगाई बिखरग्या ।'

'अबै इणरो तो काँई इलाज होवै मा ? अेकण ठायँ बैठां पेट भराई होवै कोनी, इण वास्तै घर मजबूरी में छोडणा ई पड़ै ।'

'आपणै गाँव मे तीन सौ घरां री वस्ती है । पै'लो सगला ई खेती करता । लारली पीढी बारै जावण लागी । पण परिवार सगळा गाँव में ई रैवता । घर-घर में गायाँ-भैंस-यां रो धपटमो धीणो हो । सगळा परिवार सोरा सुखी हा । ओ तो टाबरपण मे थैं ई सैं आपरै निजरां देख्योड़ो है । पछै होळै-होळै लोग कुटुम्ब परिवार सागै लेयनै बारै जावण लाग्या । आज गाँव मे आधा घर ताळा लाग्योड़ा सूना पड़्या है, जिणां मे कबूतर गटरगूँ करै अर आधां में बूढा-ठाडा मिनख बैठा है जिको कियाँ ई करतै उमर रा दिन ओछा करै ।'

'बात तो थारी साची है मा ।'

'अर अबै तो सगळा घरां रो ओ ई हाल है बेटा । जिको टाबर पढ़ लिख नै वो मोटो हुयाँ गाँव छोड़ देवै । म्हनै तो लागै के गाँव धीरै-धीरै उजड़ जासी अर शहरां में मानखो कीड़ियाँ रै ज्यूँ किलबिलावण लाग जासी । जिणां मे की बुद्धि, हिम्मत अर कणूंका है, वे तो गाँव छोड़ नै जाय रह्या है, पछै लारै तो फगत भीगार रैय जासी ।'

प्रवीणकुमार सोचण लाग्यो के मा सफा अणपढ़ होवतां थकांई हरेक बात नै

कितरी गेहराई सूं सोचै-समझै। वास्तव में गांव आज उजड रह्या है अर नगर वस रह्या है। आ अेक विश्वव्यापी समस्या है। इणरै सागै मोटै दुखरी बात आ के गांवां रौ आदू अर जम्यो-जमायो ढांचौ विखर रह्यौ है अर उणरी ठौड़ मुंवे नै सुधार रै नाम माथै जिको की आय रह्यो है, वो सै उधार लियोड़ो अर अपरोखो मो लखावै। इण हिसाब सूं तो गांवई संस्कृति रा मूळ तत्व ई खतम हुय जासी। परिवारां रौ आपसी मेळ-मिळाप अर संप भूतकाळ री चीज बण जासी। फगत मियां-बीवी अर आपरा टाबर ई परिवार री परिभाषा में रैय जासी। इणरौ भावी पीढी माथै घणो माडो असर पड़सी। या आपरी निजू परम्परा अर संस्कृति सूं सफा अजाण रैय जासी। आपरी जड़ां सूं कट जासी। उणरी आपरी निजू 'आईडेन-टिटी' अंगां ई खतम हुय जासी। मार्डत अठै बसै है तो बेटो न जाणै कठै जाय नै डेरा करसी। आज जिको विश्वव्यापी सास्कृतिक सकट व्याप्त है, इणरै मूळ में ओ ई कारण है। मा बेवै ज्यूं गांव अर परिवार दोनूं बरबाद हुय जासी। ओछी राजनीति अर तथाकथित सुधार गांवडां रै परम्परागत ढांचै नै अगांई बिगाड़ नांखसी तो विखराव अर व्यक्तिवादी भावना परिवार नाम री चीज नै ई बरबाद कर देसी। आज ई परिस्थिति आ बणगी है के जिको थोड़ा घणा भावनाशील मिनख गांव में मन सूं रैवणा चावै वांरै रैवणो हाथ कोनी अर जिणां नै अठै सूं कोई भावनात्मक लगाव कोनी वे अठै मजबूरन बैठा है। वांरै वास्तै जीवी क्यूं के मौत कोनी आवै वाळी स्थिति है।

मा बेटो दोनूं आमी सामी बैठा विचार सागर में गोता लगावै हा। घर में सफा सून वापरयोड़ी ही। छेवट डोकरी सून तोड़ी—प्रवीण म्हारी आंख्यां रै इलाज में कितरौक वखत लाग जासी रे बेटा!

'मा थारै अेक आंख रो मोतियो तो पाकोडो ई है। उणरो तो तुरत आपरेशन हुय जासी।'

'फिलहाल अेक आंख सूं ई साफ दीखण लाग जावै तो म्हैं म्हारै पण्ड री छाटी मोरी कर लूं। इतरो होय जावै तो ई घणो।'

'राम कृपा सूं सै ठीक हुय जासी मा, थूं चिन्ता ई मत कर।'

'ना रे बेटा चिन्ता किण बात री। चिन्ता म्हारी सांवरियो मोर मुगट बंसी वाळो करसी। थैं आपणै मकान में रैवण वास्तै विमला मास्टराणी सूं बात तो सावळ कर ली बेटा?'

'हां मा, म्हैं कैय दियो है के म्हांनै मकान किराये री जरूरत कोनी। थूं बिना किरायै मजै सूं रहीजै पण मकान नै अंवेर नै सफाई सूं राखजै।'

'थूं अबैर म्हनै उण सूं मिळाय दे। म्हैं उणनै की जरूरी बातां री भळामण घाल दूं।'

'बा तो खुद ई कैवै ही के म्हनै माजी सूं मिळणो है। सिझया तांई वा जरूर

आय जासो।'

'सीधी सैणी छोरी है बापड़ी। च्यार साल सूं गांव मे रैवै पण कोई रै आंख में घाली ई कोनी खटकी। इसी सुशील अर भणी-गुणी छोरी नैं सुण्यो के उणरै धणी छोड़ दीवी है।'

'आजकाल इसा किस्सा घणा ई होवै मा। मोकळी नौकरी-पेशा महिलावां का तो विधवावां लाधसी अर का छोडचोड़ी।'

'जमानै रै कांई लाय लागगी रे बेटा! धणी लुगाई रै ई आपसरी मे कोनी बणै, आ ई कोई बात है? आ तो बापड़ी फेर च्यार आखर सीखगोड़ी है तो मास्टराणी बाणगी, नी तो गरीब बाप रै गळै पड़ती।'

'इण वास्तै इज तो आज छोरां ज्यूं छोरियां नैं ई पढावणी जरूरी हुयगी मा। भावै संजोग जे कोई रा करम फोरा होवै अर कोई कुपात्र सूं पल्लो भेट जावै तो भणी-गुणी हुयां लुगाई आपरै पगां माथै ऊभी तो हुय सकै।'

'बात थारी सही है बेटा।'

इतराक में बारै सूं किणै ई हेलो कियो अर मा बेटा री वन्तळ बीच मे ई रुकगी।

'कुण होसी रे?' डोकरी कह्यो।

'आ तो म्हे विमला हूं माजी।'

'आव बेटी आव। उमर तो थारी लांबी। अबार म्है थारीज बात करै हा।'

'उमर लांबी होसी तो खुरड़ा वैसी खोतरणा पड़सी माजी। आपरै कनै सिझया रा आवण रो विचार हो पण अबार फुरसत मे ही सो आयगी। आप तो काले पधार जासो?'

'हां काल जावणो ई है। कांई करूं बाई म्हारो जीव तो इण कुटिया मे ई भमसी पण आंख्यां रो आपरेशन करावणो है अर यूं ई म्हारी अबै आसंग कोनी सो जावणो ई पड़सी।'

'आप निश्चित होय नै पधारो। घर बाबत आप कोई प्रकार री चिन्ता मत कराई जो।'

'थनै घर सूंपनै जावूं पछै चिन्ता किण बात री बेटी? लोग किरायै लेवण नै ई त्यार है, पण म्हनै पैसां रो लोभ कोनी। म्हैं तो कह्यो रे भाई, म्हारो मकान झाड़-बुहार नैं साफ राखसी अर अवेरसी उणनै बिना किरायै ई देय देसूं। म्हनै किरायै री जरूरत कोनीं।'

'माजी म्हैं आपरै मकान नैं काच रै उनमान साफ सुथरो राखसूं आप नेहचो राखजो।'

'म्हनै थारो विश्वास है बेटी पण यूं दो-तीन बातां री पूरो ध्यान राखजे।'

'आप सगळी बातां म्हनै खुलासै वार समझाय दो माजी। म्है वांरो पूरो ध्यान

राखसूं ।'

'तो सुण, पैं'ली वात तो आ है बेटी के बे देख सामलै आळै मे ठाकुरजी महाराज बिराज्या है। इण घर मे ठाकुरजी री पूजा पीढ़ियाँ सूं होवती आई है। इण वास्तै थूं धूप दीवो नित रोज करती रहीजै । म्हारै ठाकुरजी नै अणपूज्या मत राखजै ।'

'थांरै ठाकुरजी नै अणपूज्या नी राखू माजी ।' बिमला हँसती थकी बोली।

'दूजी वात ऐ है लारलै मकान मे बरसांसूं नित रोज पखेरवां नै चुग्गो नांखूं। इण वास्तै लीप गूंप नै जमीन त्यार कियोड़ी है। दिन उगतांई मोरिया, ढेलड़ियाँ, सूंवटा, कावरी, चिड़ियाँ अर टिलोड़ियाँ इत्याद भांत भांत रा पखेरवां रो अठै मेळो मचै । अे प्राणी बरसां सूं अठै हेवा हुयोड़ा है । अेक मोरियो तो अठै आयनै नाचण लागै तो नाचतो ई जावै । दूजा पखेरू चुगता रैवै अर ओ माटो पांखां री छतर वणाय नै घटां लग नाचतो ई रै वै । उणरो मन धापै तद पांखड़ा समेट'र च्यार दाणा चुगले अर उड जावै । बेटी-बहू अर कुटुब परिवार तो सदीव अळगो रै वै। म्हारै तो बरसां सूं ओ इज कुटुब परिवार है बेटी । अे इणां नै दाणो नी मिळयो तो अे पछीडा निराश होय जासी । इणांरी हाय म्हनै लागसी । इण वास्तै थू चुग्गो नियमित नाखती रही जै । अनाज रो प्रबध म्है करतै जावूं अर जरूरत मुजब करती रहसूं । थूं म्हनै कागद नांख दीजै ।

औरूं हां अेक जरूरी वात तो भूल ई गी । वो माटी री कुंडियो पड़यो । इणमे थोड़ौ पाणी घालवो करजै । उन्हाळै री मौसम है सो पखेरू पाणी पीय नै थनै ई आसीस देसी । अेक सूंवटी पग सूं खोडो है । वो वापड़ो आखो दिन इण कुंडियै कनै ई वैठो रै वै ।'

प्रोफेसर प्रवीणकुमार कनै ई वैठो मा री वार्ता ध्यान सूं सुणै हो । मा रै कुटुब परिवार री बात सुण'र उणरो हिवड़ो भरीज-ग्यो । वो की कैवणो चावतो पण कठा-वरोध होय जावण सूं की वोल नी सकयो ।

डोकरी थोडी ताळ ठैर नै फेरूं कैवण लागी

'देख बेटी आगणै ओ तुळसी रो थाळो है । ओ ठेट म्हारै दादी सासू रै हाथ रो है । दादीजी रै पेट मे कोई कन्या नी ही । उणा आंगणै तुळसांजीरी थापना करनै इणांरी धूमधाम सागै ब्याव रचायो हो । गांव रै ठाकुरद्वारै सूं ठाकुरजी महाराज ठाटबाट सूं जान लेयनै तुलसांजी सूं हथळेवो जोड़णनै पधारया हा । तोरण सूं लगाय नै चवरी तकात ब्याव रा सगळा नेगचार हुया हा । आखै गांव नै जीमण रो न्यूतो दिरीज्यो हो । बरसां लग बस्ती अर चोखळै मे इण ब्यावरी चरचा रही ही । कई पुराणा लोग आज ई उणरी वातां करै । इण भांत ओ अेक साधारण पौधो नी है । इणरै सागै इण घर रो इतिहास पीढ़ियाँ सूं जुड़योड़ो है । थनै इणरी विस्तार सूं हाल बतावण रो कारण ओ ई के थू इणरै महत्त्व नै समझ'र इणरी सेवा चाकरी मे

फरक नी आवण देवै। इणनै पाणी नितरोज देयबौ करजै। मंजरी सूखै ज्यूँ उतारबौ करजै। कोई डाळी सूख जावै तो अवेर नै भेळी कर लीजे। वा देख गळियारै में सूखी डाळियाँ री भारी बँधयोड़ी पड़ी, प्रवीण नै म्है कहयोड़ो है सो काठ रै रूप में आ म्हारै आरोगी मे काम आसी। काती महीनै तुळसांजी रै दीवौ भरीजै। वो थासूं वण आवै तो करजै नी तो पाणी री तो कमी मत आवण दीजै। जे तुळसी थाळी सूखग्यी तो म्हैं ई सूख जासूं अर मरियां ई मुकोतर नी जासू।'

डोकरी री भळावण द्रौपदी रा चीर री गळाई वदधीई जावैही, पण विमला नै पाछी घरां जावण री उतावळ ही। वातां-वातां मे गिजारो अंधारो घिरण लाग्यौ अर दीवा वत्ती री वेळा हुयगी। विमला डोकरी नै धावस देवती रवानै हुई तो प्रवीण ई आपरी ठौड सूं उठयो अर दीवा वत्ती करण लाग्यौ।

गाँव आवतौ तद व्याळू करनै हथाई माथै जावण री ठेट सूं आदत रही। गाँव रा बूढ़ा वडेरां सागै बैठ'र गपशप करण रौ उणनै अणूंतौ शौक हो। कई बार तो वो ब्याळू कियां पैलीज उठै पूग जावतो अर लारै डोकरी बैठी वाट जोयबौ करती। खासी रात बीतां घरै आयां वा उणनै मीठो ओळमो देवती —ब्याळू तो वखतसर कर लिया कर बेटी रा बाप ! आ थारी कोई आदत है ? वातां रा ब्याळू सूं तो पेट भरीजै कोनी। प्रवीण लचकाणो पडनै कैवतौ—मा आज तो वातां वातां में अवेळौ होयग्यी, की ठा ई कोनीं पडयौ। डोकरी कैवती ब्याळू कियां पछै हथाई माथै जायबो कर बेटा। पछै मोड़ौ-वेगो आवै तो ई कोई चिंता नी।

पण आज प्रवीण ब्याळू करनै हथाई माथै गयो हो। काले उणनै आपरी मा रै सागै शहर जावणौ हो। पछै न जाणै पाछौ गाँव कद आईजै। गाँव रा कई पुगता मिनख अदरीग वा, मूळी वा अर मुकनो वा सफा खडक माथै आयोड़ा बैठा हा। कांई ठा अबकाळै गाँव आयां इणांरी मेळौ होवै के नी। इण वास्तै किरत्यां ढळी जित रै प्रवीण हथाई माथै जम्यो रहयो अर सगळां सूं गप-शप करतो रहयौ।

डोकरी अेकली आँगणै खटोलडी माथै सूती पसवाड़ा फेरै ही। यूँ ई उणनै ऊंघ कम आवै सो आज तो आवती ई कियां ? दिनूंगै तो घर-गाँव छोड़नै शहर जावणौ हो। न जाणै पाछौ कद आईजसी ? अर आईजसी के नी आईजसी इणरी ई कांई पतौ ? डोकरी रै आँख्यां आगल उणरो विगत जीवण सिनेमा री रील री गळाई घूमण लाग्यौ। आज सूं चौसठ वरसा पैलो वा नुंवी बींनणी वणनै इण घर मे आई तद फगत सोळै वरस री ही। कितरो वखत वीतग्यो ! पण जाणै काल री बात ! नर जाणै दिन जात है अर दिन जाणै नर जात। उण वखत घर मे कितरा सारा मिनख हा। प्रवीण रै दादा दादी सूं लगाय नै हाळी-वाळदी तांई घर में मिनख मावता आथ कोनी। पण अेक अेक करनै सगळा जावता रहया अर म्है पापणी बैठी रैयगी। प्रवीण चवदै बरस री हो तद इणरै मांपाजी ई जावता रहया। तोई ओ दुखियारी शरीर नी छूटो। गाँव में ई कितरा डोकरा मिनख हा। सगळा देखतां

देखतां निजरां आगै सूं चालता रह्या। चोसठ बरसां री गाळो ई कोई कम तो होवै। वीस बरसां में तो नुंवी पीढ़ी घरती माथै आय जावै। गांव रा झाड़का ई डोकरा होय या। प्रवीण रै पापाजी नै झाडबीट लगावण री अणूंतो सौक हो। ग्रांठ आगली पीपळी उणां आप रै हाथ सूं ई रोपी। उणीं'ज बरस प्रवीण रो जनम हुयो। आज वा पीपळी घेर घुमेर होयगी है। उन्हाळै री लाय में सगळै मोहल्लै रा ढोर डांगर इणरी ठंडी छियां में बैठा आध्यां मींच'र कानड़ा ढेरियां वागोळ रा टोर उडावै। प्रवीण कैयवो करै के पीपळी म्हारी सगोभी साईणी बैन है। ज्यूं बात ई साची। म्हैं इणनै पेटरी जाई रै ज्यूं पाळ पोसनै बड़ी करी।'''पण छेवट तो ओ संसार असार है। अेक दिन तो सैं छोडनै जावणो पड़सी। सगळो अठैई धरयो रैय जासी। भलाई अठै रैवो के बेटा कनै शहर में रैवो। कांई फरक पड़ै? फेर आपणो तो जीवण रूपी सूरज आथमण नै आयो। अबै तो लकड़ाई मसाणं पूगा। इण वास्तै रामजी राखै ज्यूं रैवणो है अर राखै जठै रैवणो है। आ बात जरूर है के मिनख जठै उमर काढ दे, उण रै हेवा होय जावै। आक री आक में राजी अर नीम री नीम में। माटीरी मोहई जबरी होवै। वा सहजता सूं छूटै कोनी।

इतराक में बारणै री खिड़की बाजी अर डोकरी री विचार तंद्रा तूटी। वा बोली—'आयग्यो बेटा! आज तो मोकळो अवेळो कर दियो रे!'

'हां मा फिरत्यां ई ढळगी। हथाई माथै गांव रा कई पुगता मिनख बैठा हा सो वातां वातां में बखत बीतग्यो।'

'कुण-कुण बैठा हा रे?'

'राठौड़ां रै अदरीग बा, घांचियां रै मूळो बा अर ढोलियां रै मुकनो बा इत्याद निराई जणा हा।'

सुण'र डोकरी हंसवा लागगी।

'हंसी क्यूं आई मा?' प्रवीणकुमार पूछ्यो।

'म्हे सासरै आई तद अे सगळा नागा फिरता अर आज अे सगळा गांव रा पुगता मिनख बणग्या।'

'पण उण बात नै आज कितरा बरस हुयग्या मा? जुग बीतग्या।'

'पण म्हनै तो जाणै काल री बात लागै खैर'''अबै सूय जावो बेटा, दिनूंगै वेगो उठणो है। बस तुरन्त आय जावै उण पै'ली सगळो काम निवेड़नै त्यार होय जावणो है।'

'म्हे तो त्यार होय जासूं मा, पण थारै तांता घणा है, थूं फुरती राखजे।'

डोकरी श्रीराम-श्रीराम! कैवतां पसवाड़ो फेरियो अर प्रवीण थोड़ीक देर में घोर खांचण लाग्यो।

रात.रा घणी ताळ जागती रैवण सूं डोकरी नै आधी ढळियां गेहरी ऊंघ आयगी। पण प्रवीणकुमार घड़ी रात थकां जागग्यो। धट्टियां मंडगी ही। गांव में

चक्की थायाँ नै मोकळा वरस होयग्या पण हाल कई घरां में घट्टियाँ छूटी नी ही ।

'मा !' प्रवीणकुमार हाकौ कियो 'पौ फाटण वाळी है ।'

'हाँ उठूं वेटा ! अर डोकरी श्रीराम ! श्रीराम ! कँवता विस्तर छोड्यौ। सगळौ जरूरी काम निवेड़नै पोटळा-पोटळी बाँधता जितरै सूरज किरणाँ काढ दी ही । बस नै हाल थोडी देर ही, पण बखतसर स्टैंड माथै पूगणी जरूरी हो ।'

देखतां-देखतां मोहल्लै री लुगायाँ अर टावर टीगर डोकरी मा नै सीख देवण ताँई भेळा होयग्या । आँगणो थवौथव भरीजग्यौ । डोकरी सगळाँ सूं घणै हेत प्रेम सूं मिळी । सगळी अेक ई रट लगाय राखी ही—माजी पाछा वेगा आईजो । प्रोफेसर प्रवीण देख्यौ के मा री आँख्याँ जळजळी अर कण्ठ गळगळौ होयग्यौ हो । गळै में डूजो थाय जावण सूं मूंडै सूं बोल नीं फूटै हो । पैंलड़ी वार सासरै जावणवाळी कन्या जिसी हालत डोकरी री होयरी ही ।

लुगायाँ पोटका-पोटकी उठाया तो टावर-टीगरां दूजो समान । डोकरी घर री मेढी लाँघी के कोशिश करतै मांडणी रोक्योड़ै आँसुवाँ री प्रवाह ढावा तोड़नै वैवण लाग्यौ । नी चावतां थकाई कण्ठ सूं रोज फूटग्यौ अर डोकरी कवळा रै माथौ टेकनै रोवण लागी तो हूचकै भरीजगी । प्रवीण डोकरी रो हाथ पकड़तां कह्यौ—'ओ काँई अे मा ?'

पाडोस री लुगायाँ ई रोवण लागगी । अेक अजब नजारो ऊभो होयग्यौ । प्रवीण नै इणरी अंगाई उम्मीद नी ही । वो अेकर तो हाक याक होयग्यौ पण पछै हिम्मत करनै डोकरी नै धीठ बोली राखी ।

घर री ताळो लगाय नै सगळा रवानै हुया ई हा के विमला मास्टराणी आयगी। डोकरी आँसूं पूंछ'र उणरा हाथ पकड़ती गळगळै कण्ठ सूं बोली—'थूं आयगी बेटी, म्हे थारी'ज बाट जोवै ही । काल थनै अेक वात कैवणी भूलगी—ढाळियै वाळी ओरड़ी में कावरकी मिन्नी ब्यायोडी है । हाल उणरै वछियाँ री आँख्याँ खुली को नी । दसेक दिन मिन्नीनै म्हारी तरफ सूं पाव-माव दूध पायबो करजै । आ तीजी बार इण ठायँ ब्याई है, बापड़ी हेवा हुयोड़ी है ।'

'मा वस आवण री टैम हुयग्यी है ।' प्रोफेसर प्रवीणकुमार उतावळ देखतो बोल्यौ ।

'हाँ चालो वेटा !' अर डोकरी धूजते हाथाँ घररी कूंची विमला रै हाथाँ में सूंप दी । डोकरी जावताँ-जावताँ अेकर मुड'र पीपळी कानी देख्यौ । पवन वेग सूं हिलती पीपळी जाणै हाथ हिलाय हिलायनै डोकरी नै विदाई देवै ही ।

अमूँझता आखर

मीठश निरमोही

ठण्डा लेरकां रै सागै डील री लोई जमणनै लाग्यी हो अर पग गैरी नीद में गेळीजगा हा। वस गांव रै गोरवै आय पूगी ही। रेहड़ां रै घसकां सूं म्हारी कमर अदरीजगी ही। केई पेसैंजर आळस मरोड़ण लाग्या हा अर की झेरां लेवै हा तो केई बन्तळ में लाग्योड़ा हा। पण म्हे आपो आप में अळूझयोड़ो हो।

अचाणचक घसको सो लाग्यो। बस मुड़िया मड़क सूं सेरियै में उतरगी। ड्रेलेवर गाड़ी रा गेर वदळघा हा। की कीरंर···कीरंरऽऽ हुई। की जेज हुयां वस गांव रै नेड़ै जाय ढवगी।

कण्डक्टर दूजा रै सागै म्हनै पण सावचेत करतो बोल्यो—'आपरो टेसण आयग्यो है बाबू साइब!'

म्हैं कैयोड—तरूं हूँ भाई। जितरेक लारली सीट सूं की गणमणाट सुणीज्यो, 'अरे ओ तो फलाणीय री छोरो है···

'काले-परसूं तो नागो फिरतो हो।'

'सेहर में जाय'र भेख वदळयां सूं बाबू साहब थोड़ो ई वणीजै।'

'घमेड़ी रो वणग्यो है बाबू साइव, देस री गधी नै पूरव री चाल।

'बाप नी मारी मीडकी अर बेटो तीरन्दाज।'

'इण कण्डक्टरियै मे ई अंकै ई अकल कोयनी सो हर कोई नै बाबू साइब कैयदै।'

आं दोन्यूं री अकल मायै कण्डक्टर की बोल्यां विनाई मुळक'र रैयग्यो अर उणरा आखर अमूंझ'र रैयग्या। नित-हमेस रो मारग। बैर वसायां सूं फायदो नी। वो जांणै हो—अेकर अेक कण्डक्टर आं साम्ही आपरी आडी-डोडी बोसरी बजायी ही अर अै लफग उणरा हाड़ खोळा कर न्हाकिया हा। घणां दिनां तांई बापड़ै नै मैंदा लकड़ी रो लेप करणो पड़ियो हो।

…म्हे इ अटेची लियां उतरग्यो। दूजो को समान-सुमुन कण्डक्टर झिलाय दियो।…बस हुकगी। समान-सुमुन झेल'र म्हैं कण्डक्टर नै धिनवाद दियो । उणरी निजरां घणी जेज तांई म्हनैं वीषती रैयी।

म्हारैं सागै वे दोन्यू अर तीन-चारिक दूजाई लोग उतर्‌या हा। सगळाई मांय ई मांय अमूंझयोड़ा। म्हा सूं वात को करीनी, पण दीठ सूं दीठ मिळाया नी जांणै नी-नी जकौ हाल-चाल पूछ्‌या हा। लागै हौ सगळाई दोन्यूं सूं घबरायोड़ा हा। वै दोयूं हा—अेक सिरैपंचां रो भाणजो अर दूजोड़ो भतीजो।

बस सूं उतरती वेळा आं दोन्यू री मनस्या म्हां सूं लखण-उलखण री रैयी। की आडी-डोडी वातां ई कर्‌या हा। पण म्है ऊंडी विचार रीस नैं भरमाय बिना माथौ लगायां आपरै गेले पड़ग्यो।…घरां पूगगो। आंधी आयगी ही। मूंडै माथै पसरियोड़ै परसेवै में बादळ री रंज रळमिळगी अर की चिप-चिपी हुयगी ही। की जेज तांई गुवाडी मे ऊभै नीमड़ै रा छंवरा सांय-सांय करता रैया हा। आंधी निकळी तौ बिजळयां पळपळाटा मारण लागगी। इंदर ई गाज्यो। की जेज तांई धुप्प अंधारो वापरग्यो हो।

म्हैं किवाडी खोल आंगणै तांई पूगो अर देख्यो — साम्ही पड़वै रै पसवाडै ढाळियै में टूट्‌योड़ी मचली माथै आडी हुयोडी मां धांसी में झिलयोडी ही अर छाती मे उणरी दम नी मावै ही।

मांऽऽऽ "म्हारै इण हरफां रै सागै ई मांरी पसळियां फाड़ती धांसी जांणै कोसां अळगी हुयगी। म्हनै लाग्यो मां खातर हरख रो छेह अरपारनी रैह्‌यो हो। जांणै मां री आंख्यां साम्ही अेकण सागै बीसूं सूरज भळकण लाग्‌या हा। की हरफ उघाड़ियां मां मूंडै नै हथेळियां में झाल'र किताई ह्वाला देय दिया।

ह्वाला देवती मां केवती गी—"मां बिना थांनै आसीस जावै रे! थारै भाव तो म्है मरग्या वेटा। म्हैं तो सात-सात नै जणनै ई बांझड़ी रैयी। कावड़ में बैठाय'र जात्रा जरावण आळी मरवणियै री वातां तो इण कळजुग में कहांणी वणियोडी है। इसो वोदो टेम आयो है'क थारा भइजी नी हुवैनी तो पांणी रो लोटो ई भरनै देवणियो कोई नी। वडोड़ो तो घणो अठैई मरे है नी, पण छोरां ई को भेटैनी। नित-हमेस ग्वाड़ी में ऊभा-ऊभा रोवां-झूरां विलखां किणनै कैवां अर कैवां तो सुणै ई कुण? गांव आळां रो ई मिनखपणो खूटग्यो।'

मां ओळमां देवती ईज गी—'घणां दोरा पेटरै आंटां देय-देय पाळधा-पोस्या अर भणाया-पढाया रै थांनै "अर अवै थां रै धाधरियो गनो नेड़ो हुयग्यो।

'नी मां नी, आ बात, कोनी है। पेट तौ भरणो ई पड़ै। जे अठै ई सगळा भेळा हुजावां तो पछै …' पण, अे सबद कैवतां-कैवतां नी जांणै कियां म्हैं रोवणको हुयग्यो। म्हनैं लाग्यो मांरी पीड़ बाजव है।

मां बोली—"नी बेटा दोस थां टावरां रो नी टेम रो है, फकत टेमरो। टेम

नै नमस्कार ई । ...म किणी नै ई को छोडै नी । राजा हरीचन्द्र नैई आ टेम को छोड्या नी । कित्ता फोडा भुगत्या हा वे ! हाँ बेटा, थाँरा टाबर-टूबर तो राजी-खुसी है ?"

"मजै मे है । इनियो की माँदो रैयो हो । थाँरी बीनणी थाँरै पगाँ लागणा कैया है ।"

माँ नै थाँमी पाछी उपडगी । वा हैं मारा मे हाथ फेरण लाग्यो । लागो माँ नै ताव आय-यो हो ।

माँ बोली—'इनियो' अबै तो हावळ है बेटा ! अर बोन्याँ रै पछै माँ नाव मीख्यो हो ।

"म्हनै तो ताव आय-यो बेटा ! दिन भरतो आडग रैह्यो अर अबै ओ हरामी ताव झेल लो । म्हनै ठाड लाग रैयो है बेटा । की राली-रूली ओढाय दे ।"

मैं उणनै अेक राली ओढाय दी अर जेब सूँ गोळी काढ'र पाँणी रै साथै देय दी ।

"ओ ताव-तूव कित्ता'क दिनाँ सूँ है माँ ?"

"पूरो पखवाडो हुयग्यो है बेटा ।·· डोकरा आगै लारै फिरै-धिरै । अै नी हुवै गी तो मोती मूँघा हुय जावैं । अर अबै आँरी ई गरधा कठै है ।··लारला करिया-करिया भुगताँ हाँ बेटा । किणी रै हियै मे दया-माया कोय नी ।···' गोळी आपरो असर जताग्यो ।

'जीसा मिज गया हे ?'

'काग गिगचा निकळयोडा है बेटा । पीसणो पीरावानै 'हेकाय' गयोड़ा है । दोपराँ ताँई आवण रो कैयगा हा । हाल पाछा को आया नी । रात बस्तोजी रै वठै रुकण रो केवता हा । · छाँटा हुयग्या है । मारग मे भीज-भाजगा तो बा है ।'

'क्यूँ अठै चक्की पाछी बन्द हुयगी काँई ?'

'चक्की तो चालै है पण···।'

'पण · ?'

'काँई बताऊँ बेटा, थाँ लोगाँ रा ई पाथरियोड़ा काँटा है ।'·

'लागै सिरै पचरी ·· मूँज बळी पण हाल बट को गयो नी । हाल भी रै भेजै मे, पू भरियोडी है । अर धे कागद देवी'क राजीपो करलाँ । आँ हरामियाँ सूँ राजी पो ।'

'होळै बोल बेटा । ताव मे आँवणो चोखी बात नी । आपाँ रै की ईनी करणो । पैलाँ कियोडा तो हाल भुगताँ हाँ रहै । थे तो थाँरै लुगाई-टाबराँ नै लेय'र सेहराँ में भिळग्या । गाँव मे म्हानै ई रेवणो है । बिखो तो म्हैं ई भुगताँ हाँ । थे तो राई रो परबत बणायगा । अर म्हा लोगाँ रो जीवणो हराम हुयग्यो । म्हे राम परवारै मूण्डो लुकावता जीवाँ हाँ बेटा ! कुण करै सार-संभाळ । कोई रै हियै में थोड़ो-घणो ई दया धरम कोनी । रोयाँ-कूक्याँ ई ई राकसाँ ने दया को आवै नी ।···घर रै दूध नै

कूण पतळो कँवै वेटा ! पण इन मोटोड़े नैं नी तो हरम रेहची अर नी ई लाज। नागौरी नव पोती है। आखी ई पाखी ई पीगी है। अर यूं किणरो चोजो रैयो है सो अै लाज — हरम करै।···अर थारै जी नैं तो पुरा छव महीणा हुयग्या है गाँव री हथाई पग धारियां नैं। काँई हाल हुय रैया है आंरा 'अै मांय ई मांय होमीज'र रैय जावै।'' आज आंरा काँई अै दिन है' क कोस-दोय'तीनेक जाय'र पीसणो पीसावै?··· सिरै पंचांरी सिकायत पछै मुकदमैंवाजी। नात-जात मे पूरा बदनाम हुयोड़ा हां वेटा। जावां जठी नैं ई अेई सागीड़ा तीर चुभता बोल — फलाणै जी नै गाँव वारै कर दिया। वांरा हुक्का पाणी वन्द है। कोई गेहराई में को जावणी चावै नी। मूंडै आयी नी नी जांणी सतरै वातां। काठा काया हुय'र कठेई आंवणो-जांवणो ई छोड दियो। अरे वेटा, इतोई नी, चोपै सूं गायां नैं थारै काड दीग के फाटकां मे नीलाम हुयगी। अर पीवण नैं पीचकै रो पाणी नी, जिण पीचकै खातिर कदेई जोड़ा अर कड़ला अडाणै मेल'र उगायां भरी ही।'

'पाँणी भरण नैं तो आपां रो कूवो है मां !'

गळगळी हुयोड़ी मां वोली — 'हैं तो म्है दोयो गेळा हुय'र देमक्षं धेंग ? थारो बाप कुणमीचै पाँणी, किणरी मरधा है। सितर-पिचत्तर नेडा थारा बाप अर सितर-पिचतर हाथ नैड़ी ऊँडी आ धेड़। सीच सकै थांरा बाप ? थूं ई जांणै है वेटा, बुडै बळदां सूं खेत नी खड़ी जै।

'मोटोड़ा भाई तो''।'

'भर क्यूं को मफैनीं। पण नाजोगै सूं ओई हुवै कठै।'' पोरकी साल उण दिन जद उण माथै खांचो पड़ियो हो दब मरजावतो तो रोय'र रेय जावती।'

'अवै सीज गया है वे ?'

'थारी भाभी नैं लावण गयोड़ो है। राण्ड रै आगै लारै–फिरतो-घिरतो रै वै। दुखी कर न्हाकिया है। कठैई गिया घर री पग्लै पड़ी है। पण उणरो ई काँई दोस, जद वेटोई नाजोगो निवड़ जावै। कठैई ई पेट आयो मरग्यो हुवतो तो निहाल हुय जावती।'' 'मां ओ कैंवती कैंवती गलगली हुयगी ही।

म्हैं अकास कांनी देख्यो। बादळयां बिखरगी ही। अर मां कानी जोयो तो लखायो मां रै मन में अेकण माथै केई बादळयां उमड़ण लागगी ही।···मां आपरै ओरणै रै पल्लै सूं आंख्यां मसळर रैयगी।

किंवाडी री चूं चरड़ वाजी। दोठ किंवाडी तांई जा पूर्यो। जी आयग्या हा। गेडी रो सहारो लियां वे किंवाडी खोली ही। माथै पर दस पनरै किलोरी आटैरी गांठी। वांरा आगै पड़ता पावंडा पाछा पड़ता जा रैया हा। तोई वै अंगणाई तांई आ पूग्या हा।

म्हैं नाग्हो पूग'र गांठडी लेवण लाग्यो। वे म्हारै माथा पर हाथ फेर'र लाड-करता वोल्या—'नी वेटा नी। थारा वाळ विखर जायी।···कद आयो वेटा !'

'म्हैं जी केंवतां'क आयोड्ज हूँ वां रै ना-ना करतांई गाडी उठायली।
बै बोल्या —'टावर-टूबर तौ मजै में है?'
'सै ठीक है।'
'अर थारी मां?'
'अबै हाचळ है। आयौ जणा ताव मे ही। गोळी दियां अबै ताव उतरग्यो है।'
'थांनै बलती रै'वै बेटा। अबै इण री सिरधा कोनी। म्हारैं हाथां मे जावै परी तौ चोखी वात है। नीतर बेटा हाल भूंडा हुवैला।'
'नो जी, इसी वात कियां सोचौ हो थे?'
'इण कळजुग मे ओडीई वातां सोचीजै बेटा।' इत्तो कैयां, म्हारी मां नै पूछ बैठा— 'कांई मांचा मांय ई पड़्या रै'वौ'क पांणी ऊनौ करोला?'
'करूं हूँ सा। अर आं सबदां रै साथै ही मां मचली सूं उतर'र ढाळियै' मे चूल्हो जगावण लागगी। म्हे भगोलौ भर'र ले आयौ। चूल्हो जगयां की जेज में ई पांणी खणखणायगौ।
भगोलौ नीचे उतार ठण्डो पांणी भेळ जीसा सिलाड़ी मांयै बैठ आपरा पग धंखोळ लिया।
बोल्या —'थाकेलो उतर जासी बेटा।'
म्हे कैयौ — 'हां सा।'
सिझ्या हुयगी ही। अंधारो पसरतो जाय रैयौ हो। मंदिरां मेंझालरा, टकोरा अर नंगाड़ा वाजण ला या हा। कठेई सख ई पूरीजै हा। छोर डांगरां री ऊँ-बैं-ऊँ-बैं ल-योड़ी ही। देखतांई देखता दो-च्यार रेवड़ ई निसर-या हा।
जीसा माळा फेरण बैठग्या हा अर म्हैं आगड़ सांम्ही बैठाग्यो हौ। चूल्हे मे बळीतो धपळ-धपळ बळ रैयौ हो। मां दोय-तीनेक सोगरा उतार दिया हा। मां नैं सोगरा घड़तां-घड़तां देख घणी लुगायां थूथका न्हाकता करतीं हीं। पण म्हैं देख रैयौ हो आ मां रै हाथां घड़िया सोगड़ा आडा-वांका हा। केई वार सोगरौ री कोरां केलड़ी सूं वारै ई रैयगी। सोगरै नैं थाल देती वखत खुरचणी केलड़ी रैं इसारैं पर हाजै हो। चीमियै सूं सोगरां सेंकती वगत केई वार थेपड़ियां थाल दिरीजगी अर सोगरो लाग-लाग'र आपरी वायना बिगैरै न्हाख्या हा। सुभट लखावै हो मां री दीठ अेकदम वोदी हुयगी ही।
म्हैं कैयौ — 'म्हैं उतारदयूं मां अै सोगरा?'
'नो वेटा, नी हाल तौ सूझै है, हां कीं कम सूझण लाग्यो है। कांई करां वेटा, पूरब लैं जलम रा कियोड़ा भुगता हां।' निसासा न्हाखती थकी बोली, 'सात-सात वेटा अर बहूवां! पण सुख लिख्योड़ो हुवै तौ मिळै। म्हारैं बिचै तौ वा रुकमणी वामणी ई चोखी जिको नीपूती है। किणी री आस तौ को राखै नी। मांग-मूंग'र पेट भर लै।...'
मार्ग है वेटा, अबै-मूवो-तिस्यो ई भरणौ पड़सी।' वातां रै बिचाळै सोगरौ की लागगौ।

म्हैं उण नै केलड़ी सूं उतार खीरा माथै सेकण ला यो। मां बोली— 'आज थूं सेक-लेसी। काल कुण सेकसी? म्हारी मांधो तो म्हनै ई उडावणी है बेटा। ला, चींपियो दे, कठैई हाथनीं बळज्या थारो। चीपियो तपीयोड़ो है।' मां अेकसोगरो फेरुं घड़ियो अर केलड़ी माथै न्हाक की डोका-डोकी चूल्है मे दिया ' की चरड़-चरड़'रळ हुय'र तूंगिया उछळया। म्हे लारै सिरकतो केयो— म्हैं पाछो आयो हो मां।

मां बोलती उणसूं ई पैला जी सा माळा-फेरता-फेरताई बोल्या 'पिसाब करण नै जावै है कांई बेटा!'

'हां सा।'

'तो यूं करै बेटा—खूणै में उकळ मे गेडी रो गोचो ऊभो है, हाथ मे लै जावै, हो।'

'कुण खावै है सा?'

'आपरो जापतो चोखो बेटा। सिरै पंच हालबात नै गांठ करियोड़ा है। भरोसो नी।'''अर थारै आवणरा थावरई तो बीरै तांई कदैई पूगगा हुवैला।'

म्हैं नीं चावतो ई गेडी रो गोचो लेय'र बाड़ै तांई आयग्यो। बाड़ै री पळी खोल खोड़ी में सूं मांय जावण ई हुयो हो'क की खुड़को हुयो। माळा फेरणी छोड़'र जीसा ई म्हारै लारै लारै बाड़ै री बाड कनै आय ऊभगा। जठा तांई म्है नी आयो वै कदैई म्हारै कांनो तौ कदैई मुवाड़ी रै फिळै कांनो तो कदैई म्हारै कांनी देखता रैया।

'आप लारै क्यूं आया सा?'

'थूं कोनी जांणै बेटा, सांप किणी रो सगो नी हुवै। म्हैं जांणां हां। थे तो तूंगिया बिखेरगा अर म्है मां सूं लगी लायरी लपटां में झुळस रैया हां।'

म्है आगड़ तांई पूगग्या हा। मां सोगरा सेक लिया हा। पण चूल्है सूं अणगीणत चिणगियां चड़-चड़'र करती उछलती जाय रैयी ही। म्है आं चिणगियां में उतर'र मून धार लीवी ही। पण जीसा रै आं सबदां—'आव आपां रोटी जीमला।' रै म्हारै आपरै चेतै ढूक्यो।

मां थाळी परोस दीवी ही अर म्है दोयू बाप-बेटा जीमे हा। जीसा जांणकारी दीवी ही—मैं आज 'हेकाव' मे सुणियो है—

छापां मे अेड़ी खबर छपी है।

मां बोली—'कैड़ी?'

'कैड़ी कांई! म्हारी देखणी अर सुणनी मे तो आ पैली बार ई हुयो है। 'गूढ़ै' गांव में अेक सात टाबरां रो बाप आपरी बेटो रै सागै ई काळो मूण्डो कररयो।'

'हैं!'

'हैं कांई, सांच बात है।'

'राम-राम कैड़ो कुळजुग है!'

'जणैई तो च्यारूं मेर विणास ई विणास है। सगळै ई काळ वापरियोड़ो है।

पापरो घडो तर-तर भरतो जा रैयो है। भरयाँ तो फूटै ई।'

'कैवँनी'क ऊभा ऊँट ई कदै पिलाणीजै, पण देखो-कैड़ा फोरो समै आयो हो। ऊभा ऊँट ई पिलाणीजण ला या है। राम · राम···राम ऽऽऽ···!

'धरम री तो हाँण हुयगी। ग्रन्थाँ में ई कैयीज्यो है—जद-जद धरम री हाँण हुवैला, काळ छावैला अर विणास हुवैला !'

'वातो पगै आयगी है मा', माँ वोल'र रैयगी अर मैं विचाळै ई बोल्यो···'अर जे धरम रैय जावतो तो काँई हुय जावतो ?'

'हुवतो काँई बेटा, धरम रैवतो नी तो उणरै सारै रात चालतो। सत चालतो तो अैडो-वैडो वातो साम्ही नी आवताँ अर म्हे पीढ़ियाँ रै इण गाँव में हुक्का-पाणी सूँ नी जावता। कदेई सोचूँ'क सूरज री उगाळी ई थारी मानै लेय'र पीढ़ियाँ रै इण वासै नै छोडद्यूँ अर अणदीठी असँदो ठौड़ वास्तै ब्हीर हुयजावूँ। पण, जलमभोम सो'रै साथ थोड़ी ई छूटै बेटा !'

माँ बोली · 'देख बेटा, यूँ मोकै सर आय गी है। गाँव में संपूई री मौत हुयोड़ी है। गाँव भळो हुवैलो। राजीपो करणो चोखो। वस्तियाँ नाईं छानै-छानै बतायगो हो आपाँ गुनागारी भराँ अर कचेडी मे बयान बदळदाँ तो राजीपो हुय सकै है।'

मैं बोल्यो : नी माँ ओ किंयाँ कर सकाँ हाँ आपाँ, जे आपाँ हाँकरगा नी, आपाँ तो जिको भुगताँ हाँ, भुगताँ ई हाँ। गाँव आळा नेई भुगतणो पड़ैला। राजपै री कठैई दरकार कोनी। आज जद राजा-महाराजा रा ई राज-पाट नी रैया है अर औतो बापड़ो मिरै पंच है। आपाँ रै जिकी भी बात है आपाँ कोरट में ई सळट साँ।

'म्हनै तो को जचैनो बेटा, पाखर ई कदेई सिरकाइजै है। धुड़ बाळो आगो। गाँव राम है। हुयो जिको हुयो। जद दूजाँ रै किणी रै पोड़ को पाकी नी पछै आपाँ रै कठै खाज ? राजीपो करणो हकरो है बेटा।'

'नी जी, थोड़ो तो सेठो रैणो पड़सी। नीतर आज ताँई रै करिमोड़ा मायँ पाणी फिर जासी। आ ई तो वडेरा कैयी है : दिन आमा तो देवळ डीगे है।

'पण बेटा,'

'पण काँई जी ?

'देख बेटा, आपाँ री कुण। अेम॰अेल॰अे॰, अेस॰ डी॰ ओ॰, बी॰ डी॰ ओ॰ प्रधान-प्रमुख, पटवारी, मन्त्री अर सन्तरी ताँई सगळाई मिरैपचाँ गुलाम है। कैवँनी बेटा, खावै मूण्डो नै लाजै आँख्या। मूण्डै-मूण्डै हराम लाणोड़ी है बेटा।

'नी जीसा जठै ताँई आँ हरामियाँ···।'

'होळै योल बेटा, भीताँ रै ई कान हुया करै है। हाल आखी रात काढ़णी है। म्हे काँई-काँई नी भुगताँ हाँ। फकत ऊभण नै आँगणो'क नीमड़ै ई, छियाँ'क नीमड़ै रै ओळै दोळै को परकमा है बेटा, दूजी ठौड़ कठै ई जाग्या को है नी।'—

'देखो जी, जद ऊखळ में माथो देय ई दियो है तो धमकै सूँ डरण री कठै जरूत

है। कानून नै कम मत समझो आप। कानून तो कानून ई है। देस रै राष्ट्रपति अर प्रधान मन्त्री नै ई को छोड़ै नी कानून। राज रै घरां देर है, पण अंधेर कोनी। सजा तो आनै मिळैला ई। आज नीं तो काल।'

'म्है घोळा लिया है बेटा, बिना डीडेयां रै होळी नी रमीजै। इण कोरट-कचेड़ियां री फेटो घणो अवखो है। अै मारै थोड़ा पण धींसै घणा। कोरट-कचेड़ियां किणरी, जिणरी अण्टी में दमड़ी हुवै। जठै सांच झूंठ में अर झूंठ सांच में वदळ जावै। नी जाणै अेक ई दिन मे कितरी बात भगवान तै टूंपौ देयर मारै। भला सूं भला मिनख हाथ में गीता अर कुराण लेय'र झूठी-झूठी सोगनां खाय लेवै।'' अर यूं सही बात कैवणियो कुण है गांव में। ' नागां सूं तो बेटा, राम ई डरै है बापड़ो। '''कुण बेर मोल लेवै। सगला ई जाणै है इण डाकी रै दांतां झि.या तो पछै वचणो नी है।

'पण आप आ तो जाणो ई हो'क बोर तो कांटाळी झाड़ी रै ई लागै है।'

'आ बात तो सोळै आनां सांची है बेटा, पण, गांव मे रेवां हां खेत री आंट-मांठ तो आंवणो-जावणो ई पड़ै। म्हारी तो हार ओई केवणी है बेटा'क हाल बेटी बापरी है बेटा। मौको आयोडो नी गमावणो चाहजै। वडेरां रा ई कायदा-कानून है। थूं जांणै ई है बेटा, दो लड़ै वां में सूं अेक तो पड़ै ई। मांनलो'क आपां हारग्या हां।

'बांध्यां कठै आवणो है जीसा। अठै बात न्याव-अन्याव री है। अत्याचार करण आळां सूं सेवण आळो घणो दोखी हुवै। आ बात ई तो वडेरां ई कैयी है। चिन्त्या मत ना करो, कानून री पोटो पड़ियो है वो धूड़ लेय'र उठसी।'

'थूं भणियो-पढ़ियो है, कैवै तो म्हैं मान लूं बेटा पण म्हारा तो अणभव है। अभागां री इण दुनिया मे कोई भीड़ को हुवैनी। खैर इत्ता दिन काया नै भाड़ो देय'र ज्यूं-त्यूं काढ लिया। फेरूं पतियारो करलियां थारी कोरट-कचेड़ियां रो। व्हौ-व्हो साम्ही आ जायी। तै पैलै रोज तक री ई तो बात है—केस रै फैसलै री तारीख है।'

'भरोसो राखो जीसा, फैसलो आपां रै हक मे हुसी। अबै खोत रा घोड़ा तो चाल सकै नी।'

'चोखी बात है बेटा, चालणा ई नी चाइजै।'

'हरगिज आपां रा घोड़ा है'''असली घोड़ा है कैवतां कैवतां नी जाणै कद म्हारी आंख्यां मिळगी। अर म्है खुराटां नींद लो हो। अर म्हारा जी आखी रात ओंख्या मे काडी हो।

तीजो दिन हो। म्है कचेड़ी में हा। सिरै पंच हा। वांरा लठैत हा। जज रै साम्हो दा काळा कोट बाया-वूय हुयां आप-आपरी लड़ाई लड़ै हा।'''की जेज हुयां जज फैसलो सुणाय दियो। सिरै पच हाक-न्हाक बरी हुयग्या हा।

सगळां री ओख्यां म्हा दोन्यूं बाप-बेटां नै गावण लागगी ही। अर म्हे अेक दूजै री मोट मिलायां हाथां रै बटका भरै हा। बाड़ तो लोहो कोनीं ही।

जोसा इतो ई बोलिया हा—'म्हैं कैयो नी बेटा।'' अबै गांव में पग धरणो ई परवस है।'

अर म्हारो हूं-हूं ऊभो हुयग्यो हो। म्हैं जोसा नै इतोई कैयो : 'फिकर ना करो जोसा। हाल अेक नीं तीन-तीन ऊपरली कोरटां है। बठै आगां री सुणवाई हुसी। दोखी नैं जरूर दण्ड मिळसी।'

जोसा थोड़ी जेज ताईं जज री कुरसी रै लारै टंगोड़ी गांधी जी री फोटू नै अेक टकै भाळता रैया अर पछै नी जाणै कठै सूं हिम्मत बटोर'र आ केवता-केवता क—'जरूर लड़स्यां बेटा, औ केस जरूर लड़स्यां'''बे आपरै हाथ में झेल्योड़ै चूणियै रै सहारै कोरट सूं बारै टुरग्या।

मौत री जड़ता

रामनिवास शर्मा

"आखी जिन्दगाणी भूख मिटावण मांय ही गँवाय दी पण भूख हाल तांई मिटी कोनी। सगळी मिनखा जूण भूख मिटावण मांय लाग्योड़ी है पण आ कदेई नी तो मिटै उल्टी दिन रात चौगूणी वधती जावै। म्हारै घर आळा पच-पच नै मरग्या पण नी तो वारी भूख मिटी अर नी परवार री। आज हूं बेबस हुय नै पड़ी हूं। कोई मनै दोन्यू वगत रोटी देवै। रोटी तो मिलै पण वगत टाळनै। झक-झक करनै। रोटी खावणू अर थूड़ खावणू बरोवर है। खावणी रोटी ही पड़ै है। माजनू मारनै रोटी ही खावणी पड़ै। भूख सू आंतड्या मरवा लाग ज्यावै, होटा मायं फेफ्यां आवा लाग ज्यावै जणा थाळी आवै। पवराईज्योड़ी आख्यां कांसो देख नै हरी हुय ज्यावै। मूण्डै मांय पाणी आय ज्यावै। रोटी खाऊं पण बी मांय नी तो सुआद हुवै अर नी अपणायत। नै कदास आ वात हूं आड़ोसी पाड़ोसी नै कहूं तो फैर पछै ई रा ही लाला पड़ ज्यावै। सगळी जुआनी आ वेटा री सार-सभाळ मांय गुजरगी। बूढापै मांय औरी दसा मायं मनै पड़ियो रैवणू पड़सी, आ हूं कदेई नी सोची ही। जै कदास हूं टूपो खाय नै…।'

'दादी ! रोटी लै' ओरै मांय बड़तो पोतो बोल्यो।

'ल्या। वेटा' मांचे मायं बैठती डोकरी बोली—'आज तो बोळो मोड़ो कर दियो।'

'सदाळो ही बगत है।'

'तावड़ो तो बोळो चढग्यो दीखै है।' बारणै सूं आख्यां फाड़ती डोकरी बोली।

फाटयोड़ै ढोल सी आवाज कानां रै पड़दै सूं टकराथी। 'आखो दिन खावणनै मरै। रोटी राख दै। पाणी रो लोटो ले ज्या। घर मांय कित्तो कोरसो है औ दीखै ही कोनी। काम की जकै नै ठा पड़ै। लारलै दोय दिना सूं ढोल भारी है। आ तो

को पूछी नी कै बीनणी ! तबियत कियां है। ऊपर सूं रोटी मोड़ी ल्यायो। काल हैं मर ज्यासूं जणा सगळा नै ठा पड़ ज्यासी।'

छोरो चुपचाप थाळी राख नै पाणी रो लोटो राख नै चल्यो गयो।

डोकरी री आंख्यां री सोजी थोड़ी ही। कान ऊंचो सुणता हा। पण हियैं सूं साचो ही। डांग सा वचन कानां सूं बार-बार टकरायीजै हा। पाणी कोया मायं फिरवा लाग्यो हो। थाळी नै टंटोलतो हाथ पाछो हुयग्यो हो। भूख सगळी मिटगी ही। रोटी नै निमस्कार करनै डोकरी थाळी पसवाड़ै राखी। मांचै मायं बैठ नै डोकरी आपरै विचारां मांय उळझ्या लाग गी।

जै कदास आज म्हारो काळजो भरियो हुवतो तो म्हारी इसो हालत नी हुवती। बहू-बेटा आवै-जावै घूमता। टैल-चाकरी करता। वै बगत लोग घणा ही समझायो कै लोगां सूं लेवणू-देवणू मत बताई ज्यै। टूम-छल्लो है जकै नै कनै राखी ज्यै। पण म्हारी रांड री अकल निकळगी ही। काळजो खोल नै सगळां रै मायं राख दियो। खाली हुय नै बैठगी। अबै मनै कुण पूछै ? म्हारै कनै कै है !' भगोती सोचै ही। सोचणू ही भगोती रो जीवण है। आदत है। लारलै बीळा बरसां सूं है।

सियाळै रा दिन हा। सियाळा रा दिन छोटा हुवै। रात बडी। भगोती सारू रात अर दिन दोन्यू एक समान ही है। दिन-रात सोचणू।

घर मांय बडती लुगाई हेलो पाड़ियो —'जेठाणी जी। सोय ग्या काई ?'

पगां लागती बीनणी बोली —'आओ ! पधारो।' साथै ही छोरे नै हेलो पाड़ियो—'किसनू ! देख'रै दादी जी सोय ग्या काई ?'

आज भगोती रो की सू ही बात करण रो मन नी हो। पण आ देराणी ! साच-साच कैवण आळी है। मूण्डै री फूडी है। जै कदास ईं रै सामै माड़ी बात हुय ज्यासी तौ सगळै गांव मांय ढको पीट सी।

किसनू ओरे रै मोड़ै कनै आय नै दादी नै हेलो पाडियो।

'आऊं बेटा' डोकरी बोली।

अण-मणै मन सूं डोकरी उठनै पाणी पीयो। लकड़ी रो सारो लेय नै ठावा-ठावा पग राखती चौक मांय आयनै बैठी।

'आज तो सू बोळा दिना सू आयो।

पगां लगती देवराणी बोली — छोटकयै पोते रै भाव विसरग्यो। ई कारण आवणू हुयो कोनी। दो दिनां पै'लां घी नै मूंग री दाळ रो पानी दियो जणा आज ठाकुरजी री कड़ाई करी। परसाद देवण खातर आयी हूं।' बाटको देवती बोली – 'ल्यो ! परसाद रो बाटको।'

डोकरी परसाद लेवती हेलो पाड़ियो—'छपनैरी बहू ! परसाद राखनै कटोरो पाछो खाली कर'रनै देओ।'

रसोई मांय सूं बोली—'अवार आयी। काकीसा! चाय छाणनै ल्याऊं।'

"अरे बीनणी अवार किस्ये वगत चाय बनायी है। अवार ही खाणू खायनै आयी हूं' काकी जी बोल्या।

छगनै री बीनणी चाय छाणनै तीन गिलासां चाय रा लेय नै बारै आयी। बोली —'काकीसा! दिन गेसूं थोड़ो माथो भारी हो। म्हारै टाबर कुण चाय रो तसियो करतो। आप पधार या जणा मौको सझ गो। थोड़ी ताल वात भी हूय ज्यासी अर चाय भी पीवी ज्यासी।'

'बीनणी! आज माथो क्यां सूं दूखवा लाग गो' डोकरी बोली।

'काल ठण्ड मांय बोळा कपड़ा धोया जकै सूं ठण्ड लागगी हुसी' बीनणी पडूतर दियो।

'सियाळै मांय थोड़ो ध्यान राख्या करो'

'थारी बोचला करण री बाण हाल ताई गयी कोनी।' चाय पीवती काकीसा बोल्या - 'बीनणी कोई गीगली थोड़ी है।'

छगनैरी बहू रा कोया फिरबा लागग्या। मन मांय सेंकती बोली 'आं री आ आदत सदा री है।'

'मांयतां रो मन सदा ही काचो हुवै' डोकरी बोली। चाय पीय नै गिलास राखती काकी सा बोल्या— 'सासू नै चटाइ जै किसीक वणी है' आ कैवती पाछी चली गयी।

'आं जरूर।'

छगनै री बहू नै तरांटो आयो। अवार खाणू खायनै बैठी है। एक गिलास चाय गटगायगी। आ ही नी बोली—'बीनणी अवार ही खाणू खायो है। चाय नी पीऊंली। घोगो उकळै। आधो दिन चाय चाहिजै। मरै नै मत्थो छोड़ै।'

डोकरी री चाय जै'र हूयगी। डोकरी सकपकायगी। उल्टी करनै पाछी काढीजै तो कोनी। डोकरी बोली—'बीनणी! तू मनै दी अर हूं पीयगी। मांगी तो कोनी ही।'

'हूं जाणै ही। जकै सूं पै'ली बणाय नै लायी ही। थारा किसा हिया फूटयोड़ा हा, पै'लो कंय देवती कै बीनणी हूं चाय नी पीऊंला। मनै पतो हो' के चाय खातर मरै हो।

डोकरी रा ऊपरा दांत ऊपर अर नीचला दांत नीचै रैयग्या। बठै सूं उठणू मुस्कल हूयग्यो। देवराणी आयी अर घर मांय राड़ घालगी। थोड़ी ताळ डोकरी सैंग-बैंग हूयोड़ी बठै ही बैठी री। पछै बडी मुस्कल सूं उठनै आपरै ओरै मांय गयी भर सिरक ओढनै मांय रो मांय रोवा लागगी।

'हूं कत्ताक काळा चाव्या है। जकां रो बदलो चुकोज्यै है। वे पुण्यात्मा हा जका आपरी जावै नै सळटाय नै चल्या गया। मोदर पड़ियां जणा मनै समझायी कै

हाथ काठो राखी जै। अे बहू बेटी की काम रा कोनी है। बगत री रोटी ही नं घालेला। आवण आळो जमानू खराब है। हाथ नै हाथ खावण सारु त्यार रैवंतो। पण म्हारी रांड री अकल बहू-बेटा मिलनै काढली। बा री बात नी मानी, इं कारन तकलीफ उठाऊं। मनैं कै ठा ही कै म्हारी औलाद ही म्हारै सागै आ करसी। भगोती सोचै ही —'छोरो तो घाघरै री चूं ह। म्हारो ई घर सूं इतो कै मोह कै जकै घर मांय हूं बीनणी बण नै आयी वी घर मांय ही पग पसारु। उभी आयी अर आडी हुय नै जाऊं। कास हूं इं मोह सूं मुक्त हुवती ...।"

गुरू-परसादी

शिवराज छंगाणी

प्रोफेसर रामशरणजी बोत धीरे सभाव रा हा। तीन विसैरा ग्याता — सँस्कृत हिन्दी अर अंग्रेजी रा धुरंधर पण्डित। कॉलिज में सगळा सूं बधी' क ग्यान राखण आळा। डील सूं पतळा घोचै सिरखा। रंग गोरो गट्ट। पोसाक धोळी खादी री धोत अर धोळो ई कुरतो। पगां में गोरखपुरी पगरखी। आंख्यां आगै तसमो पतळी डांडी रो। दूर सूं आवता इस्या लागता जाणै हड्यां रै ढांचै माथै धोळी चमड़ी ओढ़ा'र मोड़ी हुवै। मूंडै माथै मुळक बंध्योड़ी रेवती। साईणां प्रोफेसर घणां कीमती कपड़ा पेरता। पण बांरी सादगी रै सामै सगळा पाणी भरता।

कॉलिज में आवतां जद आप आळी पुराणी सायकिल जिकी सगळै रस्ते मांय चररंडावूं करती बांरी बस्ती करावती रैवती। छोरा-छोरी बानै घणो आंदर संस्कार देवता दिरावता।

बडी कॉलिज में छोरा-छोरी उछाछळायो करता। कदेई प्रिंसीपल सामै मँडता तो कदेई पुस्तकालयाध्यक्ष सूं भचवेड़ो लेवता। कदेई आपसपरी मांय राड़ मचावता तो कदेई बारे सूं बखेड़ो खड़ो कर लेवता कदेई चुणाव री चरचा लेय'र हुडदंग मचावता।

पण जद कदेई प्रो० रामशरणजी आवता तो सगळा छोरा-छोरी माथो झुकाय'र खड़ा हुय जावता। सगळो बखेड़ो कैय सूं ई नईं सळटतो जद प्रो० सा' बं दोनूं पार्टियां नै बुलायनै राजीपो करावता। फेरूं कॉलिज में सांयती हुय जावती।

प्रो० सा'ब टावरां सूं घणो सनेव राखता। खुद कदेई किलास कोनी छोड़ता। बांरी किलास मांय पढ़ण नै छोरा तरसता। बांरो ग्यान समंदर री गैराई री तरै हुवतो। हरेक विसै माथै वारो पूरो दूधकार।

बांरी खूबी आ ही कै ब छोरां नै पढावता अर बा नै मोकळी पोथ्यां पढ़ण

सारू पुस्तकालय सूं दिरावता। खुद आज रै प्रोफेसरां री तरैं ना तो चुल-बुला हा अर ना वां नै ट्यूशन-टाग्रण रो लोभ। कोरो लोभ ई बात रो हो कै वांरा पढ़ायोड़ा छोरा-छोरी खूब ग्यानी हुवै अर चोखा नम्बर लावै।

खुद रै घरै प्रो० सा'ब घणखरो बगत पोथ्यां पढण अर वी सूं नोट्स बणावण मांय बीतावता। पढावण रो वां नै सोख ई हो। प्रो० सा'ब रै घर मांय लुगायी घणी पढी-लिखी कोनी ही, पण खुद रै टाबरां नै पढावण सारू मैं'नत करती। घर गिरस्ती रो काम-काज सूं मोकळो हुवै पण पढाई लिखाई रो महत्व वा आछी तरियां जाणती।

प्रो० सा'ब रै अेक छोरो अर अेक छोरी ही। दोनूं ई पढण मांय हुसियार। प्रो सा'ब रात री वेळा मे वानै पढावता रैंवता। दोनूं ई छोरा-छोरी फस्ट डिवीजन सूं पास हुवता।

कालिज रै चेला मंडली रा घोत सा छोरा जगै-जगै अधिकारी बणग्या। वांरी सरधा प्रो सा'ब सारू घणी रैंवती। प्रो सा'ब वांनै कॉलिज मांय घणै सनेव सूं बतळावता। वां रो दुःख दरद पूछता। जिका कमजोर समाज सूं आवता वांरी फीस माफ करावता अर पुस्तकालय सूं वां नै पोथ्यां दिरावता। समै-समै पढ़ायी लिखायी रै मुजब निगैदास्ती करता रैंवता। कैई-कैई छोरां री भोळावण दूजै प्रोफेसरां नै ई दिरावण सारू प्रयास करता।

सभाव रा उदार अर हिरदे सूं कंवळा हुयण रै कारण दो-तीन छोरां वां रै मूंडै लागग्या। अेक छोरो रमाकान्त तो घोत ई चंट अर चालबाज। दस-बीस छोरा बांरै सागे नित-हमेस झुंड बणायोड़ा सा रैवता। रमाकान्त रै कैवणै सूं वांनै पुस्तकालय सूं पोथ्यां प्रो० रामशरणजी दिरावता। वो कदेई-कदेई तो कैई छोरा रै वास्तै प्रो० सा'ब सूं रुपिया ई मांग लेजावतो। कदेई पूठे लोटावता अर कदेई कोनी देवता। इसी ई सभाव री ही प्रो० सा'ब री घरवाली कमला। नांव जिसोई रूप अर गुण। हिरद सूं उदार अर भोळी-भाळी अर अनुभव सूं गुणीज्योड़ी। प्रो० सा'ब रै सभाव नै वा आछी तरिया जाणती अर वां रै मुजब ई चालती

दियाळी-होळी जद कदेई कॉलिज रै छोरां रो झुंड घर कानी आवतो तो कमला वांनै मिठाई खवायै विना पाछो कोनो जावण देंवती। आछे सभाव रा छोरा प्रो० सा'ब अर बांरी लुगायी री मोकळी बड़ाई करता। वां रो आदर अर सरधा सूं नांव लैंवता।

रमाकान्त कमला रै ही मूंडै लागग्यो। महीनै में दस-बीस दफै तो वांरै आवतो ई ज।

प्रो० सा'ब नै बारलै विश्वविद्यालय सारू भापण माळा रो नूंतो मिळतो; जद रमाकान्त वां नै ठेसण पुगावतो अर घर रा दो-च्यार काम-काज ई सळटाय देवतो।

प्रोफेसर सा'ब री घरवाळी अेक दिन रमाकान्त नै पूछ्यो— 'रमाकान्त थूं कुणसी किलास में पढै है ?' वो बोल्यो— 'माता जी, हूं सोलहवीं में पढूं ।'

'था रे कांई विसै लियोड़ो है ?'

'म्हारै हिन्दी लियोड़ी है'

'थूं आगे कांई पढ़ैला ?'

'म्हे पी. एच. डी करणो चावूं ।'

'कै रै अण्डर में करैला ?'

'अठै प्रो. सा'ब बतासी ।'

'प्रो. सा'ब खुद कोनी करा सकै ?'

'क्यूं नई, वां री म्हारै माथै मैरबानी है ।'

'थूं चावै तो म्हैं थांरी भोळावण दे दूं ।'

'माताजी, नेकी अर पूछ-पूछ'र ।'

'तो ठीक, अबार तो थूं घरै जाय'र आराम कर ले ।'

'जावूं माताजी, आप री आ या । म्हारै जोग कोओी काम-काज हुवै— भोळाया अवस ।'

आ कैय'र रमाकान्त घर मूं बारै जावै । कॉलिज रै नजीक बी रो घर । भायलां री मण्डळी थीनै उडी कै । अेक भायलो बोल्यो, 'आयग्यो रमाकान्त, अर सगळां बी नै घेर लियो । सगळा आपस परी मे हथायां करै । कदेई पढणरी बात्यां अर कदेइ सिनेमा री फिल्मां री ।

बी माय सूं अेक जणै कैयो- 'रमाकान्त । मनै हिन्दी रै पांचवै पेपर री पोथ्यां कोनी मिळी । प्रो. सा'ब नै म्हारी सिपारिश कर देवै तो पोथ्यां मिल जावै ।'

वो पडूत्तर देवै—'क्यूं नई, प्रो सा'ब नै आवण दे । जरूर दिरा सूं । छोरां वास्तै वै आधी रात रा त्यार रैवै ।'

आ कैय'र पाछी दूजी-गप्पशप्प-लगावणी सरु कर दे । केई प्रो. सा'ब रै गुणां माथै, केई वां रै ग्यान माथै अर केई वांरी उदारता रौ आछो वखाण करै । केई कैवै कै इस्या देवता कम ई मिळै जिकां छोरां नै घणै हेत सूं पढावै । खुद री जेब सूं वांरी फीस भरै । पोथ्यां दिरावै । अर जद छोरा घरै मिलण नै जावै तो चाय-ना.तो करायां बिना पाछा कोनी जावण दे । रमाकान्त कैवै—भई गुरुजी सगळां नै आपरै टाबरदाई समझै । छोरां रो लाड़कोड करै । प्रेम अर सनैव सूं बांरो चरित्र बणावै ।

इयां हथायां करतां घणो वखत वीतगो । सगळा छोरा आप-आपरै घरै करती कानी वहीर हुया ।

प्रोफेसर रामशरण जी केई दिनां पाछै बारै सूं आया । सगळा री खेम कुसळ पूछी । फेरूं कॉलेज रै वखत वठै पूगग्या । पढावणो अर लिखावणो प्रो. सा'ब रो रोज रो फरज । घणा खरा छोरां बारै हेठै पी. एच. डी. कर'र निसरग्या ।

छेवट रमाकान्त री नंबर ई वांरी जोड़ायत रै कंवर्णे सूं आयग्यो। वीरै सौळवी करतांई रजिस्ट्रेशन हुयग्यो। तीन साल मांय विण आप री डिगरी गुरु किरपा सूं लीवी। रमाकान्त डिग्री लेवणै रै पाछै गुरुजी अर वांरी जोड़ायत री आशीष लेवण सारू आयो अर फेरूं आपरै गांव रवानै हुयग्यो।

थोडा दिनां पाछै वो भी कॉलेज मांय नौकर लागग्यो। प्रो. सा'ब आ खबर सुणी जद वांनै वडो आणद आयो।

प्रोफेसर सा'ब री रिटायरमेंट नजीक। थोड़ाई मईना बाकी हा। वै आपरी पेन्शन रा कागदा त्यार करवाय रैया हा। सोच्यो रिटायरमेण्ट रै पाछै मोकळो समै पढण लिखण मांय बीतसी। पइसो-टक्को ई ठीक-ठाक मिल जासी। घर रा छोरा-छोरी सै भण गुणग्या अर वां रै नोकर्‌या ई लागगी। छेवट पेन्शन रै रूपियां सूं दोय जीवां रौ आछो पेट भरीजतो रैसी। जीवणो जितोई सीवणो। लारला सै सुखी रैसी। ना ऊधो रौ लेणो अर ना माधो रौ देणो।

आ सोच'र प्रो. सा'ब खुद र कागजां नै ठीक-ठाक करण सारू लाग जावै।

वै अचाणचक पुस्तकालय मांय जावै। पुस्तकालयाध्यक्ष वां नै पोथ्यां री लिस्ट पकड़ाय देवै अर कैवे —प्रो. सा'ब लिस्ट देखै अर खुद रौ चस्मो ऊंचो नीचो करै। वां पोथ्या मोकळा छोरां नै दिरायी। पण कैण ई पाछी कोनी जमा करायी। अबै प्रो. सा'ब सोच मे पड़ग्या। वां रमाकान्त ने याद कर्‌यो। बी नैं अेक कागद लिख्यो जिक मांय पोथ्यां री वडो लिख भेज्यो। उथळो पाछो आयो कोनी। रिटायरमेण्ट री माणी दिन आयग्यो पण पोथ्यां पाछी कोनी मिळ सकी। पोथ्यां री लागत कीमत दस हजार रूपियां रै अड़ै-गड़ै ही। प्रो. सा'ब जिका-जिका छोरां ने जाणता हां वा नै कागद पतर लिख्या पण किणी रो उथलो नई मिळ्यो। छेवट डॉ. रमाकान्त री कागद प्रो. सा'ब खनै आया। बिण लिख्यो —गुरुजी मोकला वरस बीतग्या। छोरां पुस्तकालया मांय पोथ्यां जमा कोनी करायी आ सुण'र मनै घणो दु:ख हुयो। अबै म्हं तो कैई छोरां री पता-ठिकाणो जाणूं ई कोनी। किया पतो लाग सकै? पण आप म्हारो जीवण बणावण सारू जिको सनैव दियो-दिरायो वीने कदेई नई भुलाय सकूं। दस हजार री कीमत घोत ज्यादा हुवै। आपरी गुरु-परसादी सूं छोरा आपनै कदेई कोनी भूल सकै। हूं अबार-काम-काज मांय ब्यस्त रैवूं। समै मिळतापाण ई आपरी सेवा मांय हाजर हुय जासूं। म्हारै जोग सेवा हुवै लिखासो। कागद री उथळी दिरासो। प्रो. सा'ब ओ कागद पढ'र मन-मांय सोचै कै छोरां छेवट गुरु परसादी हाथेई ले लीवी।

प्रो. सा'ब री ग्रेच्यूटी अर पेन्शन मांय सूं दस हजार रूपिया काटीज'र राज रै खजानै मे जमा हुय जावै अर छोरां रै गुर परसादी हाथ लाग जावै।

प्रो. सा'ब घरवाळी खनै पूगै अर सगळी कथा बतळावै फेरूं उदास हुय जावै। घरवाळी समझदार हुवै। बा ध्यावस दिरावती कैवै —चिन्ता-फिकर री घणी बात कोनी, थे जाणो कै अेक टाबर नैं ऊंची शिक्षा दिरावण री घर सूं ई खरच लायग्यो। फेरूं दोनूं आपरै काम-काज मांय जुट जावै।

० ०

फैसलो

मीठालाल खत्री

हफ्तै भर सूं बाई म्हारै लारै लागोडी है। म्हारै इस्कूल सूं घरै आया पछै बा अेक ई बात री रट लगावती मनै पूछै — थैं कांई तय करियो, मीना ?

मैं हाल तांई बाई नै हां-ना रो पडूतर कोनी दियो। पण इण तरै कितरा दिनां तांई बाई नै पडूतर नी देवूंला ? अेकर तो कैवणो ई पड़ैला ! पण बाई रै मगज में आ बात क्यूं नी आवती कै जिका पैली साव नट्‌या हा; टीवी-फ्रिज री मांग करता हा; अबै उणां नै साव फोकट में म्हारै सूं ब्याव करण री कैंधी कांई सूझी ? हफ्तै पैली जोधपुर सूं उणां रो कागद बाई माथै आयो। बाई रै हरख रो की पार ई कोनी, जाणै आंधै नै आंख्यां मिळगी ! पण बाई बात समझी क्यूं नी कै हाथी रै दोय तरै रा दांत हुया करै। जिकां दांत बारै दीख रैया है, वैडा रा वैडा दांत मांय थोड़ा ई है ? ऊपर सूं आदमी कितरो ई टीम-टाम फिरै, सेवट उण रै घट री तो ऊपरवाळो ई जाणै ! मनै तो अचम्भो हुवै कै जिका पहली टीवी-फ्रिज तकात री बात करता हा, अबै साव फूं-फूं-कन्या री बात माथै आय'र कीकर ऊभग्या है ?

आज सनीवार है। काले अदीतवार तांई बाई नै पडूतर देवणो ई पड़ैला। खाट माथै सूती, म्हारै दिमाग में आ ई ज बात रैय-रैय नै आवै ही कै बाई नै कांई कैवूं ? बापा बैठा हा, जद तांई तो वां लोगां री इच्छा म्हारै सूं रिस्तो करण री नी ही ! वै साव ई नट ग्या हा — छोरो कंवणै में कोनी ! तो ई बापा जोधपुर रा दो-तीन आंटा मार्‌या तो बात टीवी-फ्रिज माथै आयनै कांच ज्यूं टूटगी। बापा रो मन जाणै टूटपोड़ो कांच हो, बिखर ग्यो। म्हारै सगपण सारू बापा घणी उठक-बैठक करी, वां री तो कमर टूटगी। अेवट म्हारै सगपण री बात मन में लियां ई जाता रैया। आखी ऊमर टाबरां नै भणावता, की नी कर सक्या। अेक प्लॉट मोल लेय राख्यो हो। उण पर तीन चार कमरिया बणावण सारू सरकार सूं लोन भी लेवता, पण वां

नै तो म्हारी चिन्ता ले डूबी। म्यान बाई रै भाग में अबै सुहाग लिख्योड़ो नी हो।

बापा कोई गया, बाई री अर म्हारी सगळी इंच्छावां पर पाणी ढुळग्यो। बापा रै पेसन केस खातर मैं दफ्तर रा केई बार आंटा मारया तो सालभर रै मांय-मांय बापा री पेमन नेम-मुजब बाई नैं मिलणी सुरू हुई। जे म्हारी ठौड़ कोई छोरो हुवतो तो बाबूलोग की लियां बिना केस पूरो करण रो नांव ई नी लेवता। आ तो मैं छोरी ही के नूंवैं-नूंवैं बाबुवां सूं बात करतो तो वै घणा खुस हुवता। कदा-कदास म्हारी साड़ी रो प लो बाबू री मेज माथै लैरका लेवतो तो कदैई म्हारी आंख्यां बाबू री आं यां सूं मिल जावती तो वो घणो खुस नजर आवतो। उण वेळा मैं की मुळक जावती। बाबू समझतो छोरी गजब री है! काम पूरो हुवण रो मनैं पूरो विसवास हुय जावतो। कदी-कदास वै म्हारै सूं मसखरी ई कर लेवता तो मैं कैंयो नी लेवती। क्यूं कै मैं आछी तरै जाणूं कै इण तरै री बातां हुवण सूं फरक तो की पड़ै कोनी।

इण पेंसन-केस री वजै सूं केई बाबू-लोगां सूं म्हारी ओळखाण हुयगी। बै रस्तै चालता मनैं देख'र मुळकता तो मैं ई मुळक लेवती। बी. ए. तो कर ग्योड़ी ही। बी. ऍड मा फारम भर दियो। भगवान अर बाबू लोगां री दया सूं पास हुवतै ई म्हारै कस्बै री इस्कूल में ई नौकरी लागगी। आज म्हारा बापा हुवता तो बै हरख सूं गैला हुय जावता।

मनैं नौकरी करतां बारै महीना ई पूरा नी हुया कै वो ही मदन, जिको पैली बापा नैं नाय नटग्यो हो, आज म्हारै घरै बाई ऊपर कागद लिखै है कै म्है सीता सूं रिस्तो जोड़णनै त्यार हां! म्हानै की कोनी चाईजै, बाई चोखी चाईजै। तुण हुवैला तो सैंग हुय जावैला! म्हे कूं-कूं-कन्या सूं ई राजी हां।

बाई रै मनैं ई मांचै माथै सूती मैं आ बात समझ नी सकूं कै अबै उण लोगां नैं म्हामें कांई दीखग्यो? पैली कांई नी हो? मैं तो जिको पैलां ही, बा री बा आज हूं। की फरक कोनी। साचाणी की फरक कोनी? आज मैं अेक मास्टरणी हूं! दूजती गाय हूं! दूजती गाय री अवेर कुण नी राखै? मैं आछी तरां जाणूं कै आदर-सत्कार गाय रो कोनी हुवै, ओ आदर-सत्कार हुवै उण रै दूध रो! दूध सूख्यां पछै बापड़ी गाय री कांई गत हुवै, आ किणी सूं छानी कोनी। बापड़ी सीमाड़ै में पड़ी-पड़ी पोतारै दुख-दरद री कथा केवती रोवै!

आज मैं नौकरी माथै हूं। कमावू छोरी हूं। अबै वां मैं दाय आयगी हूं। पैली म्हैंमें गुण नी हा। मास्टरणी बणतां ई जाणै सगळा गुण म्हां मे भेळा हुयग्या है! जद इज तो उणां बाई माथै कागद लिख्यो है। पण पैली म्हारै बापा जीवतां सै मरग्या हा कांई? सगळा अजगर ज्यूं मूंडो फाड्यां बैठा है" जिको ई आवै सो हजम! डकार तक नी! वाह रे मरदां वाह! थां रै खुद रै पगां में गाद कोनी कांई? थां नैं ठा कोनी कै परायी आस सदा निरास हुवै? छेवट पोता रै पगां माथै

ऊभ्यां ई वार पड़ै ! दूजै रो मूंढो देखर'र लाळ टपकायां कांई हुवैला ?

बाई म्हारै मनै ई सोयोड़ी है। दिनूगै उठतां ई मैं उण नै कैय देवूंला कै तू जोधपुरआळां नै 'ना' लिखा दै। भला ई ऊमर भर कुंवारी रैऊं, पण उठै, जठै मिनख रो मोल दौलत सूं आंकीजै, मैं हरगिज नी जावूंला ! पइसो ई उणां री मान-मरजादा है। पइसै सारू वै पोतारी इज्जत-आबरू नै ई अडाणो राख सकै। पछै उणां रै घरै म्हारी सुरक्षा री गारण्टी कांई हुय सकै है ?

मैं अेड़ा-अेड़ा लोग-बाग देख्या है, जिका पोतारै बेटै नै अेक बार नी, दोय-दोय तीन-तीन बार परणावै। आखिर किण खातर ? माया सारू ई तो ओ सारो खेल रचावै। पहलड़ी लुगाई नै किणी तरै मार'नै डायजो हजम कर लेवणो उणां रो धरम है। आयै दिन अखबारां में छापीजै कै फलाणी छोरी किणी रै सागै भागगी ! बापड़ी कांई करती ? डायजो चावणियै लोगां सूं तो लारो छूटो ! ...रोज रो महाभारत तो बन्द हुयो ! कदैई स्टोव फाटण सूं छोरी बळ'र मर जावै है तो कदैई कूवै-बावड़ी में गठो चेप' नै आतमघात करण री खबरां अखबारां में आवती रैवै है। फलाणी छोरी पेट दरद सूं मरगी...फलाणी छोरी धणी सूं लड़'र भागगी ! अै सब कांई है ? मगळा पइसां रा सांग है ! कोई जीव मरणो थोड़ो चावै ! मरतो जीव ई जीवण री आस राखै। मारणवाळै सूं तारणवाळो बत्तो ! नूंवी परण्योड़ी छोरी री मौत रै लारै की लेण-देण रो ई मामलो है, खासकर नै डायजै रो मामलो !

छेवट मैं कितरै दिनां तांई नी परणीजूंला ? एकर तो परणीजणो ई हुवैला ! बाई तो आज है। अेक घड़ी री ई किणी नै ठा कोनी। पण बाई रो साथ इण तरै को छूटैला नी। मैं परणीज'र सासरै जाऊं परी नै बाई खुद रै भाग-भरोसै बैठी रैवै ! ओ म्हारै सूं कोनी हुवैला। मगळी छोर्‌यां बाई नै छोड़'र सासरै जावती हुवैला, पण मैं नी जावूंला...हरगिज नी जाऊंला ! लोग-बाग की ई कैवता रैवैला। मैं कोई उणां रै मूंडै आड़ा हाथ देवण वाळी तो हूं नी ! मूंडो उणां रो है, मन पड़ै सो कैवै !

पण हां, बाई रो काळजो अनस बळतो हुवैला ! म्है सूं अेक छोरी नै ई को परणाईजी नी। बेटी परायो धन हुवै, परायै घरै गयां ई पार पडैला। पण बाई ओ क्यूं भूल री है कै डोकरपणै में उणरो सहारो कुण हुवैला ? मैं तो परायै घरै परी जाऊंला, बाई रो कुछ हुवैला, जिको उण री दवा-दारू करावैला ? भाई हुवतो तो फिकर नी रैवती। बाई रै वास्तै तो मैं ई बेटो हूं। उण रै डोकरपणै री लाठी हूं।

पण बाई म्हारी बात नी मानैला। बा म्हारै ब्याव सारू ई बळबळो देवैला। छेवट मा रो हियो है। मनै ब्याव तो करणो ई हुवैला। पण जोधपुर खातर तो ना ई है। क्यूं कै वै पइसां रा लोभी है उणां नै म्है सूं बेसी म्हारी नोकरी दाय आयी है। मैं बां रै घरै नी जावूंला।

दिनूगै सूरज उगतां ई मैं बाई रै सवाल रो पडूतर ई देय देवूंला अर कैवूंला कै बाई, म्हारै ब्याव रो तो स्वयंवर रचणो पड़ैला। इण स्वयंवर खातर किणी नै शिवजी रो धनुष कोनी तोड़णो पडै। इण स्वयंवर में दो वातां खास रैवैला। अेक आ कै जिको मिनख म्हारी नौकरी री बिलकुल ई परवाह नी करतां थकां म्हारो भर-भार सांभण री हिम्मत राखै, अर दूजी बात आ कै ब्याव रै पछै बाई नै म्हारै सागै राखणो सहन कर सकै; उण रै गळै में ई सीता री वरमाळा सोभैला! म्हारी बाई री सेवा म्हारै सासू-सुसरै रै बरोबर री ई हुवैला। नींतर की बात कोनीं। पेट री भूख तो मिट ई री है! आ ही ज पहली भूख है। दूजी सगळी भूखां पेट री भूख रै सामी ओछी है।

० ०

टैक्सी स्टैण्ड

पुष्पलता कश्यप

अनिरुद्ध आपरो बिगड़यो स्कूटर मैकेनिक सूं सावळ कराय रैयो है।

की ताळ पछै अेक थ्री-व्हीलर वठै आयनै ढबै। लारली सीट माथै दोय जणां बैठ्या है। ड्राइवर मैकेनिक नै बुलाय नै लेय जावै। अेक जणो खायौ-खायौ, उतावळै सुर में बोलतो रैवै। दूजोड़े री आवाज ई बिचाळै सुणीजै। दोनूं रै मूंडे में मोकळी दारू पड़ी लखावै। स्यात उधार रो मामलो है। मैकेनिक अळवत नरमाई सूं बोलै। बैगो चुकारो करण री बात कैवै। बो मिनख बोलै - 'म्हनै आज ई जोइजै। बल्कि अबार देय दे।'...छेवट मैकेनिक कैवै ...'ठीक है, सिझ्या तांई बंदोबस्त कर देवूंला। खायनै मरै तो कोनी। लारलै दिनां मांदो रैयगो। गैरज ई बन्द हो, नीतर कुणसी मोटी रकम है!' पछै टैक्सी गयी परी।

मैकेनिक रै बावड्यां बी रो साथी बूझै—'निसारियो कांई कैवतो हो?'.

'अरे यार, इण सूं दोय सौ रिपिया लिया हा। म्हैं कैयो, दोय-अेक दिनां में देय देवूंला। पण कैवै हो, पइसा अबार-रा-अबार काढ! दारू में टच हो साळो।''

'बोळो धनासेठ बण रैयो है!'

'अठी कोई नूंवों चालू मामलो है कांई?' अनिरुद्ध उण सूं यूं ई बूझ लेवै।

'घणी ई है बाबूसाब!' वो अेक सूगली मुळक सागै कैवै।

'स्कूल रै पाखती गळी में जिकी दोय है—बांरो तो म्हनै बेरो है। रावणां जात सूं है। बां रै अलावा ई कोई है कांई?'

मैकेनिक अर बी रो चेलो अेक-दूजै कांनी भेदभरी मुळक सागै जोवै।

'हां, अठी अेक नूंवो ठिकाणो भळै बणग्यो है। पच्चीसेक बरसां री। दोय साल हुया मरद चालतो रैयो। सुणां, क्लेक्टरी में बाबू हो।' मैकेनिक सावचेती सूं

अठी-उठी जोयनै भांपतो सो कैवै।

'रोटी रै सागै जिस्म री तलब ई लागै। इण रै वास्तै दोनूं रो सवाल सामी है। उमर रो तकाजो ई हुवै वाबूजी !' मैकेनिक रो संगी कैवै।

अनिरुद्ध नै जिकी जाणकारी मिळी अर ठिकाणै रो ठा पड़ै, उण सूं वी री धड़कणां अचाणचक वधती जावै। वो ऊंडै गतागम में पज जावै। वीं नै विचार में पड्यां लखनै मैकेनिक रो संगी आपरी सागी रहस्यमयी मुळक लियां होळै सी'क वोलयो—'कांई वाबू ? इरादो वण रैयो है !'

'अऽऽ, भई देख लेवांला, इणनै ई ! नूंवी-नूंवी धन्धै मायं वैठी है, मामलो कां सोंतरो ई हुवैला, क्यूं ?'

'अवै, म्हे तो किया-कांई कैवां ! वो निगारियो ई दलाली करै।' मैकेनिक कैयो।

'अवै वावूजी, घर में मामलो चालै। सैक्यूं लुकै-छिपै, भीत सावचेती सूं ई करणो पड़ै। आवरू-शराफत ओढनै ई।' मैकेनिक रो वैलो स्थिति समझाई।

'वो कठै लाधैला !'

'कुण ! निगारियो ? अठी सामी दारू रै अड्डै मायं। साळो दल्लो ! मोटो सेठ वणयो घूमै है।' मैकेनिक आपरी आंट काढी।

'थे अठै ई आय जाया वावू ! रिक्शा रा अठी टेम्पू स्टैण्ड मायं ई लाधै।'

अनिरुद्ध नै पूरो-पूरो शक हुय रैयो हो, कठैई आ वी रै वी रिश्तेदार री घर-वाळी ई नी है ! दोय साल पैलां वां री अचाणचक मौत हुयगी ही। हार्टफेल हुयो हो। सरकारू नौकरी मायं हा। आपरै लारै जवान-जहान लुगाई अर दोय नान्हा-नान्हा अवोध टावरिया छोड़गा। मकान सरकारू लोन सूं हाल ई में वणायो हो। थोड़ी ई किस्तां दीरीजी ही। नौकरी सूं जिको पइसो मिलणो हो उण सूं मकान-ऋण री कटौती हुयां पछै नाममात्र री राशि देय ही। विधवा मामी आधी जिन्दगाणी पडी ही अर टावरां री जिम्मेदारी ही सो न्यारी।

सरकारी कायदे मुजव कुटुम्ब रै किणी अेक सदस्य नै नौकरी मिळ सकै ही। वा भणी-गुणी आप कोनी। महज पांचवीं पास है। पीहरो गांव में है। वां रै अठै टावरियां नै पढावणै री जरूत नी समझिजै, अर नी इणरो रिवाज—जिको हाथ देख नै लेय जावो, मतैई लिजावसी ! वां री निगै में लुगाई जात मारू घर-गृहस्थी अर टावरां रो ई ज भार है। वारै री दुनिया मरदां री है।

मोगर अर दूजा करमकांडां री वात आई। भणियां-गुणियां प्रगतिशील ओग विरोध कियो-अेड़ी कावो मौत में जो रो नी हुवणो जोइजे। इणां कामां में जिको पइसो खरच हुवैला, वो इणां रै आडै वगत रो सहारो-सवल वण सकै !...पण लकीर रा फकीर दकियानूसो लोग आपरी जिद मायं कायम हा, अंगाई नी मानी।

स्याणां-समझदार लोग विधवा नै नौकरी कर लेवण री सलाह दीवी—आखी उमर मुंडै आगै है, अर जिम्मेदारियां रो सवाल सामी है। कोई अेक दिन री तो बात आय कोनी। सगळै मिट्टी रा चूल्हा है। आज रै स्वारथजुग मे घर सूं घर नी चाल्या करै, आगो कीकर विकसी! नौकरी मिळ रैयी है, पछै हाथ आये अवसर नै गंवाय नै की रै ई आसरै गुजर करण री क्यूं सोचणी। क्यूं नी खुद रै पाण इज्जत री बसर कीवी जावै? पण, अठै ई पोंगापंथी-पुरातनपंथी आड़े आयगा —"आ कदेई घर सूं बारै नी निकळी। आदमी कठैई आण-जाण नी दीवी। अत्रै मरदां बीचाळै आ चपरासीगीरी कियां करैली? म्हारै अठै आज तांई अेड़ो कदेई नी हुयो! देवर-जेठ, अर पीहरै में सै है, गुजारो हुय जासी।'

आज स्वारथ है, तो रिश्ता है। कोई किणी रो नी हुवै तो कांई स्थिति अठै तांई पूगगी?···अनिरुद्ध घणो ऊंडी बात विचारण लागो।

सिक्खया रा बो गैरज जावै परो। मिस्त्री रो सहायक बी नै निसार सूं मिळवाय देवै—'ओ नै र ऽऽ सूं रामी चाहिजै!' अर बो दांत फाडनै लागै।

"अर थनै र ऽऽ सूं रम, क्यूं!" अेक तगडो धौल उणरी मगरां माथै जमावतो निसारियो बीयां ई हंसै लागै। पछै अनिरुद्ध सूं बोल-बतलावण हुवै।

निसार मिस्त्री रै सहायक नै दारू पायनै राजी करै। जब्बार भाई, जब्बार भाई! कैवन्तो बी रै बांथ्यां घाल्यां, झूलतो सो बातां करबो करै।

जब्बार टैक्सी मे बी रै पसवाडै बैठे। निसार ड्राइवर रै सागै आगै बैठे।

अनिरुद्ध नै जिण बात रो डर हो बा ई ज बात हुवै। टैक्सी आशका वाळै मकान रै बारणै जायनै ऊभी हुवै। पछै ई अनिरुद्ध तसल्ली सारू पूछ लेवै—'कुण सो मकान?'

जब्बार बतावै—'ओ ई ज है!'

अनिरुद्ध नै आस ही, स्यात अेन वगत ई मकान बदळ जावै। पण, अेडो की नी हुयो। ईश्वर अर 'काश' उणरी अगाई मदद नीं कीवी।

अनिरुद्ध निसार नै टैक्सी सूं उतरतां नै बरजतां कैवै—'ओ तो उण रो मकान है! जाणद्यो!!'

निसार कैवै—'थे इण रै खातर ई नी कैयो हो कांई?'

जब्बार बिचाळै बोल पड़ै—'बाबूजी नै स्यात किसी री उम्मीद हुवैला!' अर विद्रूपता सूं दांत काढ़ै लागै।

अनिरुद्ध निसार नै रिपिया सूंपतां ड्राइवर सूं कैवै—'टैक्सी पाछी स्टैण्ड माथै लेयले!'

○ ○

पारखी

महावीरप्रसाद पंवार

आज भंवरो घणो उणमणो हो। मुंडै काळमस छायोडी ही अर थकेलो इस्यो पडयो कै उठणै री ही आसग ही नी। आ वात नी ही कै उणरी जिनगानी मे कणाई कोई सकट नी आयो, बण तो ज.म ही सकटा मे अर तकलीफां मे लियो हो। इतणै वरसां री जिनगानी मे फोडा घणां नै, सुख का छिण कम ही आया हा पण आज री दाई उण रै मुंडै काळमस कणाई नी छाई। उण हिम्मत कदेई नी हारी ही। सदां अलमस्त रैयो, आत्मवि.वास सूं भरयो पण रैयो हो।

पण आज जद तीजी बार पंचायत समिति भवन रो उद्घाटन टळयो उण रा पडपाता सा बैठ्या हा। न्यूं लखायो जाणै उण रो अपमान करण खातर ही ज उद्घ.टन टाळयो गयो हो। दो बार उद्घाटन टळयो जद ताणी तो बो सोचतो रैयो कै जोग सजोग नी बैठ्या हा पण इमकै उणनै दाळ मे काळो निजर आवै लाग्यो। लोग नी चावै कै उण रै कार्यकाळ मे इण भवन रो उद्घाटन हुवै अर सगमरमर रै पत्थर माथै उणरो नाव पण आवै।

बो सोचण ला यो कै हे भंवरिया तूं किती दौड-धूप करी कै उद्घाटन टैम सर हो जावै। समिति रो एक काम नक्की हो जावै। कर्मचारियां री परेशानी खतम हुज्या अर मकान भाडो नी लागै। समिति नै आर्थिक फायदो हुज्या पण सोची किण री हुवै ? विचारां मे उळझ गयो भंवरो। आज ताईं वो 'काम' नै घणो महत्व देतो, मान-सम्मान रो कम ध्यान पण राखतो। पण जद सूं तीजी बार उद्घाटण टळयो उणनै ला यो कै प्रधानी अर राजनीतिक भविष्य दोनूं सकट मे आग्या। प्रधानी तो खैर है ई कितीक दो मीनां और घटै उण रै कार्यकाल रा। स्यात् लोग दो मीनां और टाळणो चावै इण काम नै। उण नै लारलै कई दिनां सूं इयां लखावै हो पण बो इण नै आपरै मन रो वैम मानतो रैयो। छेकड़ उण लगां री गोट्यां ही फिट बैठी नै

भंवरे रै हाथ सूं डोर निकळगी नै चरखी पकड़ेड़ी रेयगी।

वो सोचण लाग्यो मिनिस्टर इतणो भरोसो दिरायो हो पण आज किण री जुबान पर सांच ठंरयो है ? वण मिनिस्टर नै साफ कैय दियो हो कै दो बार किणी कारणां सूं सजोग नीं बैठ्यो है, इणकै आपरै हाथां ओ भलो काम अंजाम मांगै। मिनिस्टर हंसतां थकां कैवण लाग्या हा—जात पांत अर ऊंच नीच री पार्टी में कोई जग्या नीं है। कार्य री महत्ता देखिजै। थे निरमै रो, हूं सागी टैम पूग जास्यूं। भंवरै नै पक्को निमचै होग्यो कै इणकै 'पचायत समिति भवन' रो उद्घाटन थरपीज्योड़ी तारीख मुजब ही हुग्या लो। इणी आशा रै साथै चेहरै पर मुळक लियां वण गांव अर लोगां नै खबर सुणाई ही। उण रै आवणे रै लगो-लग सातवें दिन मिनिस्टर सव रै 'प्रोग्राम' कैंसिल रो टेलिग्राम आ यो हो। आ किसीक हुई ? भंवरै पर तो घड़ां-घड़ां पाणी पड़ ग्यो। अब परतख नै परमाण री जरुरत नी रैयगी ही। कोनी कणियां मे सूं कटगी हो। उणरै हाड-हाड जचगी कै लोग सारै पड़पोड़ा है।

जिनगाणी री घटनावां अेक-अेक कर उण रै सामै घूमण लागगी। सारै लागण रो सिलसिलो तो उण रै ज म रै साथै ई सुरु हु यो हो। बापू कैवता—"कै लाडी भंवरा ! तूं जन्म्यो उण रै ला म्हारो माऊ साऊ ऊपरो चढने थाळी बजावती ही कै उणी वेला ठाकर कुमानसिंह जी उनै की गुजरता हा तो थाळी रो खुड़को सुण'र रीसाण हु या। अर ठमता-सा दकाल मारी ही – अे रडार क्यूं रोळो करै किस्यो ना'र जाम लियो।" मां ठाकरां नै नाराज नी करणो चावती ही सो चुपकै सीक हेठै उतर परी खुड्डी भांय बड़गी। का तो घर मे रापा-रोळो माचरयो हो अर का स्यापो सो पडग्यो। आ तो ही घर में सुणी-सुणाई बात पण जद सै भंवरो समझ पकडी ही उणनै याद ही कै अकरस्यां जद वो चोथी में भणया करतो हो जद हड़मान बामण रो बेटो राजियो दिनगै-दिनगै रोई मे गाय घाल'र आवती वेळा उण रै घर रुक जावतो, पढाई-लिखाई री वातां करतो वो सुलेख री धणी बड़ाई करतो। कनै उठतां-बैठतां भायला-चाकरी बढगी तो हूं भी उणरै घरै आवण-जावण लागग्यो। अेकरस्यां उणरो बाप हड़मान पूछ लियो के छोरा तूं किण रो है रे ? बापू रो नाव सुणताई उण री आंख्यां लाल पण हुगी म्हानै दकालतो थकां कैयो—राजूडै रै सागै घरां किण नै पूछ'र आयो। हूं सैग-बैग हुग्यो। राजूडो तो रोज म्हारै घरै आवै हूं तो आज ही'ज इणरै कैवण रै कारण आयो हूं। तो इण में इती नाराजगी कीकर ?

दूजै दिन नी राजूड़ो गाय घाल'र आवती वेला घरै ठम्यो और नो ही म्हारै सूं स्कूल में ज्यादा बात करी। ठां नी अेक दकाल मे ही कठै चली गई सगळी भायला-चारी। राजू म्हांसूं दूर-दुर छिर-छिर करण लागग्यो हो। उण रै मन मे जात-पांत रो अजगर फुंकारा मारण लाग्यो अर छोरा-मोटा सपळोटिया म्हारै भी मन में कुचमाद करणी शुरु कर दी। म्हानै उण दिन सै सूं पैली लखायो कै आपां किणी

नीची जात रा वजों। हेंन्या सूं नीची साळ अर खुड्डी ताई नीची जात रा वजों। निवळा नैं हीण वजों अछूत वजों।

भँवरे नैं आपरी जवानी रा वै दिन भी याद आवण लाग्या जद देश में आजादी वास्तै बापू जोर में कोशिश कर रैया हा। च्यारूं मेर 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' री गूंज ही। उणी दिनां कई उत्साही साथ्यां रै कैवणै स्यूं अेक प्याऊ गाँव रै सारै कर रात-दिन वैवतै गेलै ऊपरो लगाई ही। गिरजी पर पाणी प्याण नैं लिछिये भंगी नैं वैठायो होतो गाँव में ईंनी आसै-पासै के सँग गाँवा मांय रोळो माच ग्यो हो। लोग उणांनैं पूछण हुक्या कै थानैं प्याऊ लगार म्हारो धर्म भ्रष्ट करणै रो काँई अधिकार है? जणां हूँ अेकही उत्तर दीन्यो हो सगळी जातां रा लोग आपरै आगलै जल्म रो गैलो भुवारै तो म्हे ईं क्यूं नी म्हारो धर्मकरां? लिछियै भगी रै हाथ सूं पाणी पियांकिणी रो धर्म बिगड़ै तो पाणी पीवो मतां। पाणी पीवां लिछियै भगी अर प्याऊ लगावण वाळो रो धर्म तो बढ़ै, बो आपरो धर्म बढाण नैं पाणी प्यावै थारो धर्म घटावण नैं नी। उण नैं याद है लोग रात नैं मटकी फोड़ न्याता, घड़ा जुड़ा ज्याता। अेकरस्यां तो प्याऊ रै ई तूळी लगा न्या। पण उण दिनां हवा में गांधी री गूंज ही अर ही म्हां मैं जोश री धधकती ज्वाला। अपमान री आग। जिण रै सैयोग सूं म्हे लिनी इण सामाजिक बुराइयां सूं टक्कर।

उणं दिन री घटना तो याद आँवता ही रुगटा खड्या हुज्यावै। जणां ऊँट चढर ज्यावंता बेळा गाव निकळतां तीन च्यार जणां म्हारै बारकी फिराया अर ऊँट री लगाम पकड़ पग रोक लियो हो अर लाठयां सूं कूटणो शुरु कर दीन्यो हो। जे मगळो बाटपाल अर अमरोजाट नी आँवता तो भँवरिया उण दिन खेल खतम ही हो। पण विधना नैं मंजूर आ ही ही कै आज हूँ इती बडी तहसील री पंचायत समिति में प्रधाण वणूं। वा रै किस्मत? क्यूं तो प्रधान रो जिला प्रमुख में जीतणो हुवै अर क्यूं म्हारै हाथ पडै आ प्रधानगिरी?

भँवरो सगळी हकीकत समझग्यो हो कै उण नैं इती राजनीति नी आवै कैं बो इणतरां आपरी गोटी फिट कर परो प्रधान बण ज्यांवतो। आं खेल तो आ चतुर विधना ही रच्यो हो कै लारली साल एक पंच रै चुनाव में हारण वाळो मिनख अबकै चुनाव जीतै अर जीत तो ही ज्यावै अर जिला प्रमुख तक बण ज्यावै अर उण री जग्या म्हा उप प्रधान नैं मिलै प्रधानगिरी। है घण करोक जोग संजोग पण लोग रामझै राजनीत रो 'पारखों'।

विचारां रै भँवर में फँस्योड़ो भँवरो मौजूदा संकट रो निपटारो सोचण लाग्यो। किणस्यूं करावै उद्घाटन कीकर देवै जान पांतरै समर्थकांनैमात? कीकर राखै पारखी री लाज? है कोई गेलो राजनीति में? कीकर राखै बापू रै आदर्शा नैं जीवता? विचारांरै समन्दर में गोता लगांवतो ठेठ वेदां रै तळ ताई जा पूग्यो। पूछण लाग्यो कै वेदां रा रचयिता वेदां री वरणां इणी'ज उद्देश्य सूं करी ही के कै लोग छुआछुत

करैला। समाज अर राष्ट्र को समय अर धन व्यर्थ करैला। उळझावैला नित नूंवा जाळ। धकैलेला देश नै लारै और लारै। झुठलावैला आदर्शां नै। आपरै अहम् री तुष्टी खातर, माड़ै-मोटै स्वार्थ खातर। छेकड़ सोचण लाग्यो, लड़सूं अर लडतो रैस्यूं म्हारी हिम्मत सारू इण बुराइयां सूं। छेकड़ वो तेवड़ली अर करड़ी तेवडली आगले ग्यारह दिनां मे उद्घाटन करवावण री अर उठ यो किणी उद्घाटन कर्ता सूं बात करणनै। दृढ निश्चै रै साथै। गांनो अेकर फेरूं चढग्यो पारस माथै।

जैसलमेर री हवा

गौरीशंकर व्यास

मार'साव भोजाराम एकदम सीधा आदमी, गाँव जिसा गुण, भोळा हिया रा, पेटे पाप नीं, मिनखां री सेवा करता अर आपरै काम धँधा मे मस्त रैवता, न तो किण री हूरी मे अर न हौ किणीरी भरी में। नौकरी करता-करता तीस बरस पूरा करया पण मायो घालण नैं बावरी कोनी अर पईसा-टका तो घर मे भूआजी फिरघोडा। लावै अर खावै, महीना म बीस तारीख माथै तो जेब एकदम खाली।

इतरो होवता थका भी मार'साब रै मन मे जोश। एकण तो फुटबाल री मैच खेलता एक पग रै खोड आयगी अर हमेश रै खातर हाथ मे लकडी रो सहारो लेवणो जरुरी हुँ गियो। शरीर सूं एक पसळी रा पण कोध तो परसुराम सूं ई घणो, दिन-रात घरे अर स्कूल मे चिढता इ रै वै।

मार'साव रै सेवा-निवृति रा दिन नेडा आय गिया। इण सूं विचार करयो कै इतरा दिन तो किराया रा मकान मांय निकाळया पण अबै कठै रैवोला। इण सारु काचो-पाको मकान तो बणावणो जरूरी है। उणो रै गाँव मायने एक छोटो प्लॉट आमोडो सो विचार करयो—जीवड़ा गाँव मायने इज रे'वण मे सार है। उणा आपरो ट्रासफर गाँव मांयनै करावण री सोची, अर आगे कार्यवाही करी। सरकार रा नियम कै सेवा-निवृति रै दो बरस पैला कर्मचारी ने आपरी प्रसन्द रे ठिकाणे लगावणो सो नियम रै कारण मार'साब रो ट्रासफर उणा रे गाँव मांयनै होय ग्यो।

मार'साव जी.पी.एफ अर स्टेट इन्सुरेन्स रा पईसा मकान माथे लगावण रो विचार करयो अर आपरो प्लॉट जिण मांय मिनखो कब्जो कर लियो, खाली करावण री सोची। कब्जा करण आळा सूं वात करी अर हुँ हा गाँव रा ठाकुर रामसिंहजी। मार'साव कहयो तो बोल्याजा रै अठा सूं—आयो है कब्जो मागण

आळो, थारै-जिसा तो कई फिरै, घणो करघो तो हाथ-पग तोड देसूं । मार'साव देख्यो-नकटा मूं आगा भला । अवारै तो कानूनी कार्यवाही कर प्लॉट रो कब्जो करण में सार है । दूजै दिन इ सरपंच सूं बात करी पण सरपंच पक्को दारु खोर, चौईस घण्टा दारू मायने फिट होयोड़ो रै'वै ।

मार'साव सूं कयो—मार'साब नौकरी करणी भारी पड़ जासी, वो दिन आवतो हो या अर प्लांट मायै कब्जो करण री हिम्मत कर रह्या हो । मार'साव बोल्या—साहब मैं तो इण गाँव रो इज हूं, तीस वरस नौकरी करता बिताया अबै मैं म्हारै गाँव मे रै'वणो चावूं । प्लॉट म्हारै वडेरा रो है । सरपंच बोल्या—थे चुपचाप जावो परा क्यू कुत्ता री मौत मर रह्या हो, अठै तो कोई फरक कोनी पड़ै पण थारै खावण रो फाका पड़सी । आ जमीन पचायत ठाकुर रामसिहजी नैं वेची है जिण री पट्टो अठै मौजूद है ।

मार'साव सोच्यो – जोवड़ा म्हारी प्लॉट अर पचायत वेच दियो आ बात किकण हो सकै । घरे आयनै घरवाळी सू बात करी वा बोली थें गैला हूं गिया काई सरपंच सू टक्कर लेवो, सरपंच रै उपर भी नो बैठा है, कोशिश करो, जीत हु वेला ।

मार'साव कह्यो—मगळा रा पेट पाणी है, उपर वाळा तो वाको फाडनै बैठा है पइसा बिना बात इ कुण करे ।

मार'साव सरपंच रै खिलाफ लिखा-पढी करी तो सरपच नाराज व्है गियो अर एम.एल.ए. नूं कह्यो कै इण मास्टर नैं अठा सू हटाओ ।

नेता लोगों रे कान व्है पण भान नी, सो कह्यो—ठीक है सात दिन माय ओर्डर हो जासी ।

एक दिन मार'साव स्कूल सू आय नै बैठा इज, जितरा में तो पोस्टमेन आयो । मार'साव उणरे हाथ मे खाकी लिफाफो देख्यो तो डबको चढ्यो, प्रेषक री मोहर देखी तो सचिवालय, जयपुर, मार'साव रा हाथ धूजण लागा, लिफाफो खोल्यो तो शिकायत मायै ट्रासफर अर व्हो भी जैसलमेर ।

मार'साव री आँख्या रै आगै अंधारी आयगी अर अचेत होयनै धडाम सूं फर्श मायै पड्या । धडाम री आवाज होवता उणोरी घरवाळी दौडती थकी आई अर बोली—काई व्है गियो ।

ठन्डो पाणी छाट्यो तो आंख्या खोली । बोल्या—जैसलमेर रो आर्डर आयो है । वा बोली क्यू । सरपंच नाराज होवण सू उणरी घरवाळी कह्यो थे तो केवता कै दो साल पैला आपरै गाँव मायनै लगावण रो नियम है अर थानै तो लगायो वाद हटाया है ।

मार'साब कह्यो—पण किण ने केवूं, कुण सुणे ।

कोशिश करो अर लिखापढी करो, यू अचेत होवण सू तो काई होसी ।

मार'राज बोल्या—म्हनै तो ओ दुख दीसै के जैसलमेर री हवा बुढापा मांय खावणी पड़सी।

उणां री घरवाळी बोली—थारै मन में है तो आ भी देख लो अर म्हारी जैसलमेर री तैयारी।

दूजै दिन ई मार'राज बोरी-बिस्तर बांध अर जैसलमेर खातर व्है गिया।

गांव रा मिनख विचार करण लागा के आ कांई बात। आया अर वेगा जावता ई दिखग्या।

०○

लघु कथावाँ

उदयवीर शर्मा

[1]

दिवलो आपरै पूरै जोग सूं जगमगाहट करै हो अर पतगा आय र वीं री लौ में पड़ै हा, बळै हा, जीवण होमै हा। दिवले रै भांवै ही कोनी कै कुण पडै है अर कुण बळै है। दूणो-दूणो जगमगै। जणा एक नुई पैमनियो पतंगा नै कयो, पतगो, दिवलो तो आपरो अस्तित्व राखण तांई बळै पण थे थारै अस्तित्व नै मेटण तांणी क्यूं बळो? यो काई प्रेम होयो?"

पतगो मांय सूं एक स्याणो पतंगो पडूत्तर दियो, "या म्हारै बडकां री बतायोड़ी सीख है। बडकां री रीत पाळो हा। रीत सूं टळणो जीवत मरणो है।"

या सुणतो ई वो नुई फैसानयो बोल्यो, "भाया, गैलो है तू। इब सै आजाद है। तन्नै वेरो कोनी कांई? वड़का री पुराणी रिवाजां छोड़ो। इब मरणै री दरकार कोनी।"

[2]

हरसनाथ भैरूं रा दरसण करण तांई पहाड पै चढता जारया हा। साथ में पुजारीजी भी हा। मारग मे सडक रै नेड़ै टेडा-मेढा रच्योड़ा भाठा रा घर कूंडिया बण्योड़ा पडया हा। वा नै देखर मन मे विचार आवणा सरु होया। पूछणै पै पुजारी जी बोल्या, "आणिया-जाणिया जातरी आगले जलम मे घणा सोवणा फूटरा अर ओपता घर पावण री अभिलाखा मे ये घर बणार जावै। भगवान वां री आस पूरै लो। यो भगतां रो बिसवास है।"

मेरै भी बात जंचगी। लोभ जाग्यायो। मै भी दूर जा र एक टेकडी पै चोखो अर मोतरो घर बणावण लाग्यो। सांचल मोदरा हिलोर मन में आवं लागा।

भविष्य री कल्पना में गोता खावै लागा। आंख्यां रै सामी हरख नाचै लागो। थोड़ी देर में आंख्यां सामी अचाणक सैंचण होयो अर इत तक मकान वणा र गयोड़ा जातियां री आतमावां मेरै सामी ऊभी होयगी। मैं घबरायो।

वै आतमावां एकर साथै बोली, "अरै भोळा कांई अळगो मकान चिणै रै। तेरै स्यारसा घणा ही मकान चिण चिण आगै चल्या गया है। वां री कांई गत हुई, कुण बतावै ? तू तो सुगरथ कर। धरती पै चाल। आपरी भुजावां री आस राख। कांई पडयो है, झूंठा-माठा भेळा करण में। म्हे ई पिसतावां हां। म्हारी करणी पै।"

एक झटको सो लाग्यो अर च्यानणो हटगो। मेरै नेड़ै पुजारीजी ऊभा हा।

[3]

मन्दिर में भगवान री मूरत कै सामी भगत बैठयो। दिवलो दीपै। दिवलै री जोत में भगवान रो रूप घणो ओपै, गैणा भळाकै, पोसाक परकास में घणी झिल-मिलाट करै। भगत भगवान में ध्यान धरयां थिर भाव सूं विराजमान।

थोड़ी देर पाछै भगत रो ध्यान टूटयो। चान्नै मेर अंधेर घुप्प। दिवलो विसराम करै, पुजारी आप रै ठौर धर्यां लागरयो। भगत नै अंधकार में भी भगवान री मूरत घणी भळभळाती दीसी। भगत री आतमा खिलगी, भगती रस में गोता खांवतो भगत आतम विभोर होयगो। परमातमा आतमा रै नेड़ै आयगो। इमरत री बरखा होवै लागी।

दूजी छिण भगत री भौतिक भावना जागी तो वो ई अंधेर घुप्प, भगवान री मूरत भी अंधकार में लोप होयगी। भगत घबरायो, पसीना आयगा, बठा सूं भाग्यो अर सीधो गुरु चरणां में आय बैठयो।

गुरुजी भगत नै हुयै दरसाव री सारी कथा सुणर बोल्या, "भगत, शुद्ध आतमा नै सांचै देव रा दरसण हुवै अर सांसारिक चेतना आग्यां फेर अन्धकार ई पल्लै पड़ै। तू साधना राख सफलता मिळसी।"

[4]

रोही में सेठां री गायां चरती-चरती दोपारी रो ताव सूं बचणै ताणी आप आप री मोज में आर रूखां तळै बैठी उगाळै। वां रो गुवाळ भी एक जाळ रै झुरमुट में बैठयो मोद मनावै, दोपारी टाळै।

ओर गुवाळिया भी खेलता कूदता वठी नै आ निकळया। एक गैरो रमझोळ हुयगो।

अथाई करतां-करतां एक गुवाळ एक गाय कानी देखकर पूछ बैठयो, "गाय

माता, तू मोटी ताजा हुयरी है, तन्ने चोखो खाणो-दाणो मिलै फेर भी आंखड़ली आंसुवां सूं तर क्यूं ?"

गाय बोली, "मैं तो दुनिया रै ओछैपण नै देखकर रोऊं। या सुवारथी दुनिया कइया चालसी। इण नै आप आपरो ई दीखै। काळ सूं नै खारयो है। ढांडा मरया जारया है। फेर भी दुनिया आपरो पेट मोटो करणै में लागरी है। चील-कावळा धापग्या पण मिनख को धाप्योनी।"

नेह रा द्वीपां री खोज

उषा किरण जैन

14 अप्रैल 88· घणां दिनां सूं लिखणूं चाह कर भी नीं लिख सकी। मनड़ो टूट्यो टूट्यो अर बिखर्‌यो बिखर्‌यो सो लाग रियो है। सोचूं हूँ सबदां रा माध्यम सूं मन री टूटण नै उतार द्यूं कागद पर। लेखनी री डोर सूं सबदां नैं बांधूं पण नी जाणै कांई बात है कै लेखनी अर सबद दोन्यू ही भिसणता चल्या जावै है।

15 अप्रैल 88 जीवण री धारा रो प्रवाह अबार तक जिण द्वीपां रै नैड़ा सूं गुजर्‌यो है जाणैं क्यू वै सारा रा सारा द्वीप दु:ख पीड़ा अर तपण रा ही रह्या है। कदे कदै जीवण री धारा में औ अंतरा घणा हो गया कै सारा विस्वास डगमगावा लाग गिया, सारी आस्था झकोळा खांण लागी। मन विचलण रा भंवर मैं गोता खांण लाग्यो फेर भी आसा रो दामण नी छोड्यो अर लगातार खोज रैया हूँ विस्वास, आस्था, नेह अर आत्मीयता रा द्वीप।

21 अप्रैल 88 : आपणां समाज मैं आये दिन नारी रो शोषण, पीड़ा अर सन्त्रास री वाता सुणवां नैं मिळै, अर आं सबळी वाता वास्ते पुरुष वर्ग नैं जिम्मेवार ठहरायो जावै है पण म्हारी मानता है कै नारी ई नारी रो शोषण करै। आ मानता काल और घणी पक्की हुयगी जद बेरो चाल्यो कै कम दायजा रै कारण बांकी सासू ही बीनै जळार मार दीनी।

25 अप्रैल 88 : कालै इस्कूल में पढ़ाती वखत अचाणचक अतीत रा कई मार्मिक चितराम सामैं आणल ग्या अर मैं अस्यानैं वखत अर वातावरण री परिधि सूं दूर वां मैं डूबण लागी। जाणैं कदे म्हानैं के होण लागै है को बैठ्या बैठ्या कोई भी काम करतां वखत अचाणचक अतीत में डूबण लाग जावूं। म्हानैं लागै है कै अतीत रा अै चितराम म्हाकी सोच नै सकड़ा दायरा में बैठा कर देवै है। ० ०

बदलाव

छन्द राव जैतसी रो

☐ चन्द्रदान चारण

राजस्थानी में वीर-काव्य रा घणा ग्रन्थ है। आ गौरव ग्रन्थां में एक बीठू सूजा रो 'छन्द राव जैतसी रो' है जको राजस्थानी री एक महताऊ रचना है। यूं तो इयै नाव री एक अणजाण कवि री रचना भी मिळै है पण दोन्यां रो विषय अर घणकरो वरणन समान है। आं दोन्यां में ज्यादा महताऊ बीठू सूजा री पोथी मानीजै।

इयै ग्रन्थ री रचना संवत् 1591-1598 रै बीच कोई टेम होयी, आ मानीजै। इयै में कुल 401 छन्द है जका में 385 पायड़ी, 11 गाहा, 4 दूहा अर 1 कळस है। ग्रन्थ रो नाव 'छन्द राव जैतसी रो' है पण इयै में बीकानेर रा नरेस जैतसी रो ही एकलां रो वरणन कोनी। कवि जैतसी रै वरणन सूं पैली उणा रा बडेरा—चूंडो, रणमल, जोधो, बीको अर लूणकरण रो भी वरणन कर्‌यो है। डिंगळ रै वीर काव्या मे एक पद्धति आ रैयी है कै काव्य रै चरित-नायक सूं पैली उण रै बडेरां रो भी बखाण कर्‌यो जावै। चूंडै सूं लूणकरण तांई रो वरणन तो थोड़ै में ही है पण ओ उणां रो वीर चरित्र पूरो उजागर करै। पोथी रो नांव 'छन्द राव जैतसी रो' इयै वास्तै राखीज्यो है कै इयै री खास घटना राव जैतसी अर मुगल बादस्या बाबर रै छोटै बेटै कामरां री लड़ाई अर जैतसी रै हाथां कामरां री हार है।

काव्य री कथा राव चूंडै सूं सरू होवै। चूंडो, रणमल, जोधो, बीको अर लूणकरण कियां लड़तां लड़तां आप रो राज बढायो अर मोको आयां साचै राजपूत दाई राजी राजी लड़ाई मे ज्यान दे दी। इयै रै बखाण करणै रै बाद कामरां रै हमलै रो जिकर है। बाबर रै मरणै रै बाद कामरां नै लाहौर अर कनै रो इलाको मिल्यो। बीकानेर रो सुतंतर राज कामरां री आंख्यां में कांटै दाई चुभण लाग्यो। बो फौज ले'र पैली बीकानेर राज रै भटनेर रै गढ पर हमलो कर्‌यो। मुगलां री

फौज भोत बड़ी अर ताकतवर ही। कवि इयै खासती फौज रो वरणन इयै भोत कर्‌यो है :—

किय हुक्ळ चंचल कलल, गय शंबक गडबक।
दरस्यौ सरि सुरिताण दल, चल चल च्यारे चयक॥
दल सुरिताण जीण डूंगरि दब,
कंपी धरा हुइ प्रज सवकव।
अह सुरिताण आवियो अवयरि,
करन तणा ऊठिय गज केसरि॥

भटनेर रो किलैदार खेतसी कायस हो। बो मुकाबलो कर्‌यो पण इत्ती बड़ी मुगल फौज नै कियां रोकतो। बो जद किलै नै तहस-नहस होतो देख्यो तो गळै में तुलसी री माळा लै 'र हाथ में तरवार लें' र बो बैर्‌यां पर टूट पड़्यो अर लड़तो लड़तो वीरगत पायो :—

चढ़िया नीसंरणी चड़ोचोट, काबिली कटके भेळि कोट।
सनान करे साऊ सकार, हीडोलिय तुलसी कंठि हार॥
सुरिताण तणा सेलार सवख, लखमूलइ ऊपरि लूंबि लक्ख।
खेलियो खेतसी खग्ग छोहि, ससकरी लाख ऊपरै सोहि॥
पड़ियौ रिणि खेतल पिसण पाड़ि, मासहरि चाड़ि ध्रज मारवाड़ि।
कायौल किवाड़ बसी करेय, सोंपियो मीर भटनेर सेय॥

भटनेर जीत 'र मुगलां री फौज बीकानेर कानी चाली। कामरां राव जैतसी नै सन्देसो भेज्यो कै एक किरोड़ रुपिया अर एक बीनणी ले' र म्हारै आगै हाजर हो। आ बात सुण 'र जैतसीरी आंख्यां लाल होगी। बो कामरां नै हराणै रो संकलप कर' र लड़ाई रै मैदान में मिलणै रो जवाब भेज्यो। जद मुगल फौज बीकानेर नगर रै कनै पूगी सो रण-चातर जैतसी किलो छोड़ दियो। इत्ती सोरी जीत पर मुगल फूलग्या। बठीनै जैतसी चोखो मोको देख 'र 109 घुड़सवारां रै साथै आधी रात नै मुगलां पर छापो मार्‌यो। दोन्यां पखां में घमसाण मचग्यो। आखर में मुगल हार' र लाहौर कानी भागग्या। इयै तरीकै सूं जैतसी मरुधरा नै मुगलां सूं आजाद करायी अर कामरां री जीत री हूंस, धन रो लोभ अर कमीणपणै नै आपरी तरवार री धार सूं मिटा दियो।

काव्य रै सरू में मंगलाचरण है। संस्कृत कवि कालिदास रै 'रघुवंस' दाईं इयै में राजपूत जाति रै एक ही कुळ रै कई राजावां रो बखाण है। प्रधान रस वीर है। इयै में नगर, पहाड़, सूरज, चांद, रात, सुबै—सांझ आद रो वरणन है, पण आ रचना महाकाव्य कोनी। इयै में खास तौर सूं जैतसी रै जीवण री एक सब सूं महताऊ घटना रो बखाण है। इयै वास्तै आ रचना एक खण्डकाव्य ही है। इयै में कोई सक कोनी कै खण्डकाव्य री निजर सूं आ डिंगळ री पैलै दरजै री पोथी है।

बीठू सूजा आपरी पोथी में मुगलाँ रै घमण्ड अर जीत री तृष्णा रो बखाण करताँ राजपूताँ री बादरी जलमभोम रो प्रेम, स्वाभिमान, जाति-गौरव अर वलिदान रा फूठरा चितराम उकेरया है। लड़ाई रो वरणन भोत ही फड़कतो, सजीव अर यथार्थ है। ओ कायराँ में भी जोस पैदा करै। रणभेरी री आवाज, सिपायाँ रो रोळो, बादराँ रो आपस में वार, रुंड मुंडाँ रो धरती पर गिरणों, *लड़ाई रो मैदान खून सूँ लाल हो ज्याणे, कायराँ रो भागणो आद चितराम पाठकाँ* रै सामी साकार हो ज्यावै :—

तांणिय कंमांण कनाठ तूंग, बाणाढलि अडिय लोहि बूंग।
जइराम जंपिय हीदूं जणेहि, घातिया तांम घोड़ा घणेहि॥
राठउड़ि रोलि रेवंत रघ, बिछूट जांणि संकली बघ।
पतिसाह सेन हुवतइ पगेहि, मार्यं असि चाड़िय मारवेहि॥
खाफराँ जइत वाहई खड़ग्ग, यासदे जांणि वने विलग्ग।
ऊतरा सेनि जइतउ अवीह, सीघरे पईठऊ जांणि सीह॥
धड़हड़ै ढोल धूजई धरत्ति, पड़िया लगि वरसइ खेड़पति।
बीकाहर राजा ईद बगि खाफराँ सिरे खिविया खड़गि॥
रड़वड़ई रूँड खांडे विखंड, ताजियाँ तूंड पड़िया प्रचंड।
सँ थपी भोमि वाहरू सीत, देवतां राव पाड़इ दईत॥

कथा नै रोचक बणाणै खातर कवि लड़ायाँ रै बखाण रै अलावा बीकानेर नगर रा सोवणा अर मनमोवणा चितराम उकेरया है, "जागाँ-जागाँ कोयल सी मीठी बोलणहारी लाजवंती गोरड़याँ रा झुंड दीसै। अठै रा बादर बांका है। नगर रा बाजार धन-धान सूँ भरयोड़ा है। तालाब पाणी सूँ लबालब है :—

बावणी सऊजल सेत दंत, वांणी सुवांणि नै लाजवंत।
सोहिली भोमि वांका सुभट्ट, भूझार दियै करिमाल झट्ट॥
लाखीक मिलै मोड्ही लोक, चउहट हाट मांणिक चौक।
अंतरी गवख ऊजला ओप, अंमली कोट खाई आलोप॥
नेहलीं नीर भरिया नयड्ड, वांकी दुरंग पाखी विहड्ड।
सारीख जइत सुग्रिांण साज, रामावतार राठउड राज॥

कठै कठैइ कवि रो बखाण सीव सूं बारै लागै। बो जैतसी नै सहदेव रै समान बुद्धिमान बतावै अर उण रै राज रै अमन-चैन अर धनरी तारीफ करताँ उवै नै राम राज रै समान मानै। इत्तो ही नीं, बो कामराँ सूं मरुधरा री मुगती नै रावण रै हाथाँ सूं सीता री मुगती कैवै। बीठू सूजा राव जैतसी रो दरबारी कवि है इयै वास्तै आप रै राजा रो सरूप क्यूं बढा-चढा' र दिखायो है।

काव्य रै हिसाब सूं 'छन्द राव जैतसी रो' एक बड़ो महताऊ अर सरावण जोग ग्रन्थ है। इयै में युद्ध वीर रै साथै दानवीर अर दयावीर रा रूप भी दीखै। वीर-

भावना रो इस्यो उदात्त रूप राजस्थानी काव्य में दूजी ठौड़ भोत कम मिलै। कामरां अर राव जैतसी रो लडाई रो चितराम तो सनिमा दाई पढणै वाळै री आंख्यां आगै घूम ज्यावै। इयै री भासा डिंगल है अर संस्कृत रै तत्सम सबदां रो इयै में पैली री रचनावां सूं ज्यादा प्रयोग मिलै। जरूरत रै मुताबिक कवि अरबी, फारसी रै सबदां नै भी काम मे लिया है। अलंकारां में कवि उत्प्रेक्षा, उपमा अर रूपक रो सब सूं ज्यादा प्रयोग करयो है। दूजा अलंकारां में अत्युक्ति, यमक, अनन्वय आद गिणावण जोग है।

'छन्द राव जैतसी रो' चरित्र-प्रधान कोनी, ओ तो घटना-प्रधान काव्य है। इयै मे तरह-तरह रा वरणन है। लडाई रै अलावा घोड़ां अर मुसळमानां री कई जातियां रो मरूप अर सुभाव रो वरणन कविरी खास जाणकारी सिद्ध करै। जे आं वरणनां नै ज्यादा महत्त्व न दियो जातो तो काव्य रै नायक रो चरित्र ज्यादा उजागर होतो।

इयै रचना सूं उण टैम री कई बातां मालूम होवै। राजपूत आपरी आण खातर ज्यान देवण नै त्यार रैता। वै लडाई मे मरणो मंगळ मानता। राजपूत बादर तो हा पण आपस री फूट अर कलह रै कारण वै एको कर'र बाबर रो मुकाबलो कोनी कर सक्या। राजपूत राजा वीर होणै रै साथै दानी अर धरमात्मा भी हा। काळ पड्यो जद लूणकरण आपरी जनता नै धन बांट्यो अर गरीबां नै खाणो खुवायो।

"छन्द राव जैतसी रो' इतिहास री निजर सू भी घणो मोल है। मुसळमान इतिहास लिखारा जैतसी रै हाथां कामरां री हार रो जिकर कठैई कोनी करयो। पण "जैतसी रासो" नैणसी अर दयालदास री ख्यात अर सिलालेखां सू इयै घटना री साच चौडै आ ज्यावै। आ लड़ाई संवत् 1591 मिगसर बदी 4, सनिवार नै होई। कविरी आ रचना इयै रै करीब एक बरस बाद लिखी जी, इयै वास्तै इयै में लिख्योड़ी घणकरी बातां साची है। डा० गौरीसंकर हीराचन्द ओझा, डा० दसरथ शरमा अर डा० रघुवीरसिंह इयै नै बीकानेर रै इतिहास री निजर सूं एक महताऊ रचना मानी है।

० ०

आपां रै गांव रौ हस्त-शिल्प

□ नानूराम संस्कर्त्ता

गांवांरो शिल्प हाथां रो हुनर, जको हस्त कळा नांवं घणो उथो-मानीतो है। आपणै अठै राजस्थान रै गांवां में पुराणै जुग सूं हाथां रै हुनर री बणियोड़ी चीजां-वस्तां; मौकळै गौरव-गुमान सूं विलायत तांई पोंची है। उणां रै जरियै सूं अठै अनेकूं उद्योग—धधा अर हस्त-कळा कौशळ वध्या-पनप्या है। सैंग वरसारां नगर-कस्बा रा दक्ष जगारा आप री हाथ कारीगरी सूं चोखी चीजां वणावण रै चाव उपाव में देश प्रसिद्ध हुया है।

. हाथां रै कामां रो इतिहास डाढो जूनो है। इयै कौशळ रो जलम मिनखाचारै सूं पूरो जुडियोड़ो है। आः कळा आदमी री संसारी चेतणा अर आदू सम्यता री ऊजली उपज कही जावै। पैलपोत-वंदो जिनावर जूणी री बाण सूं ऊपर उठर आतम ध्यांनणै कानी झांक्यो, उवै रै हिड़दै में हाथ रै सुकारजां री नूवी जोत जागी। जद आदमी घास-फूस अर भाठा-दगड़ां में माथो मारतो थको अणथकियै बदावू दांई संस्कृति रै मारग नै विकसावू विचारां सू बुहारतो वध्यो। आगै सूं आगै उपयोग अर अनुभव री आधार लियां होलै-सुस्तै आपरी चीजां रो फुटरापो वधारतो रयो। उवै निर्माण धंधां रै गैलै, काल. क्रम री दीठ-जोत हाथ शिल्प रो विकसाव प्रतख झळक्यो-पळक्यो। पाखाण, गाभा, लोह-लक्कड़, लाख-संखिया, हाथी दांत, माळ-माटी, खाल-खुर अर मोग-भींग आद वस्तुवां रा सम्य-सळघा उद्योग पनपणै लाग्या जद उणा चतर कारीगरां प्रगति पगोठां सूं सोनो चांदी ही नहीं-वधिया गैणा में रतनां री जड़ाई री वडाई कारीगरी दिखाळी अर आदू वस्तुवां री सैंग कळावां सोजी-सरजी। उवांरी कुशळ चतराई उपयोगी कळा अथवा हस्त कळा कैवाणै लागी। बाकी लारै काव्य कळा, संगीत कळा, चित्रकळा, मूर्तिकळा अर वास्तुकळा इत्याद नांवैंरी आखी सुभाखी सुहणै सजण रै उप्यांरै ललित कळा रै नांवै

गिणीजी। राजस्थान हस्त कळावां रो रूड़ो रतनागर, उवैंरा गांव सभ्यता अर संस्कृति रा नाळा-व्हाळा चालै। संसारी स्याणप-मोळापै में अगुवा मालै अर मिनखापै री जरूरतां सारू सकड़ सधै-वधै। अन्न-जळ मिनखा री-जीवण हुवै, जकां वेगी वासण भांडा हरवखत हाजर राखणा पड़ै। वैः आपरा गांवां रै पुराणै हस्त कौशळ में वधका ठौव घणा मिलै। लाखो थोरो, कळीवंगा अर रंग-महल जैड़ा स्थानां री खुदाई में आपणै अठै माटी री कारीगरी रा पुराणा वासण लाध्या—वैः मानवी सभ्यता रा नमूना मान्या गया है। उणांरी भांत-भंतीळी डिजाइना में आछी शिल्प रो काम ऊपड़ै। आज ही मॅंग गांवां मे माटी रा शिल्पकार मोटा कुम्हार घड़ा-माटकी, हांडी-विलोवणा, चुकलिया-चाडिया, लोटड़ी-कूंजिया, दीवट-घुड़ला अर परात-मथाणियां वडी चतर कळा-कारीगरी सू रंग भरी कोरणी रा वासण बणावै। म्हारलै गांवां री माटकी अर नोहर रा प्यालिया-कटोरदान माटी री उपयोगी कळा शिल्प सारू आपां रै अठै सरच जागा चालै चढ़ै। पण वेळासर री माटकी अर पाणी घालां फाटगी' री कैवत हो कूडी नी है। 'कुलालेभ्यो नमो।'

गांवां मे दूजी किसव-कळा, सूत-ऊन रै गाभांरी गुण गरिमा धणी मिही किसत उपलब्ध हुवै। मिनखाचारै में वरतारै सारू गाभा पं'रणै री हुस्यारी एक उपयोगी शिल्प रो सभ्य तरीको है। आदू माणस रूंखांरै पानकां पछै; अेकर खालड़ै रा गाभा धारया—पैरया! हळवा-फळवा कारजां सूं आगै कढ' र सूत-ऊन रा तार वणावणा सीख्या अर कचरी-चरखै सूं सूत ऊन कातण रो धंधो पळायो। उवै समै समाज निरमाण रै कामां मे घर-परवार रो स्थान-घणो ऊंचो हो। निरमाण विद्या ही समैरो शिल्प ही। हरमैं उवै बातां नहीं रही, पण आपां रै गांवां मे सरवजाण चतर लुगायां-धावला, लोवड़ी अर चूनड़ी जैड़ी चीजां हाथां काढै-बांधै अर आपरो सिणगार सजै। टावरां वेगी धूंडी-कांकरिया अर तागड़ी गूंथै। झुगलियां-झुगतरयां माथै ऊंटिया टोळी नै रंगीलै डोरै-कोरै काढे है। आपरी कसीदाकारी कळां सूं धावळा-लोवड़यां अर कांचळी-फतुयां मे कांच, भींगां रा डोडा अर चिरमी लालां चोभै तथा मिणिया-मोती लगाय नै भळकावै। ईयै कामां गांवां री बूढी माता बैनावां तो केई डाढी चतर हुवै। चीढ़ा पोवै अर गजरा गूंथै! उवै बांटियां सूं हाथां लुंकार रंग लेवै अर घरां नै पोते सॅवारै। चरखो कातण रा कार ही गांवां रै मोकळा घरां में हुवै। इयै उपयोगी धंधै नै गांवरी महिलावां हरगज भूल नीं सकै। उवै कातती थकी गावै—

चाल रे चरखला, हाल रे चरखला
ताकू तेरो सोहणो, लाल गुलाबी माल
मरकूं-मरकूं फिरै घेरणी, मधरो-मधरो चाल
चाल रे चरखला चाल हाल रे चरखला हाल

चरखै रो सरजाम-ताकळो, माल, घेरणी, गुडली, धमरख, दमकड़ो, ताड़ी,

कुकड़ियो, पूणी, तार इत्याद अनेकूं शब्दांश है। चरखो चलाणै सूं पैल्यां ऊन-सूत सळधा हुवै। ऊन नै विचूरणी पड़े। पछै चूंखा करै, कातै ज्यूं कूकड़िया वणै; उवै अटेरणै सूं अटेरचा जावै, आटी वणै। आटी तोलीज परी' र बेजगा रै खनै पोचै। जद उवो चतर शिल्पकार माणस; कामळ, लूंकारिया, खेसला, भाखला, दोवड़ दोवटी, गमछिया, पटूडा, यरड़ो जैड़ो घणी भांतरा गाभा थोड़ै मेणतानै सूं वण देवै। उवै मोटा गाभांरी वणत में सूरज-चांद, मोरिया-ढेलड़ी अर कांघसिया ही घणा पण कोर देवै। गांवां रा पुराणा वेजगारा गाभा वणै जद उणां माथै धान रै आटै रो पाण लगावै—इयै वास्ते अै वसतर धोया बिना लोग पै'रै नहीं। धोवै खीलै अर फळवा गूंथै तथा पछै पै'रै! इण तरां गांवां में हस्तकौशळ रा काम आछा चालै।

जियां लुगायां घरा में चरखां रा काम चलावै यथां ही मोटियार घूमता-फिरता ढेरिया कातै भुंवावै। चरखां सूं ऊन-सूत कतै अर ढेरिया मूं ऊंटां-बकरां रा बाळ तथा सिरकेश कात्या जावै; जको डोरयां सीड के.लावै। ढेरियां माथै आकां, खीपोळयां अर सिणियां रै अंकालां रा तार कतै जकां रै गिढां सूं जेवड़ा, तणार, वेड़, सिरिया-चौबंधी जिसा रस्सा बंटीजै। अै: सैंग काज बटियां रै बळ बटारा सारै। गांवां में छाटी-बोरा, दरी-सतरंगी, पीढा-पिलंग जैड़ी जिनसां ढेरियै कती डोरी सूं वणाई जावै। इयै गुहणी डोरी सू मांचा री वणत मे फूल-चोपड़, वावड़ी, पिणहारयां भळै राखीजै। मांचा नीसखिया, बारै संखिया, गरडबेज, घूंघधांळा अर जीव बारा इत्याद केई रकम रा वणीजै। मांचा रा कारीगर मिनख वणता थका डोरी में सांध जोड़ लगावै अर सुगन दिनमान बतावै'—

पैं' ली सांध पगांथियै, दूजी पासां पेख
जे दिनड़ो संवळो हुवै तो, मांचो वण नर देख॥

ढेरियै कात्योड़ै अंकाळै, सूत अर जट रा पा:ग्वरी-पा:ग्वरा, बटूआ, ग्योळी नाळिया ऊंटां रा म्होरा वेलचा, नकतोरण अर गोरवंध ही घणा गूंथीजै है।

गांवां मे चमड़ेरी चीजां रा कार ही चोखा चालै। गायां रो धन, मिनख जमारै रो आधार-उवांरै गोवड़ां री चीजां अठै, रै माणसां रै डाढी आछी आवै। 'चरमकारेभ्यो नमो''—चरमकार चमार; जको चमड़ै री घणी चीजां री मनोहारी कारीगरी जाणै।

पगरख्यां-मोजड़ी, तरवार रा वहूडा, वेग, कमरपेटा, कूवै रा कोस, पखाल, दीवड़ी, पलाण रा थडा तथा ऊंटां रा अडोळ-घासिया, तंग, गानी-घूघरघा नाकी—पेटो, बांसिया, खलीता अर बटवां जिसी चीजां चमड़ै रो शिल्प हुवै। चमड़ै होकां मे, चांदी रै तारां रो कसीदो काढ़यो जावै। गांवां री अैड़ी वस्तुवां माथै कसीदो काढ़ण री दस्तकारी देखवा जोगी हुवै। भैंस्यां रै खाल री साव— सोरण बटीजै तथा घी तेल घालण खातर ऊंटां रै चमड़ै रा कुप्पी-कुप्पा घणा वणाया जावै। ऊंटां

रै चमड़ै री सळू तार सूं ढोकां रा थारिया छाला, पालै नीरै रा ठाँव वणाया जावै। जेई चौसंगी दयारै सळूवां सूं ही वंधै। भैंस रै खुरा अर सीगां सूं कांघसी- कांघसिया वणायीजै। यो किसब दूसरी विरादरी रा हरिजण करै। हिरण री चाम नै अठै मृगछाला कवै; जका पूजा पाठ, जोग साधण आद जागांवां मे आसण रो काम देवै।

आपां रै गांवां मे सेती-पाती, धीणैं-वोपार अर घर परबार रै घणखरा कामां मे लोहै सूं वण्योड़ी वस्तुवां ही डाढ़ो काम आवै। सूवै-चोपड़ी सूं लेय'र कस्सी, फावड़ा, कुवाड़ा, गंडासी, गैंती-दांतो, बट्ठाळिया, तवालमारो, कड़ालिया, कुड़छी, चूलडी-चीपिया, वावली-वसूला-हथोड़ा, करोती, छूरिया-मिरिया, पाछणा-कतरणी, ताकड़ी-टोकरा, डविया-पेटी तरवारिया-वंदूकिया, कूड-घूमरा, न्योळ-पँखटा इत्याद काम आवणवाळो अणगिणत चीजां हर समै आपां रै गांवां रा शिल्पी लुहार घणावै। वै:लोह तपावै-वधावै, घण मारै जद भारी जोर आवै। हर वखत वास्तै (आग) अर धूंवै कनै डील नै काळो टीट वणा लेवै। पण सोनै-चांदी रै गैणा रा कळात्मक कार गांवां रा सुनार करै है। वै: मोत्यां अर जड़ाव रो काम ही झालै। सुनार छोटै हथोड़ै सूं गैणा घड़ै, खुट-खुट वाजै; लुहार लोह कूटै धम्मीड़ बोलावै! जद कैवत चालै—" सौ सुनार री एक लुहार री।"

आपणै गांवां मे थाली-लोटा, गिलास-गवणिया, टाली-घूघरा, कूंड-टोकणा ही हाथां सूं घड़ीजै। पीतल रा पागड़ा, खिलौणा, केतली-छागळा, गांवां रा कारीगर ढाळै-मढ़ै।

अठै लकड़ी रो शिल्प विगमावू विरासत जुड़्यो जूनो करतब है। लकड़ी माथै खुदाई नक्काशी रो शिल्प, सदीनी सुन्दरता वाजै। पागा-पालणा, पीढ़ा-सांगवा, कपाड़ी-किवाड़, काठी-पलाण, अर गाडी इत्याद मोटी चीजा गांवां रा खाती-सुथार वणावै। इणा मे पीतल साम्बै री जड़ाई रो काम वड़ी जुगती सू करै। पत्थर री खुदाई रो काम, देवी-देवतावां रो पुराणी देवळघां जोयां साधै। लाखरी कारीगरी लखारा, गामारी रंगत बंधाई रंगारा अर तेलो री घाणी रो काम ही हस्त कौशळ में घणी नामूनदारी सूं चालै है।

छेकड़ कयो जा सकै कै आज रै समै री शिल्प साधै आपांरी आद-जुगादी शिल्प कळा नै जोड़ मिलाण री जाँच जोख जोई जावै तो असलो गुण-दोखां रो ठा लागै तथा मजवूती अर मृदुळता में गांवां री पुराणो शिल्प—मैमा वतो प्रगट हवै। पण कळा दीठ सू नूंवो पुराणो होणो; शिल्प री कसौटी नही। श्री काळीदास जी रै शब्दां मे—

पुराणमित्येव न साधु सर्वम्
न चापि सर्वं नवमित्यवद्यं,

० ०

म्हैं क्यूं लिखूं

□ सांवर दइया

आ बात कुणसै ग्रंथ में लिख्योड़ी है कै लिखै जिको आदमी हर अेक नै आ बतावतो फिरै कै वो क्यूं लिखै है। जे किणी ग्रंथ में आ लिख्योड़ी भी हुवै तो कांई हुयो? ग्रंथां में लिख्योड़ी बीसूं ही बातां ये-म्है कोनी मानां। पछै आ बात क्यूं मानां?

कोई गूंगा मनै ई ओ सवाल पूछै—थे क्यूं लिखो?

भाई, पैली तो थे आ बतावो कै थे आ बात क्यूं जाणनी चावो?

ई जाणकारी रै अभाव में थांरो कुण सो काम रुक्योड़ो है? आ जाण्यां बिना थांनै रोटी कोनी भावै का पछै थानै नींद सावळ कोनी आवै? ई जाणकारी बिना थांरो कुण सो अेढ़ो अटकै?

थे कदेई आ तो कोनी पूछी कै मैं मास्टर क्यूं बण्यो। साची उतावूं? मनै कोई सावळ सो दूजो धंधो कोनी मिल्यो इण खातर मैं मास्टर बणग्यो। बी जमानै में दसवी पास कर ट्रेनिंग कर परो आराम सूं मास्टर बण सकतो, इण खातर बणग्यो। अबार दाई प्री० बी० एड० रा झमेला कोनी हा। प्री० एस० टी० सी० शुरू हुवण में ई घणी जेज कोनी बतावै। पण बी जमानै में जिको बीजो की नी बण सकतो, बो मास्टर बण जावतो। मैं ई बण्यो।

पण थांरो सवाल तो ओ है नी—मैं क्यूं लिखूं?

मैं लिखूं, कारण मनै लिखणो आवै अर लिख्यां जी सोरो हुवै।

(दूजा भलाई ना मानो। मैं कुण सो दूजा नै मानूं हूं अर मनाऊं हूं?) म्हैं लिखूं, कारण म्हारै कनै दूजो धंधो कोनी। इयां समझो नी, दुनिया में बीसूं धंधा है, पण मैं उणरै जोगो कोनी। पण इण रो ओ अर्थ काढ़ण री स्याणत ना करज्या कै नाजोगा लोग लिखै। लिखै सो जोगा ही जिका इणरै जोगा हुवै?

म्हैं लिखूं, कारण कै शब्दां सूं अर सोदा सूं सामाजिक बदळाव आवै। अबै थांनै घरू बात कैवूं—म्हारै लिखोड़ै सूं म्हारै घर आळां में नूंवै पइसै भरई बदळाव कोनी आयो। दूजांरी तो कैवूंई कुण सै मूंडै सूं ! मैं खुदनै दार्शनिक दूरदर्शी अर क्रांतिकारी समझूं। पण थांनै अेक छानै राखी बात बताबूं—घर-गळी आळा मनै गूंगो समझैं। किणी बात में जोड़ायत नै राय देवूं जणा (बियां तो म्हारी राय री उणनै जरूरत पड़ै ई कोनी) बा सीधी खळकावै—थे चुप रैवो ! थांनै ठा तो आय कोनी। टाबरां नै पढ़ावतां-पढ़ावतां थांरी बुद्धि टाबरां जिसी हुयगी। अै घर-गृहस्थी आळै रा काम है। समाज मे नाक ऊंची राखणी है ! म्हैं करसूं जियां ई हुसी। थे तो खाली थांरै देखबो करो। पण थे अठै ऊभा ई की काम रा कोनी। फालतू टांग अड़ासो। ईयां करो, थे थांरै कमरै मे जावो अर लिखो। कागद काळा करो। चाय-कॉफी चाइजै तो हेलो पाड़ लिया। अठै ना आया फालतू'''।

म्हैं सांमैं सूं नई हूवूं जित्तै बीरो भाषण चालतो ई रैवै। (भाई सलीम जावेद, दडाछंट डायलॉग लिखण री कला सीखणी हुवै तो म्हारै घरां पधारो कदैई !)

म्हैं लिखूं—की दो पइसां रो जुगाड़ करण खातर। अै दो पइसा आकाशवाणी का किणी सरकारी पत्रिका सूं बापरै। बाकी पत्रिकावां पारिश्रमिक देवण रो हीणो काम कोनी करै। प्रकाशकां कनै रॉयल्टी मांगण री इच्छा ई कोनी हुवै। वै तो बापड़ा जद मिलै, रोवता ई मिलै—पोथ्यां बिकै कोनी। सीजन मौत ई माड़ो है। दूजी बात, प्रकाशक तो खुद अेड़ै लेखकां नै सोधता फिरै जिका पइसा देयर आपरी पोथ्यां छपाणी चावै। अबै बतावो, डाकण बेटा लेवै का देवै ?

म्हैं लिखूं, कारण कै म्हनै किणी संस्था रूपी पेड़ मांयै इनाम रा अंगूर लटकता दीसै। म्हैं लूंकड़ी दांई उछळूं-कूदूं। पड़ूं पण हिम्मत कोनी हारूं। लूंकड़ी गूंगी ही जिको अंगूरां नै खाटा कैय र (बापड़ी रै मूंडै में पाणी भरयोड़ो हो सोई) दुर बहीर हुई। पण म्हैं देश नै इक्कीसवी सदी मे लेय जावण रा चमकता घोरा दिखावणियां रो भायलो हूं। अंगूरां रो गुच्छो खायां पछैई जपूं !

थांनै भेदरी बात (लिखण री अेकदम असली कारण) बतावूं—म्हनै तो आं पुरस्कारां सूंई प्रेरणा मिळै। जठै जित्ता-जित्ता पुरस्कार धरती मांयै है, वै सैंग म्हनै ई मिलणा चाइजै। अै पुरस्कार लाख-हजार-सैंकडा सूं लेय र किलो आधा किलो आलू-कांदा-टमाटर-मूली-गाजर तांई की भी हो सकै। म्हैं सात्रे कोनी जिको नोबल पुरस्कार नै आलू रो बोरो कैय र ठोकर मारूं। म्हैं तो सौ ग्राम हरी मिर्च (अबै किणी रै मिर्चां लागै तो लागो भलांई) ई पुरस्कार रूप कबूल करण नैं तैयार हूं। कोई देवै तो खरो माई रो लाल !

म्हैं लिखूं—कारण कै सागै काम करणियां नै डरा सकूं। म्हैं वां (बदमाश) सरीफां रो गळो कोनी झाल सकूं। वांरै च्यार जूत कोनी मार सकूं। थांनै दो

चुभती बातां कोनी सुणा सकूं। बांनै आ कैय र धमकावूं—लिख घरो बदनाम कर देवूंला।

आ तो म्हैं सोचूं।। वै कांई सोचै, बतावूं ? लो सुणो। वै कैवै—ईं स्या नियै नै कविता-कहाणी-लेख मे उलझ्यो रैवण दो। नीतर ट्यूशनां खातर लाळो नांखतो डोचळ्यो मारतो फिरसी। मरतै भायलै नै दो-च्यार ट्यूशनां दिरावणी पड़सी। वो घाटो आपणोई हुसी। पड़्यो मरण दो ईं नै। कागद काळा करण दो'' ।

म्हैं लिखूं, कारण कै म्हैं बेगड़ो हूं। म्हैं कंवू की ओर'''लिखूं की ओर'''करूं कीं ओर ! आदमी-लुगाई बिच्चै खुल्लै ख्यातां री वातां करूं, पण घर आळी नै सात तालां में बंद राखूं। सरकारी पुरस्कारां री खिलाफत करूं, पण वांनै हासिल करण खातर नाक रगड़तो फिरूं। म्हैं हिंसा रो विरोधी हूं, पण पड़तल नैं पछाड़ण सूं चूकूं कोनी। आ तो थांई सुणी हुवैली—ठाकरां, थूरमा किसाक ? कै पड़तल री तो वैरी' ज पड़्यो हूं !

म्हैं लिखूं, कारण कै म्हारो लिख्योड़ो छप सकै। बीसूं भायला आपरी पत्रिकावां में छापै अर अंक भेजै। यो अक घर आळी खातर मल्टी परपज हुवै। बा सिगड़ी जगावै। टाबरां नै रमण खातर पत्रिका देवै। टाबर पानां फाड़ै। वै हवाई जहाज-नाव-चक्कू बणावै। आखातीज रै दिनां मे पाठल किन्ना बणावै अर उडावै। सीयाळै मे टाबरां री वैवती नाक पूंछण खातर ई बै पाना काम आवै। अरे, और तो और, म्हारी रचना मायं (अबै थानै कुणसै मूंडै सूं कैवूं कै रचना सागै छप्योड़ी फोटू माथै) छव महीनां आळै लाडेसर नै 'सूऽऽ मूऽऽ' करावै ! जे बीनै टोकण री मूर्खता करूं तो बा कादर खान आळी स्टाइल मे डायलॉग बोलै—कांई घन बिगाड़ दियो जिको रोळा करो। हा तो रांड रा कागदरा टुकड़ा ई ! अकूरड़ी माथै नांखो तो कुत्ता ई कोनी सूंघै। म्हैं तो इंयां ई करसूं। फर लिया कांई करो जिको !

म्हैं चुप रैवूं। म्हैं जाणूं—रावळा घोड़ा अर बावळा असवार किणी री कोनी सुणै।

म्हैं क्यूं लिखूं—इण रो पहलो अर छेहलो कारण सुणो—संसार में लाखूं बातां रो अेक ई कारण हुवै कै वां बातां रो कोई कारण कोनी हुवै !

सांचो कैया, कांई अबै ई थांरी समझ मे कोनी आयो कै म्हैं क्यूं लिखूं ?

○ ○

धिन है एड़ा वीरां नैं

□ विष्णु दत्त सरमा

मौत अर मेह मांग्योड़ा नी मिलै । करमा री मिलकत पाणी माथै । सावण, भादवो बीत ग्या, अर आसोज चालै, पण पाणी री एक बूंद ई कठै ? जाणे इण बरस भगवान किया पाछो फिरग्यो । भगवान नैंई इरस्या व्हैला । करसां रा मुंडा उतरनै फूटोड़ी कुलकी जिसा वैग्या अर उणरा भोळा-भाळा पशूड़ा तो बादळा देखतांई युस हो जावता जाणे, तीनू ई लोक रो राज मिलग्यो व्है । बा इज तो ही उणरी सगळी माल-मिलकत ।

वायरो चालै, जाणै घाव माथै लूण जिसो । टाबरां रा पेट भरणांई मुसकिल व्है, उण जगै पशूड़ा रो कांई हाल । भूख अर प्यास में आपरी जीवण-लीला खतम करै । शायद ऐड़ा ही उणरा करम । विधाता ऐज लेख लिखंया व्हैला ।

मातर भोम छोड़णी दोरी जैर लागै, पण मरतो कांई नी करै । गांव रा केई लोग आपरा ठोर ढाकर लेयर दुजोड़ै मुलक भगवान अर करम रै भरोसे गया, तो केई करकड़ी घायर उठैहीज रैवै ।

आसोज री पूनम । रात रो ठंडो पडियोड़ो चांद आपरो अमरत बरसावै । पण आज करसां नैं आज रो अमरत जैर सूं भी खारो, आंख्यां रो अडीठ जेड़ो लागतो । लोग बादळां कानी देखता जिको लुका-छुपी रो खेल खेलता हा ।

गांव रा सगळा लोग रात रा चार पौर वास्ते सोयग्या । उण दिन तीन चोर चोरी करण खातर हाथ में बन्दूकां रा खाली खोखा लेयर गांव में घुसिया । चोर में छतीस कलावां व्है । दोय जणा बाणियारे घर सामनै घुसिया अर एक उणरो पोरेदार । पण कैवै आमल बुधो वाणियो अर पाछल बुधी लोक । धन ऐडी जागा हो कै उणनै खोजण में कांचा चणा चबावणा पडै । खड़-खड़ री आवाज पाड़ोसी शंकर रे कानां मे पड़ी । वो झड़प बायर उभो व्हो । हाथ में लांबी गेडी लेयर सेठ रे घर

में कूद पड़्यो। जाणै आज उण रै चोरां नै लूटण नै आयो व्है। आज उण रै असतर आगै सिरोई री तलवार झक मारै।

चोर नव दौऊ अग्यारै हुया पण केवता गया—कै 'म्हैं थारो एक दिन काळ बणोला।' शंकर उण खुशी में कद् सुणतो। शंकर री गांव में घणी पूछ ही। क्यूं के वो लेंगोट रो पक्को, हाथ रो नेक अर जबान रो साचो हो। आज शंकर गांव वास्तै द्रोपदी रो क्रिसन बणनै गांवरो नाक बचायो हो।

नवी बात नव दिन, ताण-खीच'र तेरे दिन। बरस माथै बरस बीतग्या। सांत लोगा रै दिमाग सूं दिन में चांद रै ज्यूं अलोप व्हैगी। शंकर एक दिन सासरै चाल पड़्यो। रवानै होवता ई मेरणा माथै ठोकर खाई, मारग में बिल्ली आपरी अमल सूं खारी ने भाटा सूं भारी जबान में बोली। शंकर ने इण अंधविश्वास में विश्वास नी हो।

गांव सु दोय कोस रास्तो तय कियो कै झाड़ी मे खुसर-फुसर सुण नै वो बोल्यो, "कुण होरे कुतरो! कुण है? चोरां रो मुखियो बोल्यो जवाब म शंकर बोल्यो ओ तो म्हैं हूं थारो बाप शंकर। इतरै में ईज चोरां उणनै घेर लियो। उणनै देखतांई शंकर रो पारो 108 डीगरी चढग्यो। हाथ में हडुमान री गदा रै ज्यू राब्योड़ो धारिये एक जणै नै रामपुर री टिकट काटर जमलोक पुगतो करयो। इतरै में पळाक करती आभै री बीजळी रै ज्यूं तलवार नागण री भात शंकर रे गळै लागी। नकटो लारै सूं वार'''। केवतै केवतै उणरो माथो मतीरै रे ज्यूं गुड़ग्यो। लोही री गंगा-जमना शरीर पवितर कर आगै व्हैगी। शंकर री बलिदान उण आप वास्ते नी हो गांव वास्ते हो। आज तक गांव उणने याद करै। लुगाया गीतों में उणरा बोल गावै। धिन है ऐड़ा वीरां अर सूरां नै।

घुड़लौ घूमेला जी घूमैला

श्रीमाली श्रीवल्लभ घोष

आए बरस चैत रै म्हीनै मे मारवाड़ रै गाँव-गाँव मे तीजणियाँ घुड़लो लेय नै घर घर गीत गावती तीज मनाया करै। ओ तिवार धूमधाम सूं घणै हरख सूं मनाईजै। अधरम माथै धरम री जीत रौ औ तिवार आज सूं कोई चार-पाँच सौ बरसाँ सं चालु व्हीयो नै आज ताईं मनाईजतो आ रैयो है। इण तिवार री कांणी ई भांत है—

अजमेर रौ सूबेदार मल्लूखाँ हो। बी री फौज मे मीर घुड़ले खाँ नाँव रौ एक नाँमी ने बादर सिरदार हो। बी दिनाँ मेड़ता माथै राव जोधाजी रा बेटा राव सातळ जी रा भाई राव वरसिंघ जी राज करता। अजमेर रै आधीन साँभर री सिरदार मेड़ता रै परगणा में आय नै लूटपाट सरू कर दी। तद रीसाँ बळता बरसिंघजी साँभर माथै हमलो करनै साँभर लूट ली। साँभर री मुसलमान सरदार अजमेर भाजनै मल्लू खाँ कनै अरडायो। मल्लू खाँ मारवाड़ रै रणबंका राठौड़ाँ री ताकत आछी तरह सूं जाँणतो हो। मन री मनै डरतो ई हो। बौ आपरा आदमी भेजनै वरसिंघ जी नै अजमेर आवण रो न्यूतो दियो। सन्धी करण री बात कैवायी। बरसिंघ जी बीग्नै धोळो-धोळो दूध जाँण नै बी माथै बिसवास कर लियो। आपरा की सरदाराँ नैं साथै लेयनै अजमेर जा पूगा। बठै मल्लू खाँ दगौ करनै वरसिंघजी नैं कैद कर लिया। इण बात री ठा जद जोधपुर नै बीकानेर पडी तद राव बीकाजी राव दूदाजी नैं राव सातळ जी आप आप री लूंठी फौजाँ लैय नै अजमेर काँनी व्हीर व्होया। जद मल्लू खाँ नैं इण बात रा समाचार पूगा कै राठौड़ाँ री बौत बड़ी फौज अजमेर काँनी आ रैयी है तौ बौ मन म्हैं डरियो नैं वरसिंघ जी नैं छोड़ दिया। वरसिंघजी सूं बदलो लेवण री उण रै मन री मन मे ई ज रैयी। बौ मन में गाँठ तौ बाँध ई ज ली ही। राठौड़ाँ री फौजाँ आप आप रै ठाँणै पूगी।

थोड़ा दिनां पछै उणनैं समाचार मिलिया कै बरसिंघजी मेड़ता में नी है। वै जोधपुर गयोड़ा है। लारैं मेड़ता में कोई सांतरो सिरदार नी है। तद मल्लू खां आपरी फौज लेयनैं मेड़ता माथै हमलौ बोल दियौ। आ घटना संवत 1548 री है। आछी तरैं मेड़तो लूट नै बो जोधाणै कांनी व्हीर व्हीयो। इण बात री खबर जद जोधपुर पूगी जरैं जोधपुर सूं राव सातळ जी, दूदाजी नैं, बरसिंघ जी मिलनैं मल्लू खां री फौज रो सांमनो करण सारूं उतावळा होयनैं घोड़ा दड़बडाया। राठौड़ां री फोज रैं पूगण रैं पैली ई ज मल्लू खां री फौज पीपाड कोसाणौ लूट लियो हो। वठैं गवर पूजती तीजणियां नैं मार-कूट नैं एकवाडैं मे कैद कर राखी ही। इण तीजणियां री देख-रेख मीर घुड़ले खां करतो हो।

राव सातळजी नैं ठा पड़ी कैं मल्लू खां रैं आदमीयां ऐ तीजणियां नैं रोड़ राखी है तो बीया रो हाथ मूछां मांथै पडियो। राठौड़ी रगत में उफाण आयो। अबैं तो पांणी पीवणो ई हराम है जद तांई तीजणियां नैं नी छुडायलां। आ कैय नैं वै तो रातो रात हमलो करण रो तेवड़ लियो। राव दूदाजी नैं बरसिंघजी ए ई उणीरो मंछा पूरी करणी चावी। रातो रात हर हर महादेव ने जै चामुण्डा माता री लूंठी आवाज सूं आभो गूंजण लागो। घमासांण जुद्ध व्हीयो। मल्लू खां तो डर परो नैं भाग छूटो आपरो जीव लेयनैं। पण मीर घुड़ले खां राठौड़ां री फौज सूं बादरी सूं लड़तो रैयो।

चांद रै चांदणै में खटाखट भवानी बाजती रीने लोथां माथै लोथां रा ढिगळा लागता रीया। राव सातळ जी पाधरा घुड़लेखां सूं भिड़िया। दोई जणां अपर बली नै लड़ाकूं हा। पण सातळजी री मार घुड़लै खां सैं नी सकियो। उण रो सरीर सेरणी रैं ठीडा ज्यूं जगां-जगां सूं घावां सूं भरीज गयो। सेवट वो हार मान हेटै पड़ियो। राव सातळजी री जीत व्ही, पण बै ई घणा घायल हुयग्या हा। तीजणियां कैद सूं छूटी, नैं गवरल माता रा गीत गाती अणूती हरख मनावती, राठौड़ां री जै जै कार करती आपरैं घरां पूगी। बी बखत राव सातळजी घुड़लेखां री बादरी सूं घणा ई राजी व्हीया। आगैं धरमजुद्ध होवता नै बादर बैरियां री बादरी रा बखांण ई करता। राव सातळजी जद मीर घुड़लै खां री बखांण करियो जद बो कैयो कै मन्नैं बौत खुसी नैं हरख है के म्हे एक बीर रैं हाथां बीर री मौत मर रियो हूं पण इण बात री अणूतो रंज ई है के म्हैं एक कायर री इतरा बरस चाकरी करी जको खुद भाज नैं मैदांन छोड दियो। तद सातळजी कह्यो थूं पिछतावो मती ना कर थारी बादरी नैं याद राखसां। राव सातळजी बी बगत आपरै सिरदारां नैं कह्यो के आज सूं आये बरस घुडलै खां री याद में घुड़लै रो तिवार मनायो जावै। तद सूं आज तांई तीजणियां घुडलै रा गीत गावती घुड़लैं रो तिवार मनावती आ री है। घुड़ले खां रो माथो खीची सारंगजी री तलवार सूं वाढ्यो गयो। घुडलैं खां नैं पाखती ई ज गांव बासणी में दफणायो गयो। घुड़लैं खां री याद नैं अमर करणियां सातळजी

ई एक बरस पछै सरगवासी व्हैगा। तद सूं आज तांई तीजणियां अेक काचै घड़ै रै मोकळा ई तीणा करै, बी मे एक दीवो राख घर-घर घुडलै रा गीत गावती फिरै। पछै तीज रै दिन बी घड़ै नै फोड़ न्हाखै। 'घुडलो घूमेला जी घूमैला' ओ गीत राव सातळजी नै मीर घुड़लै खां री याद नै अमर राखै है। गीत इण भांत है—

घूड़लै रै बांधो सूत, घुड़लो घूमेला जी घूमैला।
सवागण जायो पूत, घुड़लो घूमेला जी घूमैला।
ओ पूत बड़ो सपूत, घुड़लो घूमेला जी घूमैला।
ओ मूते सारी रात, घुड़लो घूमेला जी घूमैला।
आ रेल गयी गुजरात, घुडलो घूमेला जी घूमैला।
महाराजा पूछै बात, घुड़लो घूमेला जी घूमैला।
आ किसा घरां री रेल, घुड़लो घूमेला जी घूमैला।
आ बड़ा घरां री रेल, घुडलो घूमेला जी घूमैला॥

पुरस्कार : तबादलौ

जेठनाथ गोस्वामी

रात आंधी सूं बेसी ढळगी ही। आभौ बादळां सूं घटाटोप हुयोड़ौ। अर इस्यौई अमूंझतो मन उणरो ई हो। नींद जाणै अळगी जाय लुकगी ही। मन रो घोड़ौ बड़ग-ड़ायां अंतस में सारला सतरै बरसा री जिनगाणी बायोस्कोप ज्यूं घूमगी। अबखी अर अळगी भाय आयोड़ा नैनासीक गांवड़ा। माध्यमिक स्कूला में गणित विषय रै अध्यापक री नौकरी। संस्कारा में शिक्षक पणै री सौरम घुळियोड़ी। चढ़ती ऊमर में विद्यार्थियां नै ई आपरी अनमोल संपत्ति जाणी अर हरहमेस सौ फीसदी परिणाम दियौ। दिनां री चकरी चालती रयी अर ढळती ऊमर आवतां गृहस्थी रौ बोझ जतायौ। घरवाळी लिछमी रो अवतार। घणी वेळा कमाई आळी ठौड़ तबादलौ करावण री बात चलाई। पण उणरै हियै आदर्श अध्यापकी री कळी इसी खरी कियोड़ी कै मोटी होवती कन्यावां रै खरचै जुगाड़ री तप ई उण कळी नै पिघाळ नीं सक्यौ।

अर वो दिन उणरै साद कितरो गुमेज भरियौ जद कळक्टर उणनै सम्मानित कर्‌यौ। जिण स्कूल में उण हैडमास्टरी करी उणी स्कूल रा दो लड़कां मैरिट में नाम कमायौ। गांव आया मानीता मिनखां उण रौ दूणौ सनमान कर्‌यौ। गाव कानी सूं अभिनंदन करीज्यौ। ऋषि मुनियां री परंपरा में आदर्श गुरु री ओपमावां दिरीजी। कमजोर तबका रा बालिचरां नै भारत दरशण अर स्कूल इमारत में हजारां रुपियां सूं करायोड़ौ भौतिक विकास। इसी सरावणा सुण वौ गाभां में नीं मायौ।

इसी ई एक रात जद वौ घर री लिछमी सूं बतळ करी तो आवतै दिनां री गृहस्थी रा सुभीता सारू ट्रांसफर री दरख्वास्त देय दी। उणरा दिन धिरै कै, कन्यावां री किस्मत ! हैडमास्टरी सूं डिप्टी इंसपैक्टरी मिळगी। आव जाव रा सुभीता रौ चोखौ कस्बौ। जाता पाण अध्यापका री अबखी मेटण रो ध्येय अंगेज्यौ।

अर थोड़ा ई दिनां में शिक्षा महकमें में शिक्षक हिताळू अफसर री तारीफ पाई।

पण स्यात् इसी सुभीता री ठौड़ उण जिस्या कर्मयोगी सारु कोनी ही। सवा महीनें में ई उणनें फेरूं वदळ दियौ गयौ। जिणरी ठौड़ वो आयौ वो अफसर पूरौ तिकमबाज घाट घाट री चाट खायोड़ौ। मिनकी सो भोळौ चेहरौ! पण मांय सूं पूरौ चाम्रग अर घातक। लांबौ पूजतो डील'धौळा वाळां नीचें दोय मीचरकी आंख्यां चलाती गोळ फ्रेम सू इसी झाकै जाणै घूघू। मिनट-मिनट में भोळप विखेरता मोटा होठ। जाणै मंथरा री ई जायौ। आदमी पूरौ कांइयो। कमीशन रा कवा खुदई खावणा नै पार्टिया नै ई खिलावणा। अर यै पार्टियां पूछ हिलावता कुतिया ज्यूं अवके काम आई। चण्डाळ चौकड़ी री चकरी इण भात असर करगी। कर्मयोगी नै मजबूर होय छुट्टी लेवणी पड़ी।

उणरी मोटी मिलकियत फकत उणरौ काम। पण भलाई रा दिन जाणै लदग्या। सगळा माया री चकाचौंध मे जाणै निजर फिसळग्या। जन नेतावा इण बदळाव नै मजूर नी कर्‌यौ। आश्वासनां रा थावस दिराय दिराय उणनें तीन महीना छुट्टी पर बैठ्यौ राख्यौ। कैई ज्ञापन दिरीज्या तो कैई शिष्ट मण्डलां मंत्रीजी सूं मुलाकातां करी। पण दीवा नीचें अंधारो ई। माया री मुळक बणता काम नैं लापौ देय जाती। कैसर ज्यूं वापरयोड़ी रिश्वत खोरी। जिणरै नीचे दबग्यो आदर्श शिक्षक रो नाम अर काम। खावै मूडो लाजै आंख। कुत्ता नै खुवायोड़ा लाडू उणरा बणता काम रै आडा आय जावता। कुण देखै काम नें। क्यूं करै कोई निष्ठा भरी सेवा? काई पड़्यौ है इण वफादारी में। खुद खावौ नै थौरा नें ही खुवा सो कूवै भाग पड़गी है। जितरी बार वो आपरी अरदास लेय अफसरा कनै गयौ—हॉं, हो जासी!" सूं वेसी नी सुणीज्यौ, सुणीज्या तो एलकारां रा ऐ जीवण मोती ई! समय नै पिछाणौ गुरुजी! सतजुग री बातां नै सीख देवौ!

छुट्टिया वधती ई गयी! अर वधती गयौ मन रौ कळाप! घर गृहस्थी रौ खरच अर बन्द होय चुकी तणखा। कैई वार मन कियो—काई पड़्यौ है जिद में। आपणी दाळ रोटी मिलै उठै ई घर। पण नेतावा री नाक ई घणी लांठी। सोरा साम नीची नी होवण देवणी। अर इण भात तीन महीना मे वो शरीर सू पइसां सू अर मन सू टूटग्यो। कठै गई वा आदर्श अध्यापकी? काई मदतगार रया वै प्रशस्ति पत्र? महज नाटक ई लखायौ! कर्मयोगी नैं पुरस्कार मे मिली अळगी भाम रै अळगै मारग री कर्मशाला। संतोषी सदा सुखी रौ मन मे थावस, पण मन री मावस तो उणी भात अंधारी। बुझ्या मन मे पुरस्कार रा तमगा तो तिकड़मियां रै धकै रुकता फिरै सतरै बीसी।

• •

गम खावो गम

अमोलकचन्द जांगिड़

गम खावो गम ! वाह साय ! कथनी अर करनी रो कितरो करड़ो काम ! गम खावणो कोई मोतीचूर रा लाड़ू नी है सो सपदे गटक जावै। जिरो काळजो डेढ बिलांद रो चोड़ो है, जिरो मन धरू-तारैं ज्यूं थिर है वोहीज गम खा सकै है। जो चिने'क ताव सूं उफण लाग जावै, जो जरा सै जाड़ै में धूजण लाग जावै, वो सदरोगलो होवै। वी सूं क्यूं नी हो सकै। वो फकत वेसी बात बणा सकै है अर गप्प रा गोळा गुड़ा सकै है।

गम खावणिये मिनख रो मन समदर ज्यूं घणो ऊंडो होवै। वो चारुमेर आगली-पाछली सोच'र आगलो पैंड धरै। वो आपरी मरजादा नी छोड़ै। जिया समदर में अेक रै ऊपरधा अेक लैरां ओवती जावती रै बो करै, वैयां'ई गम राखसी वो मिनख छोटी-मोटी आफतां नै धारै न छूंतरो। वो तो आपरै काम सूं काम अर धन्धै सूं धन्धों लाग्यो रैयसी। क्यूंक गम रो गढ़ फतै करणो बांवै हाथ रो खेल कोनी।

गम री कसौटी रो औसर जद आवै तद मिनख रै सामी जीवण-मरण रो सवाल आवै। खरै खोटै री तो ओड़ी रै वखत'ई वेरो पड़ै। गम खावणियो मिनख हिमाळै ज्यूं थिर होवै। वो सूर कुहावै अर ससार में आपरो नांव सुवरण आखरां मे लिखावै।

मानसिंघ चौमासै रै दिनां काबल सर करण वास्तै चढ़ाई करी। अटक मे बाढ आयोड़ी ही। बिना पुळ रै पार जावणो कतरो ओखो हो, पण मानसिंघ जैड़ै सूरवीर रो काळजो कांप्यो कोनी अर सैना नै अटक पार करण रो हुकम दे दीन्यो—

सबै भूमि गोपाल की, यामें अटक कहा।
जाके मन में अटक है सोई अटक रहा॥

महाराणा परतापसी नै बरसाँ ताणी बियाबाण जंगलाँ री खाक छाणनी पड़ी अर बिरै बिरै री बिपदा अर दुख झेलणा पड़्या। पण वो मायड़ भूम रो साचो रापूत हो, आपरै बिचारां में अटल हो अर हो गम रो गौरववान धीनार।

जियां उळझघोड़ी डोर रो नाको नी लाधै, बियाँ'ई मिनख नै बिपतकाळ में गेलो नी लाधै। पण गम खावणियो वीर तो आफताँ री राख मे मंज'र घणो ऊजळो होजावै। मीराँ नै जैर रो बाटको हाथ में झला दियो। बा गट गट पीयगी। स्वामी दयानन्द नै दूध में जैर दियो वै हाँसता हाँसता पीयगा। सुकरात घूमतो घूमतो विख पीय'र्यो अर आपरै चेलाँ नै घणै चाव सूं उपदेश भी देवतो र्यो। ईसा मसीह नै क्रास पर लटका दियो, पण वाँरै मुख सूं दर्द रो निसकारो भी नी निकळ्यो। मौत री मिनकी वाने काँई डरा सकै ही! बापू साम्है छाती गोळी झेली अर 'हे राम' सूं आखै देश नै निहाल करग्या। अंयाळै महान पुरखां रै बलिदानाँ सूं देश में साचै सूरज रो उदय होयो अर पाप रो बिनास होयो। समाज मे नूवी चेतना आई अर नुवो बळ मिल्यो।

आज फेर परीक्षा री घड़ी आयगी है। अेक रगत रो न्हाळो न्हैर्यो है। हाथ नै हाथ खायरो है, आतंक छणो ऊकळर्यो है। गम किया खायो जासी। पण गम री गरिमा री ऊंडी तीखी धार सातै आतंक नै काट गेरसी। हाँ गम राखणो पड़सी।

गम राखणो ऊजळ चरित रो चानणो है जिणै घणखरा खोटा काम सामी आजावै। फेर वानै चुग चुग समाज सूं न्यारा करया जा सकै है। गम बिना रणखेत जीत्यो नी जा सकै। फेर बो मिनख आपरै जीवण री धरोड़ री सांगोपांग रुखाळी भी नी राख सकै। चोखो जीवण जीवणो है तो मीरा री तरयाँ हँसता-खेलता गम पीवणो है।

बदलाव

कौमी एकता

केशव आचार्य

भारत देश महान् रे औ है हीरा री खान रे।

माटी इण री सोनो उगळै उंगळै हीरा मोती,
नंदी नाळ री माटी म्हारी, मंगरां री मदमाती।
मोटा मोटा बीडां री आं माटी है रंग राती,
हरी भरी हरियाळी आ तो माटी राजस्थान रै।।
भारत देश महान् रै...।

पातळ री आ माटी प्यारी शेर शिवा महान् रे,
खान हिमायूं ळागो प्यारो भाई पणों महमान रे।
कर्णावती राखी राखी, भारत रा सम्राट रे,
चितौडां रा राज राखिया, हिन्दू मिल मुसळमान रे।।
भारत देश महान् रे...।

भलो जमानो अबै आयो, राज लोग लुगायां,
कानूनां री पोथ्यां आयगी, छूत छात भुलायां।
राज करेला कोई भणिया, अणभणिया लिखवायां,
जाया है माटी रा सारा, गरीब अमीर महान् रे।।
भारत देश महान् रे...।

भील भाई मीणां अेतो, करै राज मन चाया,
छुआ छूत की आदत मिटगी, राज करै सी लुगायां।

मोटा-मोटा महल माळिया छोटा रै संग आया,
छोटा छोटा मोटा सागै हरिजन जन कल्याण रे ।।
भारत देश महान् रे'''।

आओ भायाँ मिलनै चालाँ, जोत नूंई जगावाँ रे,
माटी चूनड़ हरियाली री, रूखाँ कोर लगावाँ रे।
किरसाणाँ री माटी प्यारी राज करसाणो पावाँ रे,
धन धान री भर दो कोठियाँ 'केशव' मंगल गावाँ रे ।।
भारत देश महान् रे ओ है हीरा री खान रे'''।

○ ○

गणतन्त्र

ब्र. ना. कौशिक

ओ गणतन्त्र निजरों सूँ ऊंचो,
निजरों सूँ ईंनै मत नापो,
'ग' आखर 'गं' गणपति रूप है,
रिधि सिधि दाता औ गण रुखाळा,
'ग' स्यूँ गाँव भारत रो नाँव,
'ग' स्यूँ 'गंगा' पतित पावनी,
'ग' स्यूँ 'गाय' मय दूध दायनी,
'ग' स्यूँ 'गोबर' खेत री जिन्दगी,
'ग' स्यूँ 'गायत्री' महा मन्त्र है,
यह 'ग' कार निजरों सूँ ऊंचा,
'ण' सरूप 'कवच' यन्त्र है,
मन वचन 'साधना' रो तन्त्र है,
'त' तत्त्व 'ज्ञान' स्यूँ करै उजाळो,
तम अहम रो दूर भगातो आवै,
'न्' नाद सूँ 'प्राण' जड़ चेतन रो,
'जीवन जन्म मरण मैं समझो,'

'अ' आता है सगळी जगती रो
रुखाळो जीव मात्र रो जाणो,
ओ गणतन्त्र निजरां सूं ऊंचो,
ओ गण तन्त्र नजरां सूं ऊंचो।
गण तन्त्र जन मन में जोत जगावे।
जीवतात् गणतन्त्र राज्यम्॥

मन रो बोझ

कल्याणसिंह राजावत

अमर सदा वाणी रो जोबण, जीवण समझ तमासा रे
बोझ घणो मन रो भारी, ओ तन तो तोळा मासा रे

बीती सूं परतीती राखे, आगत आवभगत बिसरे
मूढ़ कळपना रा तिरसंकु, सदा अधर बम में बिचरे
धरती पर आखड़बाळा, क्यूं बात करे ऊंची ऊंची—
सपना री संगत सोबणियां, किण रे पथ उजास करे

उळझी घणी अकल ही ज्यारी, सुळझे किण बिध भासा रे।
बोझ घणो मन रो भारी ओ तन तो तोळा मासा रे॥

आगळ ढकी जकी रे मन रा, पाप पडत खुलता देख्या
ओटी आग राख रे ओटे, वां रा तन बळता देख्या
चितरा कसणा काठा बांध्या, उतरी लाज उघर आई—
बांधी पाळ जका धारा पे, वां रा तन बळता देख्या

मिनख सदा स्याणप मे जीवे, पण कुचळादी सांसां रे
बोझ घणो मन रो भारी ओ तन तो तोळा मासा रे

सूरज इतरौ ना सिळगावै, पण तारा उतपात करै
रैंण अमावस रै वै कुमनी पण पूनम ही घात करै
रंग फूल रौ रमै न रग रग, सौरभ राज करै मनड़ै—
देव वासना रा भूखा पण मिनख भोग रा आस करै

आसा अथक वधावै आगै, पकडै पांव निरासा रै
बोझ घणौ मन रौ भारी ओ तन तो तोळा मासा रै

०

भाषा अर विग्यांन

श्यामसुन्दर श्रीपत

समझण लागी दुनिया सारी
है भाषा सूं विग्यांन बडो

विग्यान पूगियौ सिखरां पर
विग्यांन पूगियौ जा अम्बर
विग्यान सोधिया समदर-तळ
विग्यांन चीर दीना भूतळ
जळ-थळ-अम्बर-ऊंडै भूतळ, चौमेरू है विग्यान बडो
है भाषा सूं विग्यान बडो···

रख छाती हाथ विचारो तो
विग्यान कठै सूं आयो है
किणरी गोदी खेल्यो-कूदयो
किण मावड़ दूध पिलायो है
भाषा मावड़ विग्यान पुत्र, (पण) मां सूं सुत रो मांन बडो
है भाषा सूं विग्यांन बडो···

भाषा है वृक्ष विग्यांन साख
भाषा अनन्त, विग्यांन लाख
भाषा है मूल, विग्यान ब्याज
भाषा मल्हार, विग्यांन गाज
उलटी तकड़ी जग करे तोल, (कद) श्रद्धा सूं सम्मान बडो
ज्यौं भाषा सूं विग्यांन बडो

भाषा है विश्व, विग्यांन देश
भाषा शरीर, विग्यांन भेष
भाषा है नींव, विग्यांन कळस
भाषा महेश, विग्यांन शेष
भ्रम में भटकी दुनिया भोळी (कवैं) राम नही हनुमांन बडो
ज्यौं भाषा सूं विग्यान बडो ··

ओ म्हारो छोटो सो परिवार

धनञ्जय वर्मा

ओ म्हारो छोटो सो परिवार
जिकै मे मैं, म्हांरै घर आळी
एक चांद सो बेटो, चांदणी सी बेटी
गिणती रा म्हे सदस्य च्यार।
मन्नै जिसी किसी भी मिल रही है मजदूरी
करणो है गूजर राखणो है सबूरी
महंगाई री मेहर सूं
आछै-भलै लोगां का ईमान डगमगायग्यो है
अकास में उड़ाण भरणिया
लट्ट देणी सीधा जमीन पर आग्या है।
टाबरां नै

'ढग-ढाळै' री इस्कूला में पढ़ाणो है
बीया नै आदर्श नागरिक बणाणो है
खान-पान चायै हळको होवै
पण ! होवणा चायै निरमळ-विचार।
डोळ सारु सिर घुसोणै खातर
एक आछो सो मकान ले राख्यो है
आया-गया री—आव भगत सारु
फलकां नैं भी थोड़ो-भोत भांख्यो है
माडी मोटी बचत करके
भविष्य खातर भी की वचारयो हूँ
जीया कीया जिन्दगी नै
अपणी औकात मुजब जंचरयो हूँ।
पराधीन होणो सबसूं बडो पाप है
मुं-बाणी पड्यै री पीठ पर, घोड़ै री एक टाप है
बस सागै चालसी, भलमणसाई
बण के रहणो है मिलनसार।
जिन्दगी की सगळी गर्द
हाथां सूं ही बुहारूंगा
दो पइसा मांगण खातर
कदे हाथ नी पसारूंगा

काळ रो कहर

गणपत सिंह

सूखा रो की हाल सुणाऊं
सित्यासी रे साल रो।
मानसून तो दगो दे गयो
सायोड़ो बण काळ रो॥

आयूणा रो बवै बायरो
मौसम बणग्यौ बड़ो दुखदाई
म्हीनां सैं बरखा रा बीत्या
इन्द्र देव नी छाट गिराई
आक कैर लीला वण फूल्या
ऐ अकाल रा लक्षण भाई
एड़ो काल न जोयो म्हे तो
कै वै दिरघ सौ साल रो।

सावण होवै हो मन भावण
रिमझिम मन्द फुहार रो
हरी मखमली साड़ी पहर्यां
धरती रे सिणगार रो
हीदा झूल रही ललनावां
गीतां री अनुपम रचनावां
आ सै बातां सुपनो हूं गी
जोय बवण्डर थार रो।

अबसर नदी रेत री वैवै
घर-आंगण सगळा भर देवै
सांझ सकाळै भर-भर तसळां
घरआळी उलीचती रैवै
कदै सडक पटरी नै ढक कै
बस अर रेल रुकाती रैवै
वी बखता रो हाल कहूँ की
मैंहगाई री मार रो।

भाव कुतर रा गेहूं जितरा
लीली घास निजर नी आवै
दूध दही घी री नी पूछो
हमैं छाछ रा भळका आवै
मैंहगाई सुरसा बण बैठी
जो मूंडो दिन-दिन फैलावै
बिन पानी सब सून अठै
यो आलम हुयौ कमाल रो।

जस तस कर नर काम चलावै
काळ कहर पसवां पर ढावै
गल्यो खाखलो भूख खिलावै
अस्थि पंजर खा वण जावै
निरख-निरख नै राम दुहाई
नैणां आंसू सूं भर आवै
दीख रह्यो सै जिगा निजारो
पसवां रा कंकाल रो।

विरख्या सूं मुगती भई

सन्तोष पारीक

अगूणै छेड़ै
वस्योड़ै एक गांव मैं
भूतां रो आतंक
खूब मच्योड़ो हो
लोग डरपीज्योड़ा
रात री आठ वज्यां
पछै
घर सूं बारै नीं
निकळता
लगो लग पड़्योड़ा
चार काळां
पछै
अवकाळै पांच सात
विरख्या हुणै सूं
लोगां रै चैहरां
मार्थ आयोड़ी

उदासी दूर हुवगी
अर पांच-सात
दिना सू भून थण
गाव में राऊडलीला
करण माहूं नी आवन सू
हथाई री चौकी
वैठ्या
सौ मिनखा मे
एक स्याणो मिनख
रमकू काको
कैयो
माइड़ां
मानाजी रै परमाद
करया पछै
भूनड़ा नीं आया
आपणै गाव मैं
दिन पांच-सात पछै
पंदरा भून एक साथै
भेळा हुयर गाव री
हथाई री चौकी पर आया
अर एक स्वर सू
कैवण माण्या
अब म्हारी मुगती
होणी है
थानै तप करता नै
म्हे कदै ही नी आवांला
सू'क
म्हानै भी भरोसो है सांई
क, निरखा रै कजर सू
बनजो बोवन करौ
अर म्हारा पेट पाळोला
इण रै कैवा।

तूटती लकीरां

दीपचन्द सुथार

किणी बदमास नै
सरवर रै
शान्त अर शीतळ जळ मे
भाटो न्हांक दियो
रीस खाय' र लैरां
उण नै पकड़ण सारू दौड़ पडी
पण/आपरी सीमा मे बंध्योडी होवण सू
आगै नी बद सकी
ईं दरद नै भूल'र
शान्त व्हैगी।
पण आपां/जुगां सू विणयोडी
रीती-नीति री बाता नै
बेधड़क लाघता
भाग रिया हां
जिग्यासावां नै/सुरा पान करा रिया हां
ईं वास्तै/जीवण रै हर मोड़ माथै
जैर घुळ रियो है
मिनख, मिनख रै सागै
अविसवास करतो
घुटण रै वातावरण माय
जी रियो है।

सांचो सपनों

केशव 'पथिक'

भेद भाव रो लद्‌यौ जमानो
मिनख-मिनख सब एक है।
धन्धा पूळी न्यारा-न्यारा
प्राण सबां रा एक है।
गाँधी बाबो सांचो केयौ, छुआछूत छूमन्तर वैग्यौ।
पगां पगरखी डील अंगरखी
पैरे ज्यू इन्सान है।
धन दौलत सूं वालो आनै
म्हारो हिन्दुस्तान है।
सपनो सब रो सांचो वैग्यौ, छुआछूत छूमन्तर वैग्यो।
आज प्रेम सूं ना'य धोय सब
मन्दिरये दरसण जावै।
हरि-जन बैठ हरि री पैडी
गंगा री गाथा गावै।
पाखण्डी पटकातो रैग्यौ, छुआछूत छूमन्तर वैग्यौ।
भारत मां रा पूत लाडला
नुंवा पंथ पै फूल चढ़ावै।
लोकतन्त्र की फेरे माळा
आन बान पै सीस कटावै।
नुवो उजाळो घर घर देग्यौ, छुआछूत छूमन्तर वैग्यो।
जात पात रा बन्धन टूट्या
ऊँच नीच रो कठै ठिकाणो।
खरो कमावां-नाम कमावां
चोखो लागै आणो-जाणों।
घर-घर मे गंगाजळ वैग्यो, छुआछूत छूमन्तर वैग्यौ।
सपनो सब रो सांचो वैग्यो, छुआछूत छूमन्तर वैग्यौ।।

००

आखा घर में धुँआ ही धुँआ

'त्रिलोक गोयल

भैया जी वणावे बैठा माल पुआ।
आखा घर मे धुँआ ही धुँआ ॥
कहत कबीर सुणो भाई साघो, कोई नैं धुंआड़ो मिलै कोई नैं पुआ।

सूखा लाडू फोडा-साँधा, गळी जेवडी नाऱ्या-बाँधा।
काँधा पकड़ एक दूजा रा, हाथी देखण चाल्या आँधा॥
नागा नाचे, धमका होवै, गाय हीजडा 'हुआ हुआ'।

मिनख हो गया गुदड़ा खाऊ, इण बस्ती हर चीज बिकाऊ।
बाण पटक के अर्जुन ऊभा, मगला कौरव काका, ताऊ॥
ऊँदा पड़ै साँचरा पासा, इब जिनगाणी हुई जुआ।

बैंट री ऊठै नींद री गोळयां, मैली गाद्यां, उजळी खोळया।
लजवती वेसरमी बाई, लांवा घूघट, खुल्ली चोळया॥
मिजमाना ती खीर-चूरमा, घर रा भूखा हँसैं सुआ।

आपाधापी धक्कम-धक्का, जीवो जाणैं सिरफ उचक्का।
घोरारम, गोधम, अंधारा, मार रह्या है चोका छक्का॥
कुडसी किसन कन्हाई, मोड्या भजन सुणावे नुवा नुवा।

ऊपर नीचै खींचा ताणी, भला भला रो उतर्यो पाणी।
देखो, सुणो, भींचल्यों, चावे, लरड्यां हांक रह्या सैलाणी॥
राज रोग सूं देश दुखी है, एक न लागी दवा-दुआ।

दोप मडै दूजा रै माथै, शीश सेवरा बांधे हाथैं।
बैंगण खावै, बुरा बतावें, टेर मिलावें माथया माथैं॥
'जीजा' जीवो दोरो होग्यो, माछी, माछर जुआ ही जुआ।
करम करम री वात कबीरा कोई नैं धुंआड़ो मिले कोई नै पुआ॥

ग़ज़लां

अरविन्द चूरुवी

(1)

थानैं कोईं ठा पड़ सकै, थे नसै मे छो,
मीता कोई भी हड़ सकै, थे नसै मे छो।
मिनखापणै रौ दिन कठै, है राकसा री रात,
भड किवाड ! रावण बड सकै, थे नसै मे छो।
हथोड़ी, मिनकी रा कान, ऊंदरा कतरै,
आ वानै नी पकड़ सकै, थे नसै में छो।
नागा अर बूचा, सबसूं कंईजे ऊंचा,
वां रै साम्ही, कुण लड़ सकै थे नसै में छो।
कैवण में आवै, पत्ता पतझड मे झड़ै,
बसन्त में भी पान झड सकै, थे नसै में छो।

(2)

थानैं कुण कह्यो कै कपूत सो लागै,
स्यावास ! म्हारा बेटा तूं सपूत सो लागै।
बगत साथै जिकौनी चाल सकै वो,
देखै जिकै नैं ही ऊत सो लागै।
बोली री मीठो तो साकर दीसै,
खारो दोन मिर में भाठा-जूत सो लागै।
भगवान पाछै डागदर नै बैद गिणीजै,
जे हुई पीसा— प्राण तो जमदूत सो लागै।
पांचूं आंगळ्यां मिळै, तो वणै एकता,
कसकर थे बांधो ! मुक्को मजबूत सो लागै।
बोलै, जद फूल झड़ै, उठा परो पड़ै;
मूरख दूर सूं ही राजदूत सो लागै।
वो घर रा रैवासी, तो घर छोड़ न्हाटग्या,
जाती वेळा बोल्या, 'अठै भूत सो लागै।'
घिरणा में वांरी सैग वातां लागै ज्है'र सी,
पण प्रेम में हर काम सहतूत सो लागै।
जिन्दगी अर मौत विचै औरत है पड़ाव,
'अरविन्द' जमानो आखो वसीभूत सो लागै।

(3)

पिराण डील मं नी मर्‌या-मर्‌या सा छै,
मानखा ई टेम रा डर्‌या-डर्‌या सा छै।
सगपण म्हारा-थारा, हता, सांतरा घणा,
पण आजकाळै लोह रो ज्यूं जर्‌या-जर्‌या सा छै।
सहेल्यां म्हानै पूछै, 'थारा घर घणां कर्‌या ?'
वै सोवणा अर मोवणा भर्‌या-भर्‌या सा छै।
लोग सूका-सूका चिप्योड़ै जवाड़ां रा,
पीळा पीळा छै, कठै हर्‌या हर्‌या सा छै।
निव्याणमं रो फेर, आडो पटकसी चौफेर,
सन्तोखी भवसागर सूं तर्‌या तर्‌या सा छै।

(4)

थे म्हारो दुयो, वै आदमी सफल बण ज्यासी,
म्हारो थारै आपरै असल बण ज्यासी।
थे तो हो रंगीन हवाई अे'रचूं मैं एक शे'र,
आपां मिलस्यां जीवन गजल बण ज्यासी।
मिरगानैणी ! होठ थां का फूल पांख सा,
म्हारै सूं मिलास्यो तो कमल बण ज्यासी।
थे रूप रा राणी सा, सिणगार रा सोढी,
मुळको तो सरी ! झूंपडी महल बण ज्यासी।
'अरविन्द' प्रेम सारै ताजम्हेल नी मांगै,
हियड़ै सारू हिवडो न्याव अदल बण ज्यासी।

अखण्डता रो दिवलो

रामनिरंजन शर्मा 'ठिमाऊ'

अखण्डता रो प्यारो दिवलो
जगसी सारी रात,
अन्धियारै नै दूर भगासी
आवैलो परभात।

मोटोड़ा महला मांही
रैहवणियां
सांप रै चरित्र नै
सागै लेर'जीवणियां
अै मिनख
म्हां पर
जै'रं री फुंकारां
नांखता रैवै है
अर म्है
बुत बणियोड़ा रैवा हा
छेकड़ कदताईं
बुत बणियोड़ा रैहस्यां
झुंगियां मांही मेळी है
म्हारली पीड़
आंगण रै बिरछ माथै
बैठी चिड़कली
वी भूख रै खातर
ची ची कररी है
राधिका रो दूध
वी वक्त नै सुखा दियो है
और पूरो शहर
रोगलो होण लाग्यो है
फेर भी म्है चुप हां
थोडा सा अै मिनख
लारलै वक्त सू
म्हारा हक खोसता रिया है
के उणां वास्तै
म्है थोड़ा हां
म्हारा मोन
म्हारो एक होणो
म्हां मांई
सूरज पैदा करैलो
अर ओ सूरज
अन्धेरो पैदा करणियां नै

आई. पी. एस , आई. ए. एस.···।
सेगा री न्यारी-न्यारी रेटां है···!
उणा रा पैदा होवण रा विचार सूं ले'र
उणा री पढाई-लिखाई रो सगळो खरच,
अर रकम रो चक्रवर्ती व्याज जोड'र
दूल्हो री कीमत आंकीजे।
जिण बेटी रै बाप रै खीसा मे
जित्ता वत्ता नोट है,
वो आपरी बेटी साल उत्तो ही नफीस अर
कमाऊ बीन्दराजा खरीद सके···!
वा रेट चार लाख सूं ले'र
आठ-दस लाख रपिया
तक आंकीजे,
विवा रो दूजो खरच—
अलग···।
आप भी दीन-दयालु सूं करोनी अरदास ?
के वो आपने एक अदद दीकरो देवे—
जको होवे आइ पी एस ···आइ. ए.एस···?

किसान रौ विस्वास

मईनुदीन कोरी

जग रूस्यां म्है, धाहै कोनी।
पण तूं रूस्यां, कर्म-री-बात है॥

जेठ - आषाढां री, तपती लूवां।
चोटी सूं एडी तांई, पाणी चूवां॥

रामायण रो रावण मरग्यो,
रावण रा रगत बीज ऊगा।
नीति ने नागी कर,
सूळी पर चढ़ती देखूं॥
मन म्हारो जद भर आवै॥

नर'री खाल ने बळती देखूं,
रीत कुरीति पळती देखूं।
हाका करती ने लाय झोंकता,
चिल्कारा करती देखूं॥
मन म्हारो जद भर आवै॥

भूंगारत री मार खावतो,
हळ वेल्यां मे झोळ खावतो।
लूण डळी सूं रोट्यां खाता,
जगपाळक करसाण ने देखूं॥
मन म्हारो जद भर आवै॥

दुनियां में सस्वा री होडां ने,
आपस रा मचता रोळा ने।
बापू री तस्वीर चितारतो,
अखबारां मे देखूं हूं॥
मन म्हारो जद भर आवै॥

जिन्दगाणी

सीताराम सोनी

जलम स्यूं मरवा तक रो टेम
किणी तरे पूरो कर देणो इज जिन्दगी व्है।

हँसवा कें रोवा तक
रोवा कें हँसवा तक
मेलवो अर खाणो।
काम धन्धा अर सोवा को अराम,
जिणने जिन्दगाणी री सज्ञा देवो।

अठिने अभावां स्यूं लड़तो
अणपड़ गरीब किसाण,
परकिरती रो सतायोड़ो,
सिरकार रो ठुकरायोड़ो,
वरग समाज सूं न्यारो
बैठ्यो झूंपड़ी रै मांय,
मिनखपणो निहारे (निरखे)
आ इज है के जिन्दगी...।

और, वठीने पइसांवाला
भोग विलास में लाग्योड़ा
घमण्ड में इतरावता
छाती फुलाय र चालणवाळा...
यो भी एक जीवण व्है,
आखरी जिन्दगी कै बला है...?
जकी आपरो न्यारो मातम रासे...
आतमा री पीड़ा स्यूं थाक्योड़ो मिनख बोल्यो—
समाज रो भलो करवो ही
जिन्दगी ने प्यार करणो है
ई को नाम है जिन्दगाणी...!

० ०

बादळी

चतुर कोठारी

नील गगन में बाट जोवतां,
आंख्यां ऊँची रँगी रँ।
आसा रो दिवलो जोडन्ता,
बाती बळ बळ फँगी रँ॥
हार जीत औ टीपणियां री,
बातौं जूटी जावँ रँ॥
तरस्या नँ क्यूँ छोड बादळी
किण देशां बिलमावँ रँ॥
हिवड़ँ हूक जगावँ रँ॥

बिन पाणी सब खेत सूक्या,
सूक्या नदी - नाळा ओ।
रूँख-बरख औ जंगल सूक्या,
सूक्या समन्दर खारा ओ।
तरस्योडा पँखेरू फड़ फड़,
यूँ तड़फ्योड़ा जावँ रँ।
तरस्यां नँ क्यूं छोड़ बादळी,
किण देशां बिलमावँ रँ।
हिवडँ हूक जगावँ रँ॥

घास-फूस औ कड़वी खूटी,
डांण्डा अब कई पावँ रँ।
खळी मिलँ नी, दाणा दिखँनी,
बाछर जद कांई खावँ रँ।
गौयां री सूकी आंतड़ियां,
सांसां निकळी जावँ रँ।
तरस्यानँ क्यूं छोड बादळी,
किण देशां बिलमावँ रँ।
हियडँ हूक जगावँ रँ॥

बादळी

महेन्द्र यादव

गरज गरज हिवड़ा नै फाड़ै
भूखा बाळक की ज्यूं धाड़ै
पण मुळकै कोन्यां बादळी

घर रा पांखी परदेश गया
चहुं दिश नैण उडीक रह्या
म्हारो जोवन सूख्यो जाय
पण मुळकै कोन्या बादळी

गालां री लाली न तावड़ो चाटै
उळझ-उळझ मारग मे लूगड़ी फाटै
इणतजार करतां बावळी होगी
पण मुळकै कोन्या बादळी

रूखां की ज्यूं गोरी रो—
सिणगार सूखग्यो
हिया रा उजास नै काळ चूंसग्यो
नेह रो समन्दर डूबतो ही जाय
पण मुळकै कोन्या बादळी

अजै पणघट पै पायल री
झणकार ना उठै
आंगण मे रूप रो दीयो ना जळै
चांदणी रात बैरी तन नै जळावती
पण मुळकै कोन्या बादळी।

म्हारा संजम री पाळ
अतरेताळ ।
अर, म्हे बावळी
देखती, रैयी
धुंआ, धुंआ होती
जिन्दगाणी नै ।।

मन रो बेलगाम घोड़ो
दौड़तो रैयो ।
आडे कांकड़, दरवड़ां दरवड़ा ।
चेतना रो चामट्यो
उलझग्यो, स्वेटर रा फन्दा ज्यूं
अर,
थारो, म्हारो हेत ।
जाणै, नन्दी रा
ढावा आली रेत ।।

चाहे प्राण गमाऊँ ओ

गणपत सिंह मुग्धेश

म्हारी प्यारी भारत माता, लुळ लुळ शीश नमाऊँ ओ ।
थारो शान सदीव बधाऊँ, चाहे प्राण गमाऊँ ओ ।।

यूं सदियां सूं गौरवड़ी माँ, जग जानी जग मानी ओ ।
थारो रूप सुरग सूं सुन्दर, थारो नैं लासाणी ओ ।
अणगिणयां हीरा री खरणी, किण किण नाम गिणाऊँ ओ ।।

गंगा जमना विन्ध्य हिमाळै, चार धाम री लीला है ।
काशी पुष्कर तिरपति सैं, तीरथ घणा छबीला है ।
मेळै खेळै तीज तिवारा, थारी शोभा गाऊँ ओ ।।

धजो तिरंगो फैरातो मूं, 'जयहिन्द' बोल्यो जाऊं अे।
महाकाळ रो रूप दिखातो, आगे बढ़तो जाऊं अे।
वैर्‌या री लाशो रो ढिगलो, उण री भोम लगाऊं अे।।

अपणा इण माटी रे माथैं, दुश्मण चालां चलिया है।
अपणे ही भायां ने बहका, अपणे सामां करिया है।
सैणा ने घर समझा ताऊं, दुश्मन मार भगाऊं अे।।

चैंतर कोटि थारा बेटा, कदी ना आपस झगड़ांला।
अपणै घर री सारी वातां, थारी इंच्छा सुल्टांला।
धरम प्रान्त सब पाछै पैली, भारत रो कहलाऊं अे।।

○ ○

मिनखड़ा सोच विचार

जुगलाल वेदी

बैठ्यो कलजुग पाँव पसार।
मिनखडा इव तो सोच विचार।।
गधेड़ो खेतां बीच चरै—गावड़ी खूंटै भूख मरै।
कोयलड़ी सुरीली तान करै—ना वीपै कोई ध्यान धरै।।
काग पै बजै पट्या पट ताळी—कि गुमसुम बैठी कोयल काळी।
कागलां जय-जय कर्‌यो लंगार।
मिनखड़ा इव तो सोच-विचार।।
झूंठ बोलै हैं मणा-मणा—कि झूंठा हांड वण्या ठण्या।
झूंठ का लम्बा लम्बा हाथ—पसरगी डाळी डाळी पात।।
पगल्यां पगल्यां गई समाय—साच को काम रत्ती भी नाय।
साच पै पड़ै दड़ादड़ मार।
मिनखडा इव तो सोच विचार।।
झूंठ कररी है तांडिव नाच—जठै मिलै रत्ती ना साच।
के तसील पंचात जेल—झूंठ की भरल्यो गाडी रेल।।
रिश्या भोळी जनता नैं चूस—दोनु हाथा हूं लेवे घूंस।

घूस को होरयो गर्म बजार ।
मिनखड़ा······
बाबूड़ा नहा धोय उजळा होय—कि चाल्या जाणै सामरे कोय।
टांग के अन्तर की फोई—क जाणै 'एक्टर' है कोई ॥
जावै बैठ दफ्तरां मांय—काम क हाथ लगावै नांय ।
कि जाणो घर की है सिरकार ।
मिनखड़ा······ ॥ 4 ॥
पान जरदे को मुंडे मांय—कि लम्बा लम्बा बाळ बढाय ।
कोई जै जावै काम री बात—घूस बिना करै नी बात ॥
अयां सै धोळै दोफारां—कि देखो कियां गजब होरया ।
गजब होरया धोळै दोफार ।
मिनखड़ा······
देश में बढिरयो आतिकवाद—देश दिखै हो तो बरबाद।
हिंसावादी बणरया भोत—अहिंसक मरै कुत्तां की मौत ॥
नकटा, नागा नमक हराम—गंवता, गुंडा, गिडक गुलाम ।
अणां को कद होसी सुधार ।
मिनखड़ा······
चूस भोळी जनता रो रगत—कहावै साचा देश भगत ।
पड़्यो करनी कथनी में फेर—पलटता कोन्या लागै देर ॥
अयां का अगवा हो गया आज—जणां क शर्म रही न लाज।
बणै सै गांधी, नेहरू खान गफार ।
मिनखड़ा इब तो सोच विचार ॥

○ ○

ओ म्हारो गाँव है

ओम पुरोहित 'कागद'

ओज्यूं पीपळ री छांव है
मफ्नी-जयली नाव है

वूक हथाळ्यां ठांव है
हां जी, ओ म्हारो गांव है।

जद दिन विमूंजै
जगै दिया
चांद रै चानणै
टीगर खेलै दड़ी मेडिया।

बिजळी रै खम्बां भैंस बंधै
मारां री बणै तणियां
बिजळी रो खाली नांव है
हां जी, ओ म्हारो गांव है।

करसां बोवै साऊ खावै
बापू रै नारां रो
गांव मांय खाली नांव है
बिजळी कड़कै ठण्ड पड़ै रे
करसां खसै खेत मांय
खातां मांय जमीदार रो दाव है
हां जी, ओ म्हारो गांव है।

अंगूठा री नी सूकै स्याही
मघली जाई जगली परणाई
मा गैणा रख रिंधिया न्याई
साहूकार री बैंयां मांय
म्हारी संगळी पीढी रो नांव है
गांव सगळो पड्यो अडाणै
बैंकां रो खाली नांव है।

क—मानै करजो
ख—खेतां खसणो
ग—गरीबी
घ—घरहीन
इस्सी बारखड़ी
गांव री चौपाळ है।

पाँच स्यूं पच्चीस रा टीगर
खेतां रो'यां चरावै लरड़ो
माठर फिरै सैं'र मांय
गाँव मांय स्कूल रो खाली नांव है
हाँ जी, ओ म्हारो गाँव है।

अणभावणा
अणखावणा
बणे नेता वोटां रै ताण
ठग ठाकर है म्हारा
गेडी रै ताण।
अडाणां री कहाणी कै
खेत दवाणा री वाणी दै
घँटी मोम वोट नखावै
जीत परा फेर ढोल बजावै
लोक राज रो खाली नांव है
हाँ जी, ओ म्हारो गाँव है।

अटी ढीली खेत पाघरो
अटी काठी खेत धोरां पर
अळगो-आंतरो
मन्तरी री सुपारसां
खेत मिलै सांतरो।
खेत खतौन्यां
हक हकूकतां
जमीदार रै हाथ मांय
गाँव बापड़ो फिरै गूंग मांय
चाहै कूंटां पटवारी रो दांव है
हाँ जी, ओ म्हारो गाँव है।

आदमखोर

वासुदेव चतुर्वेदी

घपला
गड़बड़ घोटाला
राम भजो
फेरता जाओ
उलटी माळा
खोटा करिया काम
ब्हैईग्यो जद
रापट रोळियो
ऐड-बेड उटपटांग
मनमते झूडे
चक छाठी अर
मस्त रेवे
सांच बात यूं केवे
गाडरां री पीठ पै
आयांडी ऊन ने
कोई नी छोडे
राम भजो
चांदी रो चम्मच
सोना री कटोरी
जो भी हाथ लागे
ले उडो अर
उडा ओ मज्यो
काई के रिया हो
राम धरम राखो
अरे अणी हाथ दो
वणी हाथ लो
झगडो न झांटो
काम पड्यां पै
फेंको नोट अर

काढ़ो कॉटो,
बन्द दरवाजो
खटाक सूं खुल जावै
काम व्है जावै
रण सूं पैली
चाँदी री चकमक
नोटां रा तडगिया
उछलावै
धन भाग
धरती रा जाया
धरती रा मनखां ने
डकारता जावै
भगवान रे घर सूं
पइसा वाळा लोगां ने
मोटी बीमारी लगावै
गरीब गुरबा बापड़ा
फूंकर ऊपरलै पाडे आवै
जतरो लाम्बो जूतो व्है
वतरी इज जियादा
पालिस छावै
उल्टी गंगा जद बेवण लागै
तो
धाप्या ने धपावै
भूखा ने तरसावै
पाणी नी वरसै जद
अकाल री ओलखाण
नोटां री गड्डिया सूं
निजर आवै
बगला री पाँखा
पाणी मे डूबे के नी डूबे
पण
व्हो एक टाँग पे उभो व्है'र
तपस्या जद करै
उण नै देख अर

भोळी भाळी माछलियाँ
जानें सूं जावै
जै गोपाल/जै हरि
भलो करी रे करतार
गंजा ने नाखून दिया
जिणा सूं आपणो टाट खुजावै
आ गंगा
यूं ई व्हेती आई है
यूं ई वेवेला
भरी गाड़ी मे सूपडा रो
काई बोझ
पण
आदमी तो आदमखोर व्है'र
जीवैला ।

○ ○

आँगणै पड़्यो बीज बोल्यो

विश्वम्भर प्रसाद शर्मा

धरती रै आँगणै पड़्यो बीज बोल्यो—
सुण मिनख ! कुदरत बड़ी जब्बर है ।
सार नै खीच'र म्हारै मैं बाँध दियो
समझ नै नितार'र मन्नै काम मिलै ।
मुँमाँग्यो वर मिल सी ।
धरती धन जण सी ।
सार सैचनण हुसी ।
मेहनत मुळक'सी ।
मानखो पूजीज ही ।
नूवौ वगत थारी आतमा मैं जाग सी—
जुग बदळसी । धरती कै आँगणै पड़्यो बीज बोल्यो ।

○ ○

घुळरी भाँग समन्दर में

शिव मृदुल

आज नहीं मीठास रैहयो है, गन्ना और चुकन्दर में।
मिनखाचारो तड़फै तरस्यो, घुळरी भाँग समन्दर में॥

पाणी रो है काळ जमी पै,
ओ दुख जावै सहयो नहीं।
मोती - मानस - चून मायनै,
रहिमन ! पाणी रहयो नहीं॥

पाणी तज नै सून हुआ सब
व्यथा कठै जा गाऊं म्है ?
ठाँण-ठाँण पर भैंस बँधी है,
किण नै बीन सुणाऊं म्है ?

रीति-नीति अर सज्जनता सब, उळझी फिरै लफन्दर मे।
कणी जगां री तिरस बुझाऊं, घुळरी भाँग समन्दर में॥

मोटा - मोटा शेर - बवर्ची,
छोटां पर नीत घूरै है।
झपट गरीबां री रोटी वै,
घी-शक्कर मे चूरै है॥

मरजी हुवै ज्यूं फसल नोट री,
बोलै, काटै, ऊरै है।
अरज करां तो आंख्यां काढै,
दांत्यां करै लबूरै है॥

मनै बतावो फरक काँई है, इस्या मिनख अर बन्दर में।
मिनखा चारो कठै तलाशां, घुळरी भाँग समन्दर में॥

देख दशा धरती री काँपै,
अन्तस गाँधी - गौतम रो।
और मुहम्मद, नानक, ईसा,
मर्यादा पुरषोत्तम रो॥

यूरेनियम रा बीज जमी घर,
जगां-जंगा अंन बोवै है।
सत्य-अहिंसा शब्द-कोष में,
दो-दो सुळक्यां रोवै है॥
जगां-जगां चाणक्य विराज्या मठाधीश, बण मन्दर में।
चौफेरी बारूद बिछ्यो है, घुळरी भांग समन्दर में॥
कथनी अर करनी रै मांही,
जमी-गगन रो अन्तर है।
छुरी बगल में पण मुखड़ा में,
राम-नाम रो मन्तर है॥

सौ चूहां रो करै सिरावण,
बिल्ली तीरथ न्हावै है।
शस्त्रां रा बोपारी सगळा,
गीत शांति रा गावै है॥
सांठ-गांठ करवावै स्याणा, पौरस और सिकन्दर में।
टुकड़ा-टुकड़ा धरती बंट री, घुळरी भांग समन्दर में॥

मिनखपणो मत भूल

जयसिंह चौहान

जगत बणाणियो आ मिनख जूण
घण निरांत में बैठ'र घण निपुणाई सूं बणाई
इण रचणा खातर वो विधणा
कितोई बिखो काढ्यो हुसी
इण में कोई दो राय नीं कै
मिनख रै बंधवा सागै अणूथो अंधारो छंट'र
उजाळा री झालर तणगी

इण तरै मूं मिनख विसालता री मूरत बणग्यो
ओ मिनख नूंवां विचारां रो घर हुइग्यो
एड़ो जीवण जिस्यो मिनख रो
दुनिया मे फेर कठेई शायद इज मिलै
आ कुदरत री देण एक मातर मिनख नै मिली
पण कानी देखूं तो यू लागै
जुग पर जुग बीतणै उपरांत इण में ऊपर-ऊपर'ली सफलता
भले ही हिलूंरा लेवण लागी
जीवण री ऊंडी अर आतम चेतणा री सफलता
को पाई नी
लूंठो अर फूठरो मिनखपणो
सतरंग इन्दर धनख रै ज्यूं
पसरतो नी दिखणो चाहिजै
दिखावा सूं मिनख नी वणै
मिनखाचार सूं मिनख वणै
आज री वगत मिनख रे माजना मे
आ कांई फेर बदळ हुइगो के
ओ आपणै जीवण रूपी बळद नै
भाटा मे हांकण लाग्यो
इण नै रूपाळी माटी रा खेत
अर भाटा सूं भरी डूंगरी रो खयाल कोनी रह्यो
आ दुखती बात है
मिनख, मिनख नै मार'र राजी हुसी
मिनख, मिनख पर 'आघात कर' खुसी मनासी
इस्यो बोदो टैम और कद समझ्यो जासी
इण हरकतां सूं किण तरे मिनख जूण उजागर हूवेली
जिन्दगाणी तो दिवले री जोत ज्यूं बळणे सूं सफळ हुवे
जिन्दगाणी तो त्याग सूं अर माटी में मिळ'र
वलिदान होवण सूं अमर हुवै ।

० ०

गीत

रामनिवास सोनी

मुख रो सावण बरसै उण घर
आंगणियै दो फूल खिलै।
जे माळी हुसियार हुवै तो
विधना रा ई आंक टळै॥

धरती आमै बीच रुखाळो क्यारी क्यारी सोवणी
डाळी डाळी निजर पसारां बेल फळै नी चौगणी
बागां बीच गुलाब सरीसा फुलड़ा नाचै प्रीत पळै।
जे माळी हुसियार हुवै तो—

बाग आपणो आपां माळी दोस करम नै देवां क्यूं
लिछमण रेखा मती उलांघो भाग भरोसै रैवां क्यूं
छोटो आंगण सुख सरसावण मन मरजी रो मोद मिलै
जे माळी हुसियार हुवै तो—

गंधारी रे सौ सुत जाया पांडव पांच धनुरधारी
भीव सरीसा जबरा जोधा अरजुन बल रो भण्डारी
अेक चन्दरमा नौ लख तारा चांद विन्या क्यूं तिमिर ढळै
जे माळी हुसियार हुवै तो—

अणचाही आ बेल पसरगी धरती बोझ सवै कोनी
रोटी थोड़ी मिनख मोकळा लुटती लाज रवै कोनी
माव उघाडा गूंगा गेला किण विध जीवै गिगन तळै
जे माळी हुसियार हुवै तो—

सिध सपूती जामण धरती जिणनै मती लजाईजै
मैनो सो परवार पाळजै बांळद मती बधाईजै
जिण आंगण जीवण रस छळकै उठै सांति सुख बेल फळै
जे माळी हुसियार हुवै तो—

○ ○

उधार रा आँसू

सतिकर खटका राजस्थानी

एक आखर भी तो नी बदल्यो
सगळा ज्यूं रा ज्यूं है
सूळी पर यीसु लटकेड़ो है
लोई रा टपका
धरती नै लाल बणा रैया है
सुकरात विष रा प्याला नै
घूंट घूंट पी रैयो है।
महावीर सुण नी सकै जुग री पीड़
बगत घणा धम उण रै
काना मे कीला ठोक रैयो है
गौतम अँधारै अँधारै उठनै चल्यो गयो
गांधी रै सामी छाती
धड़ा धड़ गोळ्या मरी जा रैयी है
मोटा मिनख ज्यांरा नांव सुण नै
माथो आपू आप नीचै झुकै
वे सगळा पोथ्या मे व्हेग्या बन्द
घरां री दीवारां नै देवी देवता री ठौड़
नट नटण्यां रा चित्राम लाग रैया है
जमानो गूंगो व्हैग्यो
सांच काळ मे बळग्यो
दरवाजा पर नागफण्या उग रैयो है
एयरकंडीसन कमरां मे सांप
चैहरा पर मिनख रो चौखटो चिपका सूं सूं करै
सांचा मिनख आंतरा सू ही डरै
उणनै मन छेडो वै जग री पीड भुलावण सारू
सोम रस पीयेड़ा है
उणारी आंख्यां मे जे आंसू है
सगळा मगरमच्छा सूं उधार लियोड़ा है।

कियाँ दहै जावै है

जितेन्द्रशंकर बजाड़

आज है जो गाज है पण काल ?
काल रो दिन
थारो है न म्हारो है, आज'र कालरै-बीच
आगो घन अन्धारो है
इणीज अन्धारे री बात सूं डरो मत
सोनल री बात करो मत
काल रो दिन
आज सूं न्यारो है
[illegible] अन्धारो ईज सी
आगे घणो उजाळो है।

घर-[illegible] री बैठा [illegible] चिड़ी
गावै है [illegible] पहूपाई
नीं भूले है चिड़ी
सूरज रो फेर आवणो अर जावणो
पण
अब मिनख ई भूलै है सूरज रै आवण पाछै
ऊगण री बात
मत 'मीत साथै, [illegible] साथै,
घोर [illegible] [illegible]
मर जावै है आपण [illegible] सूरज री धूप।
[illegible] री [illegible] [illegible]
मावस—

अस्यो हो म्हारो गाँव

नन्दकिशोर चतुर्वेदी

एक दिन
म्हनैं मिल्यो हो
लहराता खेता रे पसवाड़ै
हरियाली फसलां री चादर ओढ्यां
रेजा री बुगतरी में
उंगण-निंदियो गाँव,
म्हैं
जागरण रा ढोल ढमाका लारैं
मुळक'र गायी परभाती
लेवतो रैंयो
सुख सपना सूं पातो
टुकड़ा-टुकड़ा में
देवतो रैंयो विस्वास री बानगी
अर
किस्त दर किस्त
जागतो रैंयो गाँव
व्हो दिन
म्हैं देख्यो अठैं
बादळ सूं बरसतो हेत
हवा सूं लहराता खेत
रेत रा धोरा में
मुळकती मोठ बाजरी
अर
पसेवा सूं सिंचियोड़ा गेलां मैं
हरखावतो रैंयो गाँव
धीरे धीरे
उगमणा-उजास नें
लुभावण लागी आथूणी आभ
वन्दना रा नाम पर

षड़यन्त्र,
अर नूंवी नूंवी करामात
बदळाव री बात पर
मौसम में उगवा लागी
गाल हुरी बतियां

अर बाग बगीचां री जगै
पसरवा लागो कंकरीट रो जंगळ
आदमखोर बण शहर
निगळनो रीयो गांव

अबै
नी हरियावनो खेत
नी कूकतो कोयला
च्यारूमेर फिरै
धूळो उड़ाता इंजिन
संस्कृति रा गरब गुमान सूं
रीतनो रोबोट सो आदमी
अर
पांगळा पगां सूं
घरै जावनो गांव।
(सदगुरावनो गांव)

अबै म्हैं
गोय दियो हूँ
टूटा टूटा चेहरा में
म्हारै गुमेरो भूप
अतीत री सिनयार
मेळ मुलाकात
अर ईमान धरम सूं कहूँ तो
म्हारी पोर्थी
वौ रा एक सपना है दीसा हां
दूजा रे कुमाव
आवो हो म्हारो गांव
आंतोड़ दौड़

रजपूतण

ज्ञानसिंह चौहान

विसवास करै, विसवास भरै,
विसवास हियो रजपूतण रो।
जिण दिन्न डिगै विसवास,
व्हो, मरण दिवस रजपूतण रो॥

रंगड आ रजवट्ट जणै,
रजपूतण आ रजपूतण है।
खल वरल मचै, अै जीव हुवै,
रण चण्ड नहीं, रजपूतण है॥

विसवास वासरी ठौड अठै,
वखत वखेरे विरदावळियां।
तन, मन, धन दुरगाण दिये,
रजनै रजपूतण छांवळियां॥

धिन्न घडी धिन पावन पळ व्हो,
रजपूतण नै जिण वेळ घडी।
साखी साँच, मायरे खातर,
आ बोटी बोटी कट्ट पडी॥

ममता, समता, खिमता, छिमता,
विधना विध विध सूं भरी पडी।
रजपूतण रे रग रग में आ,
निछरावळ री निजराणं भरी॥

सूरज रो सन्देसो

विद्योत्तमा वर्मा

सूरज उगियो
होळै-होळै जाणै कोई
सुघी नवेली बीनणी रो
घूंघटो उठायो।
दरसण हुया,
कमळा, मुळकता,
प्यारा सा मुखड़ा रा
रंग-रंगीलै संसार रा।
दूजै पासी
समन्द रो पाणी,
उछळ-उछळ कर
तीर सूं मिलण लाग्यो।
चारूं दिसावां में,
पंछी, पंख पसारतां,
किलकारियां भरतां,
सोता मिनखां नै जगावण नै
सूरज रो सन्देसो देवण नै,
उडान भर रैया हा।

खुला पाट पुरीजण लाग्या।
बूढा-बडेरा, मांग-लुगाई
न्हावै-धोवै, गीत गावै,
आ आई टाबरियां री टोळी,
नाचै कूदै, धूम-मचावै।
समन्द री लहरां भी,
आपोआप लहरां में
रूसै रेत री नाचण लागी।
सुखी समन्द,
सुखी धरती,

पूरी ताकत
झिलमिल करती आभा
चमकण लागी।
अरे मिनख
करलै भलो उपयोग,
इण उमग, फुर्ती, ताकत रो।
आळस नै त्याग;
कुटुम्ब, समाज,
राज, देस
सब री आसा नै पूर

मत भूल भाईचारा नै
मत भूल देहरी
छिण भगुरता नै,
मत भूल
समै रा बदळाव नै
सब सूं बडो धरम है
मानव धरम,
बड़ो करम है
करतब पाळणो
जुट जा तू आपरै करतब म,
मिनखां रा धरम म
छिन-छिन रा उपयोग म;
गुण ले सूरज रा सन्देसा न ॥

पारख्याँ

कमला जैन

ऊँचो चढ़, ऊँचो गयो,
घूमै चारूँ गेर।
मेल दिखावै जगत नै,
वो अणदीठ्यो रेर। (कृत्रिम उपग्रह)

खावै नी पण पीवै है।
सांसा नी पण जीवै है।
पगल्या नी पण चालै है।
पूछै नी पण कैवै है।। (कम्प्यूटर)

एक मूण्डो, एक कान है,
बात करण रो काम है।
दूर - दूर मन्देसो पूंचै
कोई उण रो नाम है। (टेलीफोन)

म्हैं केवां वो सुणतो जाय,
हिवड़ो वोनां सूं भरतो जाय।
चावां तो सगळो कै'देवै,
नातर छानो-मानो रै'वै। (टेपरिकार्ड)

○ ○

काळी बादळी

सुकान्त 'सुमि'

राह निहारै मरुधर थारी
आओ काळी बादळी।
प्यासी धरती आज पुकारै
आओ काळी बादळी।।

प्यासी धरती, प्यासा मरुधर,
मिनख पखेरू प्यासा तरवर,
तपै तावड़ो-शिखर दुपहरां,
अम्बर सूं अगनी बरसावै,
सूरज री किरणां तड़फावै,
उमड़-घुमड़ बादल बण जावो।
आओ काळी बादळी…

भूखा प्यासा फिरै जिनावर
सूखा सारा खेत है
आंधी अर तूफान रै संग मे
उड़े सुनहरी रेत है
थांरी आस लगायां बैठ्यो
धरती रो किरसाण है॥
आओ काळी वादळी···

धोरां रो सिणगार पुकारै
खेजडला अर फोग पुकारै
मिनख गया परदेश है
झर-झर कान्ता नीर वहावै
धर जोगण रो भेष है॥
आओ काळी वादळी···

उमड-घुमड नभ मे छा जावो
अम्बर सूं इमरत बरसावो
मोठ - बाजरी और काचरी
खेता मैं इतरी उपजावो
मिनख जिनावर रैवै नी भूखा
आओ काळी वादळी···

एक हाथ घूँघटा में

जगदीश सैन

एक हाथ घूँघटा मे, छोटो घणो मुखड़ो,
छोटो-सो है तन पण, मोटो घणो मूगड़ो।

नार मा[illegible] नथडी ने, पगां मांय पायल,
झूमरियाँ है [illegible] मांय, नैण मांय काजल,
पग ने [illegible] धोटो, बाज [illegible] पायल,
घणी [illegible] [illegible], दनो [illegible] [illegible]।
एक हाथ ···॥

है बीस बरस बनो, बनी दस साल री,
बनो हांचो चाले पण, बनी धीमी चाल री,
भीगी-भीगी पलंका सुं, टेढी-टेढ़ी भालरी,
मुं तो सीधी चालू पण, बनो जाणे कूकड़ो।
एक हाथ···॥

रत्ती भर खांमी कोनी, बाई थारा तन में,
म्हाने थूं बता दे गोरी, काई थारा मन मे
सहेल्यां ने सोच लागो, सोच लियो मन में
बनो रयो एक रात पण ले गयो फूलड़ो।
एक हाथ···॥

जोशीडा मे जोश घणो, बोल्यो ऊंची राग मे,
काई तो कसर कोनी, बाई थारा भाग में,
जिन्दगी तो जल गई, मिल गई खाक में,
जिन्दगी री यात्रा मे, घणो होसी दुखड़ो।
एक हाथ···॥

० ०

मेरो देश

दीनदयाल शर्मा

कागद रै खेतां माय
आंकड़ां री फसलां देख'र
हिवड़ो उडार होरयो है
कै मेरो देश
इक्कीसवी सदी माय
जारयो है।

अग्नि परीक्षा

बीनणयाँ
बाळी नी जावैं
आ तो अग्नि-परीक्षा है
इण माय
सीता बी नी बच पावै।

चक्कर

हरीश व्यास

पी'र जावती लुगाई नैं
धणी होळैसीक कैवण लाग्यो—
भरवण
अबकै कागद थोडा ढंग सूं लिखजे
नीतर व्है जावैली गड़बड
क्यूं कै प्रौढ-सिक्सा रै चक्कर मे
बापू ई पढण लागा है धड़ाधड़।

प्रगति

एक नेता
दरजी री दुकान पे
देवा ग्यो कुर्ता रो नाप,
ली दो 'तोंद' रो नाप—
पीनो पड ग्यो छोटो,
दी दो माथै हाथ
जदी या समझ मे
आई बात,

आखर अणी देस रो
भाग क्यूं फूटे है ?
क्यूं कै देस रै
विकास रो
केवल थोइज सूचक है।'

कालीन्दर नाग

इब्राहिमखाँ सम्मा

म्हूँ तो अजै ताँई
जाणतो हो कै इण
धरती माथै,
एक ही तरह रा
कालीन्दर नाग हुवै हैं,
और वैं काट खावै
तो मिनख-मानखी और
जिनावर सगळा ही,
बिना टिकट सुरग लोक
चला जावै है,
पण अबै मनै ग्यान हुवो
कै धरती माथै कालीन्दर
नाग है घणा,
जिको आपरो विष टैम, टैम माथै
जनता नै देय नै
दुखी बणावै है।
म्हारा देश रा लोग क्यूं
खावण में मिलावट करै है
बांधां रो सीमेंट क्यूं
रातूं रात मोटा सेठां रै
गोदाम री लाम्बरा शोभा बढावे है।

नकली चीजां क्यूं असली
रै भाव भगवान रै नांव री
सौगन्ध सूं विकै हैं।
दहेज रै खातर कितरी
ही कन्यावां बिना ब्याह रै
रह जावै है।
दहेज रा लोभी क्यूं आपरी
जोडायत नै जळाय हाथ सेंकै है।
इण देश री धरोहर,
मूरतियां क्यूं विदेशां री
शोभा बढावै है
हित्या नै बलात्कार
जैंडा अपराधां री सख्या क्यूं
दिन दूणी रात चौगुणी बधै हैं।
आतकवादी क्यूं आपरा
सवारथ खातर लोगां री
हित्या करै नै डकैतियां
घालै है।

नित अखबार देखल्यो

सम्पत सिंह 'सरल'

काळजा मे चालती, दुधार देखल्यो।
नित देख्यां सागै, तिल री धार देखल्यो॥

तर्ना-मर्ना कै आडी, लोगां भीत चीवली,
पाड़ोसी हेलो पाड्यो, तो आंख मीचली,
कुण है कुण सूं कमती आर-पार देखल्यो॥

भर जिनगानी काळी-पीळी घूणी मे घुटी,
लाय मूं जे बचगी, चौड़े आबरू लुटी,
द्रोपदी रो चीर, तार-तार देखल्यो॥

कोयली कूकावै, चील कामला तिरै,
जण-जण जैर भरेड़ो, मौत साथ मे फिरै,
आंख्यां तकती कांवळां री डार देखल्यो ॥
जात-पांत, धर्म भेद, मद भाषा को वढ्यो,
हाथां ले हथियार भाई, भाई पर चढ्यो,
सोळा आनां सांच नित अखबार देखल्यो ॥

००

जका बखत नै सैसी

वासु आचार्य

जीवण छाई रात अन्धारी
पण रोज नी रैसी
छटसी-छटसी दुःख रा बादळ
सुख रा बाळा बैसी
जीवण छाई रात···

राख हियै थोड़ी सी ध्यावस
मौसम बदळै ला
पड्योड़ा चौरावां मायँ
वैगा सम्भळैला
दुःख रो जीवण बणसी कहाणी
चकवो चकवी कैसी
जीवण छाई रात···

माड़ो मौळो वखत आवतो
और जावतो रै'वै
बै'ई गाई जै इतिहासां में
हंसता सै'दुःख सै'वै
बखत वां रै ही सागै होसी
जका बखत नै सैसी
जीवण छाई रात···

हिम्मत आळां हाथां आगै
धूजै पहाड़ समन्दर
फूलां री माळा बण जावै
डसणां नाग कळन्दर
बंजड़ भूमि मांय दूध री
घी री नदियां बैसी—
जीवण छाई रात…

० ०

ग़ज़ल

अर्जुन 'अरविन्द'

सर्म री बिछावण पर, लाज री लीरां बिखरगी।
कुण री करियोडी खोड़ कुण रै माथै उतरगी।

अणछैव अँधारो जाणै किण परबत पौढ्यौ
पीडा री रेखावां, रंडापा रै लार करगी।

चरड़चूं बोले व्यवस्था री गाडी रा पहिया
योजना रा लवादा ओढ जिनगानी पसरगी।

कानाफूसी करतो बायरो पोळ मे बिछ्यो
करम खोड़ली नार ज्यूं हियै री आस बिसरगी।

बेईमानी रो भूतो हाथ मे ईमान रै
बेसरमी रा फूल नीत आंगण-आंगण धरगी।

बायरा मे निपजती नित नवा नारां री भीड़
धरती री झोळी अब भूख रो फसल सं भरगी।

० ०

सम्पर्क-सूत्र

1. श्रीचन्द्रदान चारण, नवयुग ग्रन्थ कुटीर के पीछे, कोट गेट, बीकानेर
2. श्री नानूराम संस्कर्ता, लोक साहित्य प्रतिष्ठान पो० कालू-334602
3. सावर दइया, 3 च, 14 पवनपुरी, बीकानेर
4. श्रीमाली श्रीवल्लभ घोष, सुगन्धगली, ब्रह्मपुरी, जोधपुर
5. श्री जेठनाथ गोस्वामी उप जिला शिक्षा अधिकारी बालोतरा (बाडमेर)
6. अमोलक चन्द जांगिड विसाऊ (झुंझनू)
7. उषा किरण जैन, अतिशय क्षेत्र बाड़ा, पदमपुरा, जयपुर
8. नृसिंह राजपुरोहित, पुरोहित कुटीर, खाण्प-344036 (बाडमेर)
9. मीठेश निर्मोही, उम्मेद चौक, जोधपुर-6
10. रामनिवास शर्मा, प्रिंसिपल, राजस्थान बाल भारती, बीकानेर
11. शिवराज छंगाणी, नत्थूसर गेट, बीकानेर
12. मीठालाल खत्री, प्र० अ०, रा० उ० प्रा० विद्यालय, चौराऊ, (जालौर)
13. पुष्पलता कश्यप, हनुमान मन्दिर, कचेडी डाकखाने के पास, जोधपुर
14. महावीर प्रसाद पँवार, अध्यापक, राज० डागा वि०, श्री डूगरगढ़ (चूरू)
15. गौरीशंकर व्यास, व० अ० रा० मा० विद्या० बागोड़ा (जालोर)
16. भीखालाल व्यास, प्र० अ० रा० मा० विद्या० अजीत, बाडमेर
17. उदयवीर शर्मा, प्रधा० रा० उ० विद्या० गुढ़ा पोंख (झुंझनू)
18. श्री विष्णुदत्त शर्मा, रा० उ० प्रा० वि० सरवाणा, जालोर
19. श्री केशव आचार्य, आंकोला, वाया भूपालसागर (चित्तौड़गढ़)
20. प्र० ना० कौशिक, बिहाणी शिक्षा महाविद्यालय, श्री गंगानगर-335001
21. कल्याण सिंह राजावत, चिताबा हाउस, झोटवाड़ा, जयपुर
22. श्यामसुन्दर श्रीपत, प्राचार्य, अ० श० गोपाल हा० सै० विद्या, जैसलमेर
23. धनञ्जय वर्मा, नगर परिषद के सामने, बीकानेर
24. गणपतसिंह, प्र० अ० रा० मा० विद्या० गुगा, (बाड़मेर)
25. सन्तोष पारीक, प्र० अ० रा० उ० प्रा० विद्या० नई आबादी, लूनकरणसर, बीकानेर
26. दीपचन्द सुथार, रा० उ० प्रा० विद्या० न० 1 मेडता शहर (नागौर)
27. केशव पथिक, शिक्षक, रा० उ० प्रा० विद्या० (कचहरी) मु० पो० कपासन चित्तौड़गढ
28. त्रिलोक गोयल, अग्रवाल उ० मा० विद्या० अजमेर
29. अरविंद चूरवी, ओसवाल पचायत मार्ग, चूरू-331001 (रा०)

30. रामनिरंजन शर्मा 'ठिमाऊ', साबू उ० मा० वि० चिलानी (झुंझनू)
31. हनुमानसिंह पूनिया, रा० उ० प्रा० विद्या० धीरवड़ी वाया रामपुरादेरी, (चुरू)
32 मगरचन्द्र दवे, व० अ० रा० मा० विद्या०माण्डावास (पाली)
33 मईनुद्दीन कोरी, प्र० अ० रा० प्रा० विद्या० कोरियो का बास न०1 बीकानेर
34 सुरेश 'उदय', वरिष्ठ अध्यापक, रा० मा० विद्या० थाणा (उदयपुर)
35. सीताराम सोनी, रेल्वे स्टेशन के पास, लाडनू-341306 (नागौर)
36 जयसिंह चौहान, जोहरी भवन, काव्यवीथिका कानोड़ (उदयपुर)
37 चतुर कोठारी, अ० रा० उ० मा० विद्या० सायरा (उदयपुर)
38. महेन्द्र यादव, रा० उ० मा० विद्या० मानवेड़ा पो० बापासर, फलोदी
39. श्रीमती शारदा शर्मा, अध्या० राज० उ० प्रा० विद्या० श्री गंगानगर
40 हेमलता पारनेरकर व० अ० रा० बा० उ० मा० विद्या० बेगू (चित्तौड़गढ़)
41 गणपतसिंह मुंधेया, देदरिया ब्यावर-305901
42. जुगलाल वेदी, रा० उ० मा० विद्या० मण्ड्रेला, (झुंझनू)
43 ओम पुरोहित कागद, 24 दुर्गा कालोनी, हनुमानगढ़ सगम
44. विश्वम्भर प्रसाद शर्मा विवेक कुटीर, सुजानगढ़
45. शिव मृदुल, रा० बा० उ० मा० विद्या० बेगू (चित्तौड़गढ़)
46 रामनिवास सोनी, सॉवरो की गली, डीडवाना (नागौर)
47. शशिकर खटका राजस्थानी, कवि कुटीर, विजयनगर, अजमेर
48. जितेन्द्र शंकर बजाड, PO. भीचोर-312022 (चित्तौड़गढ़)
49. नन्द किशोर चतुर्वेदी, पो० पाडु दा (बेगू) चित्तौड़गढ़
50 शान्तसिंह चौहान, मा० वि० कुआयल (उदयपुर)
51. विद्योत्तमा वर्मा, रा० शि० प्रशिक्षण महाविद्यालय, बीकानेर
52 कमला जैन, व्या० रा० उ० मा० विद्या० गिलूण्ड (उदयपुर)
53. सुकान्त सुमि व्या० श्रीकरनपुर, (गगानगर)
54. जगदीश सैन, मु० पो० नराणा वाया चारभुजा रोड (उदयपुर)
55. दीनदयाल शर्मा, पुस्तकाध्यक्ष, रा०मा० वि०, हनुमानगढ़ सगम (गगानगर)
56. हरीश व्यास, गोपाल गज, प्रतापगढ़ (चित्तौड़गढ़)
57. इब्राहिम खा मस्ना, प्रधा० रा० प्रा० वि०, रामदेव कॉलोनी, जालोर
58. सम्पतसिंह 'सरल', 53 शिल्प कॉलोनी, झोटवाड़ा, जयपुर
59. बाबु आचार्य, वाहेती चौक, बीकानेर
60. अर्जुन अरविंद, काली पल्टन रोड, टोंक
61. वासुदेव चतुर्वेदी, एस० आई० ई० आर० टी०, उदयपुर

● ●



सूर्यशंकर पारीक

राजस्थानी भाषा एवं साहित्य के मर्मी। वर्षों तक अनेक संस्थाओं में शोधकार्य किया, शोधार्थियों को मार्गदर्शन दिया।

जन्म: संवत् 1979। प्रकाशित कृतियाँ: सरोधो, सिद्ध चरित्र, सूरज कुंडाळो, गौर व्यावलो, धरती, सिद्ध जसनाथजी रो सिरलोको, सिद्धराज।

शोध पत्रिका 'वैचारिकी' का सम्पादन किया, शताधिक शोध निबंध लिखे, पुरस्कार प्राप्त किये। भारतीय विद्या मंदिर शोध प्रतिष्ठान से सेवा निवृत्ति के उपरान्त स्वतन्त्र लेखन में निरत।